प्रातःनागपुरी

आपकी बात, निर्भीकता के साथ

आरएनआई पंजीयन सं. JHABIL/2023/86791

वर्ष : 01 अंक : 138 रांची, बुधवार, 01 मई, 2024 (वैशाख कृष्ण 08, संवत 2081), पृष्ठ- 12, मूल्य- 3 रुपये email : jharkhandwanitaudyog@gmail.com

सूचना

मई दिवस के अवसर पर प्रातः नागपुरी कार्यालय में 01 मई को अवकाश रहेगा. अगला अंक 03 मई को उपलब्ध होगा.

संपादक

संक्षिप्त

हेमंत सोरेन ने हाई कोर्ट से एक दिन की मांगी प्रोविजनल बेल

रांची। राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने हाई कोर्ट से एक दिन की प्रोविजनल बेल मांगी है। उन्होंने कोर्ट से कहा है कि उन्हें अपने चाचा के श्राद्ध कर्म में शामिल होना है। सोरेन फिलहाल जमीन घोटाले के आरोप में बिरसा मुंडा केंद्रीय कारा में बंद हैं। हेमंत सोरेन की ओर से दाखिल याचिका में जल्द सुनवाई का आग्रह किया गया है। हाई कोर्ट इस मामले की सुनवाई तीन मई को करेगा। हेमंत सोरेन ने छह मई के लिए प्रोविजनल बेल मांग की है।

कोलकाता पुलिस को मिली राजभवन उड़ाने की धमकी

कोलकाता। महानगर कोलकाता के ऐतिहासिक राजभवन और इंडियन म्यूजियम को बम धमाके में उड़ाने की धमकी कोलकाता पुलिस को मिली है। इसे लेकर लाल बाजार स्थित पुलिस मुख्यालय ने जांच शुरू कर दी है। धमकी भरे मेल के बाद एयरपोर्ट और इंडियन म्यूजियम में एहतियातन पड़ताल किया गया है। हालांकि कुछ भी संदिग्ध मिला नहीं है। कोलकाता पुलिस के सूत्रों ने बताया है कि ईमेल के जरिए एक धमकी मिली है जिसमें राजभवन और इंडियन म्यूजियम को उड़ाने की धमकी दी गई है। हालांकि यह केवल अफवाह भर है। दोनों जगहों पर कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला है लेकिन सतर्कता बढ़ा दी गई है।

पतंजलि आयुर्वेद और दिव्य फार्मेसी के 14 प्रोडक्ट के लाइसेंस रद्द

नई दिल्ली। बाबा रामदेव लगातार परेशानियों से घिरते जा रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट के बाद अब उत्तराखंड सरकार ने पतंजलि योगपीठ तथा बाबा रामदेव की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। उत्तराखंड औषधि लाइसेंसिंग प्राधिकरण द्वारा जारी एक आदेश के अनुसार, पतंजलि के 10 दिव्य फार्मेसी उत्पादों का विनिर्माण लाइसेंस निलंबित कर दिया गया है। शेष पेज 08 पर

सभी 14 सीटों पर इंडिया गठबंधन की होगी जीत : सीएम चंपाई सोरेन

- लोकसभा चुनाव 2024-चतरा से केएन त्रिपाठी ने दाखिल किया पर्चा

चतरा। लोकसभा चुनाव 2024 को लेकर चतरा से इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी केएन त्रिपाठी ने मंगलवार को पर्चा दाखिल किया। इससे पहले चतरा कॉलेज के सामने स्थित मैदान में जनसभा हुई। सीएम चंपाई सोरेन ने एनडीए पर निशाना हुए कहा कि, झारखंड में एनडीए का खाता नहीं खुलेगा। राज्य की सभी 14 लोकसभा सीटों पर इंडिया गठबंधन की जीत होगी। उन्होंने केएन त्रिपाठी को भारी मतों से जीत दिलाने की अपील की।

देश व बच्चों के भविष्य को लेकर करें वोट : लोकसभा चुनाव 2024 को लेकर नामांकन से पहले आयोजित जनसभा से कुछ लोगों के साथ प्रत्याशी केएन त्रिपाठी समाहरणालय पहुंचे, जहां जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त रमेश घोलप के समक्ष पर्चा दाखिल किया। प्रत्याशी केएन त्रिपाठी ने कहा कि भाजपा दस वर्षों के कुशासन को भूलाने में लगी हुई है। भाजपा ने चुनाव की घोषणा के पूर्व 400 पार का नारा देकर जनता को चुनौती दी है। देश खतरनाक दौर से गुजर रहा है। देश व अपने बच्चों के भविष्य के लिए इंडिया गठबंधन को वोट करें। इस दौरान उन्होंने अपने पक्ष में वोट करने की अपील की।

नामांकन से पहले जनसभा का आयोजन : झारखंड की चतरा संसदीय सीट के इंडिया महागठबंधन के प्रत्याशी केएन त्रिपाठी के नामांकन को लेकर चतरा कॉलेज के सामने स्थित मैदान में जनसभा का आयोजन किया गया। इसमें मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन, वित्त मंत्री रामेश्वर उरांव, ग्रामीण विकास मंत्री आलमगीर आलम, श्रम मंत्री सत्यानंद भोगता, लातेहार विधायक बैजनाथ राम, बड़कागांव विधायक अंबा प्रसाद, कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर समेत कई उपस्थित थे।

जनसभा को इन्होंने भी किया संबोधित : जनसभा को बड़कागांव विधायक, लातेहार विधायक, कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर समेत अन्य ने संबोधित किया। मौके पर पूर्व विधायक योगेंद्रनाथ बैठा, बिट्टू सिंह, कांग्रेस जिलाध्यक्ष प्रमोद दुबे, झामुमो जिलाध्यक्ष पंकज प्रजापति, राजद जिलाध्यक्ष नवलकिशोर यादव, कांग्रेस महिला प्रदेश अध्यक्ष गुंजन सिंह, राजद प्रदेश महासचिव अरूण कुमार यादव, जिप अध्यक्ष ममता कुमारी, राजद नेता रंजन यादव समेत काफी संख्या में लोग उपस्थित थे।

झारखंड में सभी 14 लोकसभा सीटें जीतेगा एनडीए गठबंधन : भजनलाल

धनबाद। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा झारखंड के दो दिवसीय दौरे पर मंगलवार को धनबाद पहुंचे। वे भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) प्रत्याशी ढुल्लू महतो के नामांकन में शामिल होने वाले थे लेकिन विलंब होने के कारण सीधे धनबाद के रणधीर वर्मा स्टेडियम गोल्फ ग्राउंड में आयोजित भाजपा के प्रबुद्ध सम्मेलन में पहुंचे। यहां उन्होंने मंच से कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि चार जून को झारखंड की सभी सीटों पर एनडीए की जीत होगी। शेष पेज 08 पर

धनबाद लोस : ढुल्लू महतो ने नामांकन पत्र दाखिल किया

धनबाद। धनबाद लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी ढुल्लू महतो ने मंगलवार को नामांकन पर्चा दाखिल कर दिया। ढुल्लू महतो पर्चा दाखिल करने के लिए प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी, धनबाद सांसद पशुपति नाथ सिंह और विधायक राज सिन्हा के साथ समाहरणालय पहुंच धनबाद उपायुक्त को अपना नॉमिनेशन फाइल सुपुर्द किया। इससे पूर्व ढुल्लू महतो हवाई अड्डा पर नारा लगा रहे अपने ही कार्यकर्ताओं पर बिफर पड़े और उन्हें बाहर का रास्ता दिखा दिया। दरअसल धनबाद लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्यासी ढुल्लू महतो अपना पर्चा दाखिल करने से पूर्व प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी को रिसीव करने धनबाद के बरवाअड्डा स्थित हवाईअड्डा पहुंचे थें। यहां उनके पहुंचते ही कुछ कार्यकर्ता ढुल्लू महतो जिंदाबाद का नारा लगाने लगें। जिससे ढुल्लू महतो नाराज हो गए और अपने ही कार्यकर्ताओं पर बिफरे ढुल्लू महतो ने कार्यकर्ताओं को बाहर का रास्ता दिखा दिया।

जैक 12वीं के नतीजे घोषित, बोर्ड ने एक ही दिन किये तीनों संकाय के रिजल्ट घोषित

लड़कियों ने फिर मारी बाजी 85.88 प्रतिशत बच्चे हुए पास

प्रातः नागपुरी संवाददाता, रांची

झारखंड बोर्ड 12वीं के छात्रों के बोर्ड रिजल्ट का इंतजार आज खत्म हो चुका है। झारखंड एकेडमिक काउंसिल ने आज जैक 12वीं रिजल्ट 2024 घोषित कर दिया है। बोर्ड ने आज सुबह 11 बजे जैक 12वीं परीक्षा परिणाम घोषित किया है। बोर्ड ने जैक कक्षा 12वीं परीक्षा रिजल्ट की घोषणा एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में की।

इस बार, बोर्ड ने एक ही दिन साइंस, कॉमर्स, आर्ट्स स्ट्रीम और वोकेशनल का रिजल्ट जारी किया है। जिन बच्चों ने झारखंड बोर्ड से 12वीं कक्षा की परीक्षा दी है, वे अपना जैक रिजल्ट बोर्ड की आधिकारिक वेबसाइट jac.jharkhand.gov.in के माध्यम से चेक कर सकते हैं।

जैक 12वीं रिजल्ट 2024 चेक करने के लिए छात्रों को अपने रोल नंबर का प्रयोग करना होगा।

जैक 12वीं का ओवरऑल पास प्रतिशत इस साल 85.88 प्रतिशत रहा है। इस साल रिजल्ट में दो प्रतिशत की गिरावट हुई है।

जैक 12वीं साइंस में रांची की स्नेहा ने टॉप किया है। स्नेहा को 98.2 प्रतिशत अंक मिले हैं। इंटर साइंस कॉलेज हजारीबाग की रितिका कुमारी दूसरे नंबर पर हैं, रितिका को 96.4% अंक मिले हैं। तीसरे नंबर पर पंकज साहू बैजनाथ जलन कॉलेज सिसई रहे हैं। उन्हें 96% अंक मिले हैं। वहीं जैक इंटर आर्ट्स में जीनत परवीन ने टॉप किया है, जीनत को 94.4 प्रतिशत अंक मिले हैं।

जैक 12वीं रिजल्ट का पास प्रतिशत : इस साल जैक इंटर आर्टस में 93.16 प्रतिशत स्टूडेंट सफल हुए हैं, वहीं कॉमर्स में 90.60 प्रतिशत, साइंस में 72.70 प्रतिशत और वोकेशनल में 89.22 प्रतिशत सफल घोषित किए गए हैं। इस साल झारखंड बोर्ड 12वीं की परीक्षा 40.78 प्रतिशत छात्रों ने फर्स्ट डिवीजन से पास की है, वहीं सेकेंड डिविजन लाने वाले छात्रों की 55.71 प्रतिशत है। जैक इंटर आर्ट्स में 93.3 प्रतिशत छात्र सफल रहे हैं। शेष पेज 08 पर

जैक 12वीं रिजल्ट में ये जिले नंबर वन

ऑर्ट्स में सिमडेगा का रिजल्ट सबसे बेहतर रहा है। वहीं पलामू का रिजल्ट सबसे खराब। अगर बात जैक साइंस रिजल्ट में की जाए, तो साइंस में कोडरमा पहले नंबर पर रहा है और लातेहार दूसरे नंबर पर। कॉमर्स के रिजल्ट में लातेहार जिला नंबर वन पर है।

जमशेदपुर लोस सीट से विद्युत वरण महतो ने किया नामांकन

- राज्य की सभी 14 लोकसभा सीटों पर कमल खिलाकर दिल्ली भेजें : गजेंद्र सिंह शेखावत

जमशेदपुर। जमशेदपुर लोकसभा सीट से भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार विद्युत वरण महतो ने मंगलवार को जिला निर्वाचन पदाधिकारी अनन्य मित्तल के समक्ष नामांकन पत्र दाखिल किया। इसके पूर्व भाजपा कार्यकर्ता विभिन्न मंडलों से बाइक-कार रैली के साथ साकची स्थित बोधि मंदिर पहुंचे और वहां से पैदल जुलूस की शक्ल में समाहरणालय परिसर तक प्रत्याशी विद्युतवरण महतो के साथ आए। नामांकन की प्रक्रिया के बाद बोधि मंदिर मैदान में रैली को संबोधित करते हुए केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने एक बार फिर सशक्त भारत के निर्माण में जमशेदपुर सहित राज्य की सभी 14 लोकसभा सीटों पर कमल खिलाकर दिल्ली भेजने की अपील की। उन्होंने कहा कि 2014 से पहले यूपीए गठबंधन की सरकार थी। मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री रहे। इस समय दो खबरें अक्सर पढ़ने को मिलती थीं। एक तो यह कि देश की अर्थव्यवस्था की हालत खस्ता थी। घपले-घोटाले रोज सुनने को मिलते थे। यहां की इकोनॉमी कभी भी बिखरने की आशंका थी। दूसरा कि देश की सीमाएं असुरक्षित थीं। अक्सर आतंकी हमले, बम धमाके होते थे। शेष पेज 08 पर

सुप्रीम कोर्ट ने केजरीवाल की गिरफ्तारी के समय के बारे में ईडी से किया सवाल

- कोर्ट ने ईडी को 3 मई को बचाव पक्ष के सवालों का जवाब देने को कहा

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को प्रवर्तन निदेशालय से उत्पाद शुल्क नीति मामले में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के समय के बारे में सवाल किया, जो देश में लोकसभा चुनाव से कुछ हफ्ते पहले की गई थी। शीर्ष अदालत ने ईडी को केजरीवाल की गिरफ्तारी से संबंधित सवालों पर तैयार रहने को भी कहा और कहा, "जीवन और स्वतंत्रता बेहद महत्वपूर्ण हैं"। कोर्ट ने जांच एजेंसी से 3 मई को बचाव पक्ष के सवालों का जवाब देने को कहा है। न्यायमूर्ति संजीव खन्ना ने कहा, "कार्यवाही शुरू होने और कुछ समय बाद बार-बार शिकायत दर्ज होने के बीच जो समय अंतराल हो रहा है। इन सबके परिणाम हैं। 365 दिन... ऊपरी सीमा है।" न्यायमूर्ति खन्ना ने कहा "स्वतंत्रता अत्यधिक महत्वपूर्ण है, हम इससे इनकार नहीं कर सकते। उन्होंने गिरफ्तारी का समय बता दिया है... हम आपकी बात सुनेंगे। शेष पेज 08 पर

निलेन्दु कुमार सिंह ने संभाला सीसीएल के सीएमडी का पद

रांची। कोल इंडिया की सहायक कंपनी सीसीए के सीएमडी का पद निलेन्दु कुमार सिंह ने 30 अप्रैल, 2024 को ग्रहण किया। इससे पूर्व सिंह ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड के निदेशक तकनीकी (परियोजना एवं योजना) पद पर कार्यरत थे। उन्होंने वर्ष 1989 में धनबाद स्थित आईआईटी-आईएसएम से खनन इंजीनियरिंग (बी.टेक) में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। वर्ष 1994 में प्रथम श्रेणी खान प्रबंधक प्रमाणन प्राप्त किया।

अपने शिक्षण के उपरांत वर्ष 1989 में कोल इंडिया लिमिटेड की अनुषंगी सेंट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड से अपने करियर की शुरुआत की। सिंह ने 2011 तक सीसीएल में विभिन्न पदों पर अपनी सेवाएं प्रदान कीं। इस दौरान वे पिपरवार, अशोका, उरीमारी और कल्याणी इत्यादि परियोजनाओं में खान प्रबंधक के रूप में अपनी सेवाएं दीं। जनवरी, 2012 में उनकी पदस्थापना एसइसीएल में हुई। वहां उन्होंने गेवरा में खान प्रबंधक, दीपका और छाल परियोजना में उप क्षेत्र प्रबंधक (एजेंट) और एसईसीएल के दीपका क्षेत्र, कोरबा क्षेत्र और रायगढ़ क्षेत्र में महाप्रबंधक के रूप में अपना योगदान दिया। शेष पेज 08 पर

मोहब्बत की दुकान में बेचे जा रहे हैं फर्जी वीडियो : मोदी

एजेंसियां, धाराशिव (महाराष्ट्र)

महाराष्ट्र में कांग्रेस पर जमकर बरसे प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को महाराष्ट्र में एक चुनावी रैली के दौरान वायरल वीडियो विवाद पर कहा कि जो प्रतिद्वंद्वी भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार से मुकाबला करने में असमर्थ हैं, वे सोशल मीडिया पर फर्जी वीडियो प्रसारित करने के लिए प्रौद्योगिकी का दुरुपयोग कर रहे हैं। पीएम ने कहा, "अब उनकी हालत ऐसी है कि जब उनका झूठ काम नहीं कर रहा है, तो वे मेरे चेहरे का इस्तेमाल कर रहे हैं और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से अपनी 'मोहब्बत की दुकान' में फर्जी वीडियो बेच रहे हैं। झूठ की यह दुकान बंद होनी चाहिए।"

महाराष्ट्र के धाराशिव जिले में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा, "विरोधी मेरे जैसे नेताओं के उद्धरणों को विकृत करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग कर रहे हैं। मोदी ने दुनिया भर में बाजरा को लोकप्रिय बनाने पर अपनी सरकार के जोर की भी बात की।

मोदी ने कहा, "मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि बाजरा दुनिया भर में खाने की मेज तक पहुंचे।" उन्होंने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन द्वारा उनके लिए आयोजित राजकीय रात्रिभोज में बाजरा मेनू में था। उन्होंने कहा, हमारी सरकार का मिशन भारत को तिलहन उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाना भी है।मोदी ने कहा, मौजूदा लोकसभा चुनाव देश के स्वाभिमान के बारे में है। उन्होंने पूछा, "क्या एक कमजोर सरकार, जो किसी भी क्षण गिर सकती है, एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण करेगी।"

इसके अलावा महाराष्ट्र के सोलापुर लोकसभा क्षेत्र के माधा में एक विशाल सार्वजनिक बैठक को संबोधित करते हुए, पीएम मोदी ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा, "देश ने कांग्रेस को 60 वर्षों तक देश पर शासन करने का मौका दिया। इन छह दशकों के दौरान, कई देशों ने विकास और समृद्धि की दिशा में तेजी से बदलाव किया, जबकि हम कई मोर्चों पर पिछड़ गए।"उन्होंने कहा, "कांग्रेस हमारे किसानों को उनके खेतों की सिंचाई के लिए पानी तक उपलब्ध नहीं करा सकी। जब मैंने 2014 में सत्ता संभाली, तो लगभग 100 सिंचाई परियोजनाएं लालफीताशाही में फंसी हुई थीं दशकों तक इनमें से 26 परियोजनाएं महाराष्ट्र के लिए थीं, सोचिए कांग्रेस ने महाराष्ट्र को कितना धोखा दिया।"

केंद्र में कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूपीए के तहत केंद्रीय कृषि मंत्री के रूप में उनके कार्यकाल (2004-2014) को लेकर एनसीपी (एससीपी) प्रमुख शरद पवार पर भी कटाक्ष करते हुए, पीएम मोदी ने कहा कि उनके शासनकाल में गन्ने के लिए उचित और लाभकारी मूल्य (एफआरपी) में वृद्धि हुई है।पीएम ने कहा, "जब 10 साल पहले रिमोट-नियंत्रित सरकार (तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के तहत कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार पर एक कटाक्ष) सत्ता में थी, तो महाराष्ट्र के एक शक्तिशाली नेता (शरद पवार) कृषि मंत्री हुआ करते थे। शेष पेज 08 पर

छत्तीसगढ़ में सुरक्षाबलों की नक्सलियों पर दूसरी बड़ी स्ट्राइक: 10 नक्सली ढेर

छत्तीसगढ़। छत्तीसगढ़ के नारायणपुर और कांकेर बॉर्डर पर सुरक्षाबलों ने 10 नक्सलियों को मुठभेड़ में मार गिराया है। अबूझमाड़ में हुई मुठभेड़ में 3 महिला समेत कुल 10 माओवादियों के शव बरामद किए गए हैं। मौके से एक AK47 हथियार के साथ भारी मात्रा में गोला बारूद और अन्य सामान बरामद किए हैं।

छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र के सीमावर्ती इलाके अबूझमाड़, टेकमेटा और काकुर के जंगलों में मुठभेड़ हुई। 15 दिनों में सुरक्षाबलों का नक्सलियों पर यह दूसरी बड़ी स्ट्राइक है।

एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि यह एक नक्सल विरोधी अभियान है। इलाके में अभी भी तलाशी अभियान जारी है। अधिकारी ने बताया कि मारे गए नक्सलियों की पहचान अभी नहीं हो पाई है। बस्तर के आईजी पी सुंदरराज ने कहा कि अबूझमाड़ क्षेत्र में डिस्ट्रिक्ट रिजर्व गार्ड (डीआरजी) और विशेष कार्य बल (एसटीएफ) के संयुक्त दल की माओवादियों से मुठभेड़ हुई।

उन्होंने कहा, ''इलाके में 50 से 60 नक्सलियों की मौजूदगी की संभावना है। अभियान लगातार जारी है। शेष पेज 08 पर

संक्षिप्त

एबीवीपी के कार्यकर्ताओं ने चलाया जागरुकता अभियान

बेड़ो। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा शत-प्रतिशत मतदान का लक्ष्य लेकर देशभर में मतदाता जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। जिसके तहत बेड़ो के भसनंदा,हरहंजी व टिकरा टोली और भरनो प्रखंड के खरका गांव में मंगलवार को मतदाता जागरूकता अभियान चलाया गया। परिषद के कार्यकताओं द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर सभी को लोकतंत्र के इस महापर्व में सहभागी बनाने के लिए पत्रक बांटकर वोट का महत्व बताया जा रहा है, ताकि ग्रामीण क्षेत्रों के निवासियों में भी जागरूकता आए और वे सभी मतदान करें, जिससे शत-प्रतिशत मतदान हो पाए। मौके पर अमन कुमार, विक्रम कुमार, दिवाकर कुमार, दीपशिखा कुमारी,राम बालक सिंह, प्रियंका लकड़ा,दुर्गा महतो, ऋषभ कुमार व निकिता कुमारी समेत कई कार्यकर्ता मौजूद थे

बिजली-पानी की समस्या को लेकर ग्रामीणों की बैठक

मांडर। मांडर प्रखंड के हेसल घुघरी व बंझिला गांवों के ग्रामीणों ने बिजली पानी की समस्या को लेकर एक बैठक किया मौके पर बतौर मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व डी डी सी डॉ परमेश्वर भगत भी सम्मिलित हुए इस दौरान उन्होंने ग्रामीणों की समस्याओं की जानकारी ली और संबंधित विभागों के अधिकारियों से मिलकर समाधान करवाने की बात कही इस दौरान ग्रामीणों ने भी गांव के पेयजल आपूर्ति से संबंधित परेशानियों से उन्हें अवगत कराया साथ ही गांव के खराब हुए ट्रांसफार्मर को बदलवाने की मांग की ।

मतदाता जागरुकता कार्यक्रम आयोजित

रामगढ़। लोकसभा आम निर्वाचन 2024 के तहत 14 लोकसभा क्षेत्र हजारीबाग के लिए मतदान की तिथि 20 मई 2024 निर्धारित है। इस दौरान रामगढ़ जिले में शत प्रतिशत मतदान सुनिश्चित करने को लेकर जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त रामगढ़ चंदन कुमार के निर्देश पर रचनात्मक तरीके से विभिन्न मतदाता जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन कर मतदाताओं को उनके मताधिकार का प्रयोग करने के प्रति जागरूक करने का कार्य किया जा रहा है। इसी क्रम में अब जिला प्रशासन रामगढ़ द्वारा सोमवार को बड़े स्तर पर मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के तहत रामगढ़ जिला अंतर्गत सभी प्रखंडों के विभिन्न सरकारी विद्यालयों में एक ही दिन में लगभग 70291 बच्चों व अभिवावकों ने मतदाता जागरूकता शपथ ली। इस दौरान शिक्षकों सहित अन्य के द्वारा अभिभावकों को आगामी लोकसभा आम निर्वाचन 2024 के दौरान अपने मताधिकार का प्रयोग जरूर करने को लेकर जागरूक किया गया।

रामगढ़ : इंटर के रिजल्ट में छात्राओं ने मारी बाजी

सभी संकायों में लड़कियां टॉपर

- राजीव गांधी इंटर कॉलेज पिंडरा की छात्राएं साइंस और आर्ट्स में रहीं जिला टॉपर
- कॉमर्स में एसएस 2 हाई स्कूल की छात्रा फियांशु बनीं जिला टॉपर

संवाददाता

रामगढ़ । झारखंड एकेडमिक काउंसिल (जैक) ने मंगलवार को इंटर का रिजल्ट जारी कर दिया है। जिले में तीनों संकाय साइंस, आर्ट्स और कॉमर्स पर छात्राओं का दबदबा रहा। सभी संकायों में लड़कियां ही टॉपर रही। सबसे बड़ी बात यह है कि साइंस और आर्ट्स में राजीव गांधी इंटर कॉलेज पिंडरा, तापीन की छात्राएं टॉपर रही। जबकि कॉमर्स में एसएस 2 हाई स्कूल, गोला की छात्रा सबसे अधिक अंक लाकर जिला टॉपर बनी है। साइंस में राजीव गांधी इंटर कॉलेज पिंडरा, तापीन की छात्रा शहनाज खातून ने 451 नंबर लाकर टॉप किया है। इसी कॉलेज की छात्रा ललिता कुमारी ने 449 नंबर लाकर कॉमर्स में टॉप किया है। जबकि कॉमर्स में एसएस 2 हाई स्कूल, गोला की छात्रा फियांशु कुमारी ने 452 नंबर लाकर टॉप रैंक हासिल किया है।

वाणिज्य संकाय में टॉप 10 की सूची

वाणिज्य में टॉप 10 की सूची में 12 लोगों का नाम शामिल है। कुछ छात्रों ने बराबर अंक लाकर एक स्थान प्राप्त किया है। एसएस 2 हाई स्कूल, गोला की छात्रा फियांशु कुमारी 452 अंक लाकर जिला टॉपर रही है। इसके बाद राधा गोविंद इंटर कॉलेज, रामगढ़ की छात्रा ज्योति कुमारी को 432 अंक, एसएस 2 हाई स्कूल, गोला के छात्र सुमित कुमार को 429 अंक, गांधी मेमोरियल प्लस टू हाई स्कूल रामगढ़ की छात्रा मधु कुमारी को 427 अंक, इसी विद्यालय के छात्र शैफी शकील को 424 अंक, एसएस मॉडल प्लस टू हाई स्कूल पतरातु की छात्रा कुमारी खुशी प्रियदर्शनी को 424 अंक, जेएम कॉलेज भुरकुंडा की छात्रा नेहा कुमारी को 423 अंक, गांधी मेमोरियल प्लस टू हाई स्कूल, रामगढ़ की छात्रा गजाला परवीन को 422 अंक, श्रमिक प्लस टू हाई स्कूल सिरका की छात्रा चांदनी परवीन को 421 अंक, गांधी गांधी मेमोरियल प्लस टू हाई स्कूल रामगढ़ की छात्रा सबा परवीन को 420 अंक, एसएस 2 हाई स्कूल गोला की छात्रा लक्ष्मी कुमारी को 419 अंक और इसी कॉलेज की छात्रा प्रिंस कुमारी को 419 अंक मिले हैं।

कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका प्लस टू विद्यालय पतरातू का परीक्षाफल रहा शत-प्रतिशत

रामगढ़ : झारखंड अधिविध परिषद की ओर से आयोजित इंटरमीडिएट की परीक्षा में कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका प्लस टू विद्यालय पतरातू का परीक्षाफल शत प्रतिशत रहा। 30 अप्रैल को घोषित परीक्षाफल में विद्यालय की छात्रा मुनिका कुमारी इंटरमीडिएट की परीक्षा में 411 यानी 82 .20प्रतिशत अंक लाकर स्कूल टॉपर बनने का गौरव प्राप्त किया है। मनीषा कुमारी 405 यानी 81प्रतिशत अंक लाकर द्वितीय स्थान तथा रितिका कुमारी 403 अंक यानी 80 .60 प्रतिशत अंक लाकर तीसरे स्थान पर रही। कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय पतरातू की वार्डन सह फिजिकल टीचर पुष्पा कुमारी ने कहा कि इस वर्ष हमारे विद्यालय में कुल 57 छात्राएं इंटरमीडिएट की परीक्षा में शामिल हुई थीं । जिनमें से प्रथम श्रेणी से 56 छात्राएं व द्वितीय श्रेणी से 01 छात्रा उत्तीर्ण हुई है। स्कूल की वार्डन पुष्पा कुमारी ने कहा कि यह छात्राओं की कड़ी मेहनत का परिणाम है। उन्होंने छात्राओं से भविष्य में इसी तरह मेहनत करते हुए आगे बढ़ने का आह्वान किया है। वार्डन पुष्पा कुमारी सहित विद्यालय की सभी शिक्षिकाओं ने छात्राओं को उनके सफलता पर बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

विज्ञान संकाय में टॉप 10 की सूची

विज्ञान संकाय में टॉप टेन रहे छात्रों में 14 लोगों का नाम शामिल है। कुछ छात्र ऐसे हैं जिन्होंने बराबर अंक हासिल किया है। पहले नंबर पर राजीव गांधी इंटर कॉलेज पिंडरा तापिन की छात्रा शहनाज खातून 451 अंक, एसएस 2 हाई स्कूल, मांडू की छात्रा तनजिला परवीन 450 अंक, राजीव गांधी इंटर कॉलेज पिंडरा का छात्र हरिओम राणा 446 अंक, श्रवण यादव 445 अंक, एसएस मॉडल 2 हाई स्कूल, पतरातु की छात्रा रिया गुप्ता 444 अंक, एसएस 2 हाई स्कूल, गोला का छात्र रितेश चंद्र पोद्दार 443 अंक, रिझुनाथ चौधरी मेमोरियल इंटर कॉलेज, सिरू, दुलमी का छात्र ऋतिक कुमार 443 अंक, राजीव गांधी इंटर कॉलेज पिंडरा की छात्रा पूजा कुमारी 441 अंक, विवेक कुमार शर्मा 441 अंक, एसएस मॉडल 2 हाई स्कूल, पतरातु की छात्रा प्रिया वर्मा 440 अंक, राजीव गांधी इंटर कॉलेज पिंडरा का छात्र अरशद अयूब 439 अंक, गांधी मेमोरियल 2 हाई स्कूल, रामगढ़ की छात्रा आरती कुमारी 348 अंक, राजीव गांधी इंटर कॉलेज पिंडरा का छात्र सचिन कुमार को 438 अंक और उत्क्रमित आरबी 2 हाई स्कूल सांडी की छात्रा बिंदी कुमारी को 438 अंक मिले हैं।

कला संकाय में टॉप 10 की सूची

कला संकाय में राजीव गांधी इंटर कॉलेज, पिंडरा, तापीन की छात्रा ललिता कुमारी 449 अंक लाकर टॉप पर रही है। इसके बाद एसएस 2 हाई स्कूल, मांडू की छात्रा नाजमीन निशा 448 अंक, राजीव गांधी इंटर कॉलेज पिंडरा की छात्रा कुमकुम कुमारी 446 अंक, इसी विद्यालय की छात्रा प्रीति कुमारी 443 अंक, रिंकी कुमारी 441 अंक, रानी कुमारी 439 अंक, गांधी मेमोरियल प्लस टू हाई स्कूल रामगढ़ का छात्र निशान ठाकुर 438 अंक, जनता प्लस टू हाई स्कूल चैनपुर की छात्रा सुमन कुमारी को 436 अंक, राजीव गांधी इंटर कॉलेज पिंडरा की छात्रा नीतू कुमारी को 432 अंक, गांधी मेमोरियल प्लस टू हाई स्कूल रामगढ़ की छात्रा अंशु कुमारी को 427 अंक मिले हैं।

यात्रियों से भरी सवारी गाड़ी घाटी में पलटी, दो की मौत, 15 घायल

खूंटी। अड़की से खरसावां भाया कुचाई रोड पर मंगलवार को अड़की थाना क्षेत्र के बड़ानी के तीखे मोड पर यात्रियों से भरी सवारी गाड़ी के पलट जाने से दो लोगों की मौत हो गई जबकि 15 लोग घायल हो गये। मृतकों में हेठ कांची बुंडू निवासी रोहित मुंडा(21) और बुंडू बारूहातू बाडेडा निवासी प्रकाश मुंडा(18) शामिल हैं। घटना के संबंध में मिली जानकारी के अनुसार बुंडू थाना के हेठ कांची निवासी देवानंद मुंडा उर्फ देवान मुंडा की बेटी की शादी कुचाई प्रखंड के बारूहातू में हुई थी। लड़की पक्ष के लोग बहू भात में शामिल होकर वहां से लौट रहे थे। बडानी घाटी के तीखे मोड पर चालक के संतुलन खो देने से सवारी गाड़ी पलट कर गहरी खाई में जा गिरी। इसमें 15 से अधिक लोग घायल हो गए। घायलों में महिलाओं की संख्या अधिक है। दुर्घटना की सूचना मिलने पर अड़की थाना प्रभारी मुकेश यादव घटनास्थल पर पहुंचे और ग्रामीणों के सहयोग से घायलों को कल्याण अस्पताल अड़की लाया गया। घायलों में रमनी देवी, सावित्री देवी, भाजपति देवी, अंतरा कुमारी, अमित मुंडा, सुंदरमनी देवी, मंजू देवी, संजोती कुमारी, अशोमती कुमारी, लक्ष्मी कुमारी रायधोनी देवी, गुरुचरण मुंडा, संजय मुंडा, सोमबारी देवी का इलाज चल रहा है। वहीं गंभीर रूप से घायल हेठ कांची निवासी अजय मुंडा को बेहतर इलाज के लिए खूंटी सदर खूंटी से रिम्स रेफर कर दिया गया।

तालाब में डूबकर दो बच्चों की मौत

खूंटी। तोरपा थाना के गौरबेड़ा गांव में मंगलवार को तालाब में डूबने से दो बच्चों की मौत हो गयी। मृतकों में गौरबेड़ा गांव के दशरथ महतो की बेटी खुशबू कुमारी(सात) तथा राजकुमार महतो(नौ) शामिल है। राजकुमार गुमला जिले के नारेकेला गांव के हरिश महतो का पुत्र था। वह गौरबेड़ा गांव में अपने नाना के यहां रहकर पढ़ाई कर रहा था। दोनो बच्चे गौरबेड़ा स्कूल में पढ़ते थ। जानकारी के अनुसार शाम पांच बजे दोनों स्कूल के पीछे मैदान में खेल रहे थे। इसी बीच खेलते-खेलते तालाब की ओर चले गये। वहां एक बच्चा नहाने के लिए तालाब में गया। नहाने के क्रम में वह डूबने लगा। इसे देख इसी बीच दूसरी बच्ची उसे बचाने गयी. इसी क्रम में दोनों ही तालाब में डूब गये। ग्रामीणों को जानकारों मिलने पर तालाब के पास जमा ग्रामीणों ने मिलकर दोनों बच्चों के शव को बाहर निकाला। बच्चों की मौत के बाद परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है। सूचना पाकर झामुमो नेता सुदीप गुड़िया रात मे गौरबेड़ा गांव पहुंचे और दोनों शोक संतप्त परिवार वालों से मलकर उन्हें ढाढ़स बंधाया।

तृतीय पुण्यतिथि पर याद किए गए समाजसेवी अजय साहू

रामगढ़ । रामगढ़ के युवा समाजसेवी अमित साहू के पिता स्वर्गीय अजय साहू के तृतीय पुण्यतिथि पर 30 अप्रैल को डिवाइन ओंकार मिशन के प्रांगण में अटूट लंगर सेवा का आयोजन किया गया। ज्ञात है कि स्वर्गीय अजय साहू के स्मृति में डिवाइन ओंकार मिशन के प्रांगण में लगातार तीन वर्षों से प्रत्येक माह की 30 तारीख को स्वर्गीय अजय साहू के परिवार के द्वारा लगातार लंगर सेवा का आयोजन किया जा रहा है। अपने पिता स्वर्गीय अजय साहू के तृतीय पुण्यतिथि पर समाज सेवी अमित साहू ने कहा कि पिता की स्मृतियां हमेशा आशीर्वाद बनकर साथ में रहती हैं और अच्छे सामाजिक कार्यों के लिए प्रेरित करती हैं ।इस अवसर पर डिवाइन ओंकार मिशन के सचिव राजेश कुमार नागी, ज्ञान महिला समिति के संस्थापक विनोद जायसवाल, युवा व्यवसायी कुमार अक्षत, सरोज साहू, हसनैन वारसी सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

अपहृत लड़की बरामद, आरोपी दो सगे भाई गिरफ्तार

खूंटी। शादी की नीयत से तोरपा थाना क्षेत्र से अपहृत एक नाबालिग लड़की कों पुलिस ने नामकुम थाना के तैमारा हुआंगहातू से बरामद कर लिया। पुलिस ने अपहरण के आरोपित सिंहराय नाग उर्फ सिगरेन लोहरा और उसके भाई मांझी नाग उर्फ माझी लोहरा को उसके घर से गिरफ्तार कर लिया। नाबालिग के अपहरण को लेकर 19 अप्रैल को नाबालिग के स्वजनों द्वारा मामला दर्ज कराया गया था। जानकारी के अनुसार एसपी अमन कुमार को लड़की के तैमारा क्षेत्र में होने की सूचना मिली थी। उन्होंने तोरपा के थाना प्रभारी प्रभात रंजन पांडेय को कार्रवाई करने का निर्देश दिया। तोरपा थाना पुलिस ने हुए दोनों आरोपितों को गिरफ्तार कर अपहृत लड़की को बरामद कर लिया।

रांची नगर निगम के निवर्तमान और पूर्व पार्षदों के साथ सांसद संजय सेठ ने की बैठक

लोकसभा चुनाव के संयोजक संजीव विजय वर्गीय ने भाजपा को वोट दिलाने का किया आग्रह

प्रातः नागपुरी संवाददाता

रांची। मंगलवार को रांची नगर निगम के पूर्व पार्षदों के साथ रांची के सांसद संजय सेठ, पूर्व डिप्टी मेयर एवं रांची लोकसभा चुनाव के संयोजक संजीव विजय वर्गीय के साथ एक बैठक हिनू में हुई। बैठक में रांची लोकसभा प्रत्याशी संजय सेठ ने कहा कि पूरे देश भर में नरेंद्र मोदी की हवा चल रही है। मोदी की गारंटी और झारखंड के विकास के लिए भाजपा को वोट देना जरूरी हो गया है। जिस तरह नगर निगम चुनाव में आप पार्षदगण गली-गली घूम कर अपने वोटरों के पास जाते हैं और उन्हें अपने पक्ष में मतदान करने के लिए जी तोड़ मेहनत करते हैं। ठीक उसी तरह इस चुनाव में भी वोटरों को निकालना है, जो भी वोटर निकलेंगे वह भाजपा को ही वोट देंगे। इसलिए आप पूरी तन्मयता से चुनाव में लग जाइए, क्योंकि शहर की तीसरी सरकार के आप प्रतिनिधि हैं और आप सभी पार्षद अपने क्षेत्र के एक-एक नागरिक को व्यक्तिगत रूप से जानते हैं आप हमारे नेता हैं, तो आपकी जिम्मेदारी भी बहुत ही ज्यादा है।

संजीव विजयवर्गीय ने कहा कि इस चुनाव में पार्षदों की भूमिका काफी अहम है। आप लोग हमेशा जनता के सुख-दुख में लगे रहते हैं। प्रधानमंत्री योजना आवास योजना समेत कई ऐसी ही योजनाएं हैं, जिनका लाभ आपके माध्यम से सभी वर्गों एवं जातियों को मिलता है। आप उन लोगों के पास जाएं और भाजपा के पक्ष में मतदान करने की अपील करें। उपस्थित सभी पार्षदों ने संजय सेठ को भारी मतों से जीताकर संसद भवन भेजने की बात कही।

बैठक में मुख्य रूप से अरुण झा, नकुल तिर्की, रोशनी खलखो, सुनीता देवी, अभय कुमार सिंह, विनोद सिंह, अशोक यादव समेत लगभग 45 पार्षद उपस्थित रहे।

टाइगर जयराम महतो समर्थकों के साथ आज करेंगे नामांकन

संवाददाता

रामगढ़ । झारखंड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष टाईगर जयराम महतो गिरिडीह लोकसभा के प्रत्याशी के रूप में 1 मई को अपना नामांकन गिरिडीह लोकसभा क्षेत्र उपायुक्त कार्यालय बोकारो में करेंगे। जेकेएलएम के सुप्रीमो टाइगर जयराम महतो प्रधान कार्यालय मानटांड से सुबह 08:30 बजे प्रस्थान करते हुए राजगंज बाजार, कतरास भगत सिंह चौक होते हुए उपायुक्त कार्यालय बोकारो पहुंचेंगे।

उनके नामांकन में झारखंडी भाषा खतियान संघर्ष समिति के सभी लोग पहुंचेंगे । यह बात जिला मीडिया प्रभारी रमेश कुमार महतो ने कही। उन्होंने कहा बीते 3 वर्षों से झारखंडी जनमानस के हक अधिकार की लड़ाई लड़ी जा रही है और उसी को लेकर पार्टी का गठन हुआ है। जेकेएलएम पार्टी के प्रत्याशी के रूप में वे अपना नॉमिनेशन करेंगे । कहा कई टाइगर जयराम महतो संपूर्ण झारखंड के शोषित, पीड़ित, वंचित, दबे, कुचले, गरीब, मध्यम वर्ग के लोगों की आवाज हैं । सभी समुदाय के लोगों को एकजुट होकर टाइगर जयराम महतो के हाथों को मजबूत करने के लिए नामांकन कार्य क्रम मे जरूर पहुंचे । कहा झारखंड का विकास टाइगर जयराम महतो के हाथों ही संभव है क्योंकि झारखंड बने आज 23 साल हुए लेकिन कौन झारखंडी है आज तक परिभाषित नहीं हो पाया। स्थानीय नीति, नियोजन नीति, विस्थापन नीति ,उद्योग नीति तमाम नीतियों को तंदुरुस्त करने के लिए तथा अपने हक अधिकार के लिए सभी समुदाय को अभी एकजुट दिखाते हुए टाइगर जयराम महतो के हाथों को मजबूत करें ।

बच्चों के कौशल विकास के लिए खूंटी में आठ दिवसीय समर कैंप 17 मई से

खूंटी। वीर बिरसा तीरंदाजी अकादमी और खूंटी राइफल शूटिंग क्लब के तत्वावधान में आगामी 17 से 24 मई तक खूंटी में समर कैंप सह प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। गर्मी की छुट्टियों में बच्चों के कौशल विकास के लिए आयोजित द्वितीय समर कैंप सह प्रतियोगिता के माध्यम से तीरंदाजी अकादमी में पांच साल के ऊपर और राइफल एवं पिस्टल शूटिंग में नौ साल से ऊपर के बालक-बालिकाओं का चयन किया जाएगा। समर कैंप में तीरंदाजी और राइफल शूटिंग के अलावा शारीरिक प्रशिक्षण, मनोरंजक गतिविधियां, योग आदि की कक्षाएं शामिल होंगी। इसके लिए प्रतिदिन सुबह छह से आठ बजे और शाम चार से छह बजे तक विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने किया खूंटी जिले के विभिन्न मतदान केन्द्रों का निरीक्षण

तीन मई तक मतदाताओं के बीच वोटर इन्फॉर्मेशन स्लिप का वितरण करें पूर्ण : के रवि कुमार

संवाददाता

खूंटी। झारखंड के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के रवि कुमार ने मंगलवार को खूंटी जिले में निर्वाचन की तैयारी सहित विभिन्न मतदान केंद्रों और घर-घर वोटर इन्फॉर्मेशन स्लिप वितरण की प्रगति का जायजा लिया। उन्होंने लोकसभा चुनाव को लेकर बीएलओ द्वारा अब तक संपन्न और किये जा रहे कार्यों की जानकारी ली और कार्य में तेजी प्रगति लाने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि इस बार लोकसभा निर्वाचन में कार्यरत बीएलओ को इंसेंटिव का प्रावधान है, लेकिन खराब प्रदर्शन अथवा कार्य में लापरवाही बरतने वाले बीएलओ

को इंसेंटिव से वंचित रखा जाएगा। उन्होंने सभी बीएलओ को अच्छा कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया और ससमय निर्वाचन कार्य पूर्ण करने को कहा। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने खूंटी के पिपरा टोली बेलाहाथी रोड जाकर मतदाताओं के बीच बीएलओ द्वारा वोटर इन्फॉर्मेशन स्लिप के वितरण की जानकारी ली। साथ ही उनके द्वारा भरे गये प्रपत्रों की जांच की।

उन्होंने खूंटी जिले के शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, कर्रा रोड स्थित मतदान केंद्र पर बीएलओ से मुलाकात की और लोकसभा निर्वाचन से संबंधित कार्यों के अद्यतन स्थिति से अवगत हुए। उन्होंने सीएम स्कूल ऑफ एक्सिलेंस (गर्ल्स), खूंटी एवं सामुदायिक भवन नामकोम स्थित मतदान केंद्रों का निरीक्षण किया। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने अब्सेंट, शिफ्टेड, डेथ सूची, वोटर इन्फॉर्मेशन स्लिप, मतदान केंद्र जागरूकता समूह की अद्यतन जानकारी ली और कार्य में प्रगति लाने का निर्देश दिया।

उन्होंने तीन मई तक सभी मतदाताओं के बीच वोटर इन्फॉर्मेशन स्लिप वितरण पूर्ण करने का निर्देश दिया। इसके पूर्व मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने कालामाटी चेकपोस्ट का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने चेकपोस्ट पर तैनात जवानों एवं दंडाधिकारी की शिथिलता पर नाराजगी जताते हुए वाहनों के आवागमन पर पैनी नजर रखने, वाहनों की सघन जांच करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि वाहन चेकिंग कार्य में किसी प्रकार की लापरवाही बर्दास्त नहीं की जाएगी। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के निरीक्षण के दौरान खूंटी के जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त लोकेश मिश्रा, अनुमंडल पदाधिकारी अनिकेत सचान, प्रखंड विकास पदाधिकारी ज्योति कुमारी आदि मौजूद थे।

एनडीए प्रत्याशी मनीष जायसवाल के पक्ष में लोगों से मंगा समर्थन

संवाददाता

रामगढ़ । एनडीए प्रत्याशी मनीष जायसवाल आगामी 2 मई को रामगढ़ क्षेत्र का दौरा करेंगे। जिसको लेकर 30 अप्रैल को भारतीय जनता पार्टी रामगढ़ कैंट मंडल अध्यक्ष सूर्यवंश श्रीवास्तव एवं आजसू नगर अध्यक्ष अरुण अग्रवाल के नेतृत्व में भाजपा कैंट मंडल के सभी आठ वार्ड में हजारीबाग लोकसभा एनडीए प्रत्याशी मनीष जायसवाल के पक्ष में पार्टी पदाधिकारियों और कार्यकताओं ने भ्रमण कर लोगों से एनडीए प्रत्याशी के लिए समर्थन मांगा ।इस दौरान बताया गया की 2 मई को एनडीए प्रत्याशी मनीष जायसवाल सभी शक्ति केंद्र पर जनसंवाद और नुक्कड़ सभा में शामिल होंगे और लोगों से समर्थन मांगेंगे । वहीं, भाजपा कैंट मंडल अध्यक्ष सूर्यवंश श्रीवास्तव ने कहा की इस बार पुनः लोगों में भाजपा के पक्ष में लहर है इसलिए एनडीए प्रत्याशी मनीष जायसवाल की जीत

सुनिश्चित है। उन्होंने कहा की लोगों को केंद्र सरकार के प्रधानमंत्री आवास योजना, उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री कृषि सम्मान निधि सहित विभिन्न योजनाओं का लाभ मिल रहा है। साथ ही देश के 80 करोड़ लोगों को प्रत्येक माह राशन मिल रहा है। इसलिए लोगों का रुझान एनडीए की तरफ है । कहा की इस बार के लोकसभा चुनाव में एनडीए 400 से अधिक सीटों के साथ जीत दर्ज करेगा । कार्यक्रम में भाजपा जिला महामंत्री रंजन फौजी, ओबीसी मोर्चा के जिला अध्यक्ष नमेंद्र चंचल,लाभार्थी संयोजक सह विधान सभा सह संयोजक विजय जयसवाल, निवर्तमान मंडल अध्यक्ष शिव कुमार महतो, सरदार अनमोल सिंह, कैंट मंडल महामंत्री ऋषिकेश सिंह, शीतल सिंह, सुशांत पांडे, मंत्री अभिषेक चौधरी, अजीत गुप्ता, मिथलेश मंडल, ब्रजेश पाठक, रोबिन गुप्ता,दीपक सोनकर, बरुण सिंह, सैयद किरमानी, बिनोद कुशवाहा, सुनील पासवान, मोहन पांडे, जगदीश शर्मा, शिव कुमार गुप्ता,बिजेंद्र मुंडा, कुलदीप वर्मा, लेखराज महतो, राजू राठौड़, संजय श्रीवास्तव सहित भाजपा समर्थक मौजूद थे ।

संक्षिप्त

सांसद संजय सेठ कल करेंगे नामांकन

रांची : सांसद संजय सेठ 2 मई को अपना नामांकन करेंगे इस नामांकन कार्यक्रम में उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी भाजपा के प्रदेश के अध्यक्ष पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी आजसू के प्रदेश अध्यक्ष सुदेश महतो जनता दल यूनाइटेड के प्रदेश अध्यक्ष खीरू महतो सभी सांसद, विधायक, एवं प्रदेश के सभी पदाधिकारी विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। नामांकन के पूर्व एक जनसभा 10:30 बजे से आयोजित की गई है जिसमें 6 विधानसभा के लगभग 50 हजार कार्यकर्ता शामिल होंगे। मोराबादी मैदान से दिन 12:00 गजे बाजे के साथ उपायुक्त कार्यालय की ओर नामांकन के लिए प्रस्थान करेंगे। 400 पार के नारों के साथ देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को देश का तीसरा बार प्रधानमंत्री बने एवं देश को विकास की और ले जाने के लिए यह नॉमिनेशंस एक ऐतिहासिक होगा सांसद सेठ ने रांची के सभी लोगों से इस ऐतिहासिक नामांकन में शामिल होने की अपील की है। यह जानकारी संजय पोद्दार ने दी।

बढ़ती हुई गर्मी को देखते हुए चना, सत्तू व खीरे का वितरण

रांची : मारवाड़ी महिला मंच रांची शाखा द्वारा बढ़ती हुई गर्मी को देखते हुए काफी भीड़भाड़ वाले इलाके अप्पर बाजार में रिक्शाचालकों को राहगीरों एवं स्कूली बच्चों के बीच 25 केजी सत्तू की शर्बत खीरा एवं लाल चने का वितरण किया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रीति पोद्दार सीमा पोद्दार छाया अग्रवाल संगीता गोयल उषा संथाली मीरा टिबरेवाल कविता सराफ मंजू गडोदिया इत्यादि बहनों का सहयोग रहा।

एक्सआईएसएसका 63वां दीक्षांत समारोह 6 को

रांची : जेवियर समाज सेवा संस्थान (एक्सआईएसएस), रांची, का 63वां दीक्षांत समारोह 4 मई को शाम 5 बजे से संस्थान कैंपस में आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में बैच 2022-2024 के 247 स्नातक छात्रों के बीच आयोजित दीक्षांत समारोह के दौरान उनके डिप्लोमा वितरित किए जायेंगे। श्री राजीव दुबे, चेयरमैन, महिंद्रा इंश्योरेंसब्रोकर्स लिमिटेड, महिंद्रा स्टील सर्विस सेंटर लिमिटेड, और महिंद्रा फर्स्टचॉइसव्हील्स लिमिटेड इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। वे मार्केटिंगमैनेजमेंट, फाइनेंशियल मैनेजमेंट, रूरलमैनेजमेंट, और ह्यूमनरिसोर्समैनेजमेंटके स्नातकों को इस कार्यक्रम के दौरान संबोधित करेंगे जो अब देश की कईप्रतिष्ठित कंपनियों में अपनी सेवा देने के लिए तैयार हैं। इस वर्ष फादर माइकल वैन डेनबोगार्टएसजेमेमोरियल 'प्रतिष्ठित एलुमनाईअवार्ड', के लिए ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट प्रोग्राम के 1990-1992बैच के सलिल लाल, एजीक्यूटिव डायरेक्टर एवं सीएचआरओ,मारुति सुजुकी प्राइवेट लिमिटेड को सम्मानित किया जा रहा है।

हर्ष राज खलखो ने झारखंड को दिलाया स्वर्ण पदक

रांची : हर्ष राज खलखो ने रोलर स्केटिंग महासंघ की ओर से अमृतसर में आयोजित 5वीं रैंकिंग रोलर स्केटिंग चैम्पियनशिप-2024 में राज्य को गोल्ड मेडल दिलाया है। राष्ट्रीय स्तर की इस प्रतियोगिता में भारत के सभी राज्यों तथा केन्द्र-शासित प्रदेशों से प्रतिभागियों ने भाग लिया। हर्ष राज खलखो झारखंड राज्य के उस स्केटर में से हैं, जिन्होंने पांच से सात वर्ष के आयु समूह में बेहतर प्रदर्शन किया। पांच सौ मीटर में रजत पदक के अलावा अपने दूसरे इवेंट 200 मी. में स्वर्ण पदक जीत कर झारखंड का नाम राष्ट्रीय स्तर पर रोशन किया है। रोलर स्केटिंग एसोसिएशन ऑफ झारखंड के अध्यक्ष विकास सिंह, कोषाध्यक्ष जय प्रकाश गुप्ता, सचिव सुमित शर्मा, संरक्षक अजित खेस और अभिषेक सिंह राठौर एवं रोलर स्केटिंग एसोसिएशन ऑफ झारखंड के सभी सदस्यों ने इस उपलब्धि पर खुशी जताते हर्ष के उज्जवल भविष्य की कामना की है।

झारखंड में अब तक 71 करोड़ 11 लाख रुपये से अधिक की हुई जब्ती

संवाददाता

रांची। आदर्श आचार संहिता के लागू होने से लेकर अब तक झारखंड में 71 करोड़ 11 लाख रुपये से अधिक की जब्ती की गई है। इसमें अवैध शराब, ड्रग्स आदि समेत 5 करोड़ 18 लाख से अधिक नकद रुपये शामिल हैं। उप मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी नेहा अरोड़ा ने यह जानकारी दी। वह 30 अप्रैल को को निर्वाचन सदन में मीडिया से बात कर रही थीं। उप मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी

रद्द किये गये 817 आर्म्स लाइसेंस

ने बताया कि राज्य में विधि व्यवस्था को लेकर राज्य के 18577 आर्म्स लाइसेंस में से 817 को रद्द करने की कार्रवाई की गई है। लाइसेंस रद्द हथियारों के मालिकों ने उसका सत्यापन नहीं कराया था।

नेहा अरोड़ा ने बताया कि फेज 5 के निर्वाचन को लेकर 14 नामांकन हुए हैं। उनमें चतरा में 9, कोडरमा में 4 और हजारीबाग में 1 नामांकन हुआ है। फेज 6 के लिए अब तक 8 नामांकन हुए हैं। उनमें गिरिडीह में 1, धनबाद में 2, रांची में 2 और जमशेदपुर में 3 नामांकन हुए हैं।

उप मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने बताया कि निर्वाचन आयोग की ओर से मतदाता जागरुकता का अभियान विभिन्न माध्यमों से लगातार जारी है।

एसबीयू, रांची व विजियू, जयपुर के बीच एमओयू शैक्षणिक आदान-प्रदान और शोध परामर्श होगा

संवाददाता

रांची : सरला बिरला विश्वविद्यालय, रांची और विवेकानंद ग्लोबल यूनिवर्सिटी, जयपुर के बीच जयपुर में एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर एसबीयू के कुलपति प्रो. गोपाल पाठक और विजियू के कुलसचिव डॉ. प्रवीण चौधरी ने हस्ताक्षर किया। एमओयू में दोनों विश्वविद्यालयों के बीच शोध, परामर्श और शैक्षणिक आदान- प्रदान के बिंदु सम्मिलित हैं। इस अवसर पर विजियू, जयपुर में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें विजियू की ओर से संस्था के डीन और विभिन्न विभागाध्यक्ष शामिल हुए। एसबीयू की ओर से डीन डॉ. नीलिमा पाठक इस अवसर पर सम्मिलित हुईं। इस एमओयू से दोनों विवि के छात्रों को वृहत शैक्षणिक परिवेश में अध्ययन करने का अवसर मिल सकेगा। साथ ही दोनों विवि के विभिन्न विशेषज्ञों के सान्निध्य में छात्रों को नवीनतम और शैक्षणिक जानकारियां भी उपलब्ध हो पाएंगी। विवि के प्रतिकुलाधिपति माननीय बिजय कुमार दलान और माननीय डॉ. प्रदीप वर्मा ने दोनों विवि के बीच हुए इस एमओयू के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की।

सेल सुरक्षा संगठन, रांची ने मनाया सुरक्षा व स्वास्थ्य के लिए विश्व इस्पात दिवस

संवाददाता

रांची : सेल सुरक्षा संगठन (एसएसओ), रांची द्वारा 29 अप्रैल, 2024 को 'सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए विश्व इस्पात दिवस' मनाया गया। World Steel Association के तत्वावधान में हर साल 28 अप्रैल को विश्व स्तर पर यह दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर सेल के संयंत्रों और इकाइयों के कर्मचारियों के लिए एक खतरा विश्लेषण प्रतियोगिता - लॅर्डअल्ल.उड्ड का आयोजन किया गया, जिसमें कर्मचारियों से कार्यस्थल पर खतरों को कम करने पर केस अध्ययन आमंत्रित किए गए थे। दो श्रेणियों में प्राप्त कुल 60 प्रविष्टियों में से, कर्मचारियों की टीमों से 27 प्रविष्टियों को शॉर्टलिस्ट किया गया, जिन्होंने एम टी आई, रांची, सेल में निर्णायक मंडल के एक पैनल के समक्ष विस्तृत प्रस्तुतियां दीं। शॉर्टलिस्ट की गई टीमों में से, इस्को स्टील प्लांट से शैलेश कुमार एवं मनीष कुमार की टीम श्रेणी-1 (Executives) में समग्र विजेता के रूप में उभरी, जबकि दीपक कुमार मोहंती, प्रस-ांत कुमार नाइक एवं अमूल्य कुमार बिसोई श्रेणी-2 (Non-Executives) में विजेता रहे। पुरस्कार समारोह में आशीष चक्रवर्ती, ईडी (एसएसओ), शशी वशिष्ठ, सीजीएम (सुरक्षा), एसएसओ, तथागत घोष, सीजीएम (सीईटी), पार्थ बैनर्जी, सीजीएम (आरडीसीआईएस) उपस्थित थे।

सीसीएल से सेवानिवृत्त हुए 43 कर्मियों को दी गई भावभीनी विदाई

संवाददाता

रांची। कोल इंडिया की सहायक कंपनी सीसीएल से अप्रैल, 2024 में 43 कर्मी सेवानिवृत्त हुए। मुख्यालय सहित विभिन्न क्षेत्रों में कार्यक्रम आयोजित कर उन्हें भावभीनी विदाई दी गई। सीसीएल मुख्यालय से 3 कर्मी रिटायर हुए। मुख्यालय से डॉ. छाया रानी (सीएमओ, गांधीनगर अस्पताल), अमर नाथ झा (वरीय पीए, ए-1, सीएमसी विभाग) और सूरज महतो (हेड सिक्योरिटी गार्ड) से सेवानिवृत्त हुए। सीसीएल की ओर से हर्षसम्मान- सह-विदाई समारोह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर महाप्रबंधक (सीएमसी) राजीव सिंह, सीएमएस डॉ. सुमन सिंह, मुख्य

प्रबंधक (कार्मिक), कल्याण विभाग श्रीमती कैया मुखर्जी सहित विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष/महाप्रबंधक और सेवानिवृत्त कर्मियों के परिवार के सदस्य एवं अन्य गणमान्य उपस्थित थे।

राजीव सिंह ने सेवानिवृत्त हुए कर्मियों को सेवाकाल के सफल समापन पर बधाई दी। कहा कि आप सभी के योगदान के फलस्वरूप कंपनी सफलता के मार्ग पर अग्रसर है। सभी सेवानिवृत्त हुए कर्मियों को जीवन की दूसरी पारी के लिए शुभकामनाएं दी।

डॉ. सुमन सिंह ने सेवानिवृत्त हो रहे कर्मियों के स्वस्थ्य जीवन की कामना की। कहा कि द्वितीय पाली में आप ज्यादा से ज्यादा परिवार को समय दें। अपने पसंद का काम करें। इस अवसर पर सेवानिवृत्त कर्मियों के कार्यानुभवों पर एक शॉर्ट फिल्म प्रदर्शित किया गया। इसमें कर्मियों ने अपने संपूर्ण सेवाकाल के यादगार लम्हों को साझा किया है। सेवानिवृत्त कर्मियों ने कंपनी के प्रति शुभेच्छा प्रकट कि?या। कहा कि कंपनी हमारे पूरे सेवा काल में जीवन का एक अभिन्न अंग रही है। सेवानिवृत्त हुए कर्मियों को शॉल, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का मंच संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन मुख्य प्रबंधक (कार्मिक) श्रीमती कैया मुखर्जी ने किया।

ईडी के अधिकारी ने आवाज बंद रखने की दी थी नसीहत : भट्टाचार्य

संवाददाता

रांची। झामुमो के केंद्रीय महासचिव सह प्रवक्ता सुप्रियो भट्टाचार्य ने कहा कि राज्य में एक साल से अधिक समय से ईडी की कार्रवाई चल रही है। राज्य के तत्कालीन मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन पर जमीन घोटाले का आरोप है। इसके बाद 31 जनवरी से जेल में बंद हैं, तो वहीं झामुमो के नेता अंतु तिर्की को भी पूर्व मुख्यमंत्री से जुड़े जमीन मामले में ईडी ने गिरफ्तार किया और रिमांड पर लेकर हुई पूछताछ में कई चौंकनेवाले नाम सामने आये हैं।

इसमें सबसे पहला नाम पार्टी के केंद्रीय महासचिव सह प्रवक्ता सुप्रियो भट्टाचार्य का आ रहा है।

इस पर सुप्रियो ने कहा कि मैंने कुछ दिन पहले ही इशारा किया था कि अब मैं टारगेट में हूं। मुझे कुछ दिन पहले ही ईडी के एक अधिकारी ने अपनी आवाज बंद रखने का निर्देश दिया था। मैं एक राजनीतिक व्यक्ति हूं और कई विषयों को लेकर कॉल आते हैं। बहुत होगा तो क्या होगा अपने नेता का साथ निभाने के लिए होटवार जेल में जाना होगा। अच्छा रहेगा, बिना होटवार गये आवाज शांत नहीं होगी। जेल जाने के बाद भी हमारी आवाज बंद नहीं होगी। जेल में रह कर प्रेस विज्ञप्ति लिखूंगा और जेल अधीक्षक की मुहर लगवा कर भेजता रहूंगा। प्रधानमंत्री के दौरे से पहले ही हमें ईडी बुलायेगी और मैं पूरी तैयारी से जाऊंगा, अपना लगेज तक लेकर जाऊंगा। मैं अपना जमीर नहीं बेच सकता हूं। अपने लोगों को कभी भी व्यक्तिगत लाभ के लिए बदनाम नहीं कर सकता हूं। हमें जितना परेशान करना है कर सकते हैं। हम परेशान होने वाले नहीं हैं। भट्टाचार्य मंगलवार को हरमू स्थित पार्टी कार्यालय में संवाददाता सम्मेलन में बोल रहे थे। मौके पर विधायक विकास मुंडा उपस्थित थे।

मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित कर रहे सरकारी स्कूलों के बच्चे

स्कूलों में निरंतर हो रहा रोचक प्रतियोगिताओं का आयोजन

संवाददाता

रांची। लोकसभा चुनाव के मद्देनजर राज्य के सरकारी स्कूलों में भी मतदाता जागरुकता के लिए मतदान से संबंधित रोचक कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। स्कूलों में आयोजित होने वाले चेतना सत्रों में भी बच्चों को भारत के विराट लोकतांत्रिक विरासत और इसकी गौरवगाथा के बारे में बताया जा रहा है। बच्चे इन प्रयासों से लोकतांत्रिक इतिहास और मतदान के महत्त्व को आसानी से समझ पा रहे हैं। इतना ही नहीं वे अपने टोलों, गांवों में भी जागरुकता अभियान चला रहे हैं।

स्कूलों में बनाया गया डेमोक्रेसी रूम

राज्य के सरकारी स्कूलों में छात्रों एवं उनके अभिभावकों को मतदान के लिए प्रेरित करने के लिए 'लोकतंत्र कक्ष' बनाया गया है। इस रूम में लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं से जुड़े चित्रों, पेंटिंग्स, आर्ट एंड क्राफ्ट, ईवीएम, वीवीपैट मशीन आदि की प्रतीकात्मक प्रदर्शनी लगाई गयी है। बच्चे इस कक्ष में अभिभावकों के साथ आकर लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को आसानी से समझ सकते हैं। बच्चे प्रतीकात्मक ईवीएम और वीवीपैट मशीन के माध्यम से अभिभावकों के मन में ईवीएम को लेकर उत्पन्न भ्रम को भी दूर करने की कोशिश कर रहे हैं। इस कक्ष में भारत के लोकतांत्रिक इतिहास के बारे में भी बच्चे जानकारी प्राप्त कर रहे हैं।

रोचक बाल संसद का गठन

विद्यालयों में बाल संसद का गठन किया गया है। इसके माध्यम से स्कूली बच्चे भविष्य में मतदान करने की प्रक्रियाओं को समझ रहे हैं। स्कूल में हाउस कप्तान, क्लास मॉनिटर का चयन किया जा रहा है। चुनाव को देखते हुए स्कूल में चुने हुए छात्र प्रतिनिधियों को 'प्रधानमंत्री, मंत्री व सांसद' जैसे पद दिए जा रहे हैं, जिससे बच्चे काफी उत्साहित भी नजर आ रहे हैं।

अभिभावक-शिक्षक बैठक का आयोजन

राज्य के विभिन्न सरकारी स्कूलों को अभिभावक शिक्षक बैठक का आयोजन करने के संबंध में निर्देश जारी किया गया है। इस बैठक में शामिल होने वाले अभिभावकों को शिक्षकों, प्राचार्य, एसएमसी सदस्यों द्वारा चुनाव में बढ़-चढ़ कर मतदान करने के लिए प्रेरित एवं जागरूक किया जा रहा है। विद्यालय द्वारा टोला टैगिंग कर अभिभावकों से संपर्क किया जा रहा है तथा बैठक में अनिवार्य रूप से शामिल होने को कहा गया है। पीटीएम के माध्यम से अभिभावकों को चुनावी तिथियों की जानकारी तो दी ही जा रही है। साथ ही उनकी वोटर पर्ची, मतदाता पहचान पत्र, बूथ संख्या आदि से जुड़ी शंकाओं को भी दूर किया जा रहा है।

लगातार प्रतियोगिताओं का आयोजन

मतदाता जागरुकता के उद्देश्य से सरकारी विद्यालयों में बच्चों के लिए लगातार चुनाव से संबंधित रोचक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। इसमें रंगोली, पेंटिंग, स्लोगन मेकिंग, वाल पेंटिंग, स्पीच आदि प्रतियोगिताएं शामिल हैं। स्कूली बच्चे लगातार इन प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पाठ्येतर कौशल को विकसित कर रहे हैं। साथ ही चुनाव को लेकर उनकी दिलचस्पी और उत्साह भी बढ़ रही है। राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा कई विद्यालयों को वोटर अवेयरनेस प्रोग्राम के तहत सम्मानित भी किया गया है।

सीएड के निदेशक सुमित की पुण्यतिथि पर रक्तदान कर दी श्रद्धांजलि

संवाददाता

रांची : पीपी कम्पाउंड स्थित सेन्टर फॉर एजुकेशन 30 वर्षो से भी अधिक समय से विद्यार्थियों को शिक्षित कर रहा है। यहां ब्यूटीशियन, फैशन डिजाइनिंग, कम्प्यूटर, स्पोकन इंग्लिश, इंटीरीयर डिजाइनिंग आदि का कोर्स बहुत कम फीस लेकर कराया जाता है। सेंटर में मंगलवार को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर की शुरूआत संस्था के फैकल्टी मोहित सर ने रक्तदान कर की। उसके बाद मेनका सेन, खुशबू तिर्की, आरती कुमारी , अष्मिता कुमारी, श्याम किशोर, सुरज

नायक, अभिरंजन तिवारी, प्रभाकर प्रसाद कंचन कांदीर, स्वीकृत तिवारी, सीवन होरो, विकास कुमार, शिशुपाल महतो, सत्यजीत रॉय, प्रवीण कुमार, विकास कुमार सिंह, इकबाल कासिम, मो. आसिफ, सकिब अहमद, आनंद कुमार ने रक्तदान किया। के.सुमित ने स्वयं 97 बार रक्तदान किया था। वे थैलेसेमिया के मरीजों के लिए निःशुल्क रक्त उपलब्ध कराने के लिए कई प्रयास किये। सेंटर फॉर एजुकेशन का ये116वां रक्तदान शिविर था। रक्तदान सदर अस्पताल की देखरेख में हुई। उनके सपनों को पूरा करने के लिए प्रयासरत रहना ही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

एनआईए डीजी ने झारखंड डीजीपी से की मुलाकात

रांची : एनआईए के डीजी सदानन्द दाते ने मंगलवार को रांची के धुर्वा स्थित पुलिस मुख्यालय पहुंचकर राज्य के डीजीपी अजय कुमार सिंह से शिष्टाचार मुलाकात की। इस शिष्टाचार मुलाकात के दौरान दोनों पदाधिकारियों ने झारखंड में आतंकवाद और नक्सलवाद सहित कई मुद्दों पर चर्चा की। इस दौरान राज्य में आतंकवाद और नक्सलवाद के खिलाफ योजनाबद्ध तरीके से की जा रही कार्रवाई एवं हाल के दिनों में प्राप्त सफलताओं पर विस्तृत रूप से चर्चा की गयी। इस शिष्टाचार मुलाकात के दौरान एडीजी आरके मल्लिक, एडीजी डॉ संजय आनन्दराव लाठकर, एनआईए के आईजी आशीष बत्रा, एनआईए डीआईजी ज्योति प्रिया, एनआईए एसपी प्रशान्त आनन्द, मनोज कौशिक सहित अन्य वरीय पुलिस पदाधिकारी उपस्थित थे।

झारखंड में आज इन जिलों में चलेगी भयंकर लू

दो दिन होगी बारिश

संवाददाता

रांची। झारखंड में एक बार फिर मौसम बदलने वाला है। राज्य में दो दिन बारिश होने की संभावना है। इस बीच 3 मई तक कई जिलों में लू चलेगी। 1 मई को कई जिलों में भयंकर लू चलेगी। इसे लेकर अलर्ट भी जारी किया गया है। यह जानकारी एयरपोर्ट स्थित रांची मौसम केंद्र ने 30 अप्रैल, 2024 को दी।

तापमान में गिरावट होगी

मौसम केंद्र के अनुसार राज्य में अगले 2 से 3 दिनों के दौरान अधिकतम तापमान में धीरे-धीरे 2 से 3 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी हो सकती है। इसके बाद अगले 2 दिनों में इसमें 2 से 3 डिग्री की गिरावट हो सकती है।

4 मई तक ये स्थिति

केंद्र के अनुसार 1 और 2 मई को

आसमान साफ रहेगा। मौसम शुष्क रहेगा। इसी तरह 3 और 4 मई को आसमान में आंशिक बादल छाये रहेंगे। मौसम शुष्क रहेगा।

5 मई को यहां बारिश

केंद्र के अनुसार राज्य के उत्तर-पूर्वी भाग में कहीं-कहीं गर्जन के साथ हल्की बारिश होने की संभावना है। इसका प्रभाव देवघर, धनबाद, दुमका, गिरिडीह, गोड्डा, जामताड़ा, पाकुड़, साहिबगंज जिलों में पड़ने की संभावना है। इसी तरह 6 मई को राज्य के पूर्वी भाग में कुछ स्थानों पर गर्जन के साथ हल्की बारिश हो सकती है। इसका असर गोड्डा, जामताड़ा, पाकुड़, साहिबगंज जिलों में देखा जा सकता है।

लू का इन जिलों में प्रभाव

केंद्र के अनुसार 1 मई को पूर्वी सिंहभूम, पश्चिम सिंहभूम, सरायकेला-खरसावां, बोकारो, धनबाद, जामताड़ा, देवघर, दुमका, पाकुड़ गोड्डा, साहिबगंज जिलों में कहीं-कहीं भयंकर लू चल सकती है। गढ़वा, चतरा, पलामू, रांची, रामगढ़, खूंटी जिले में कहीं-कहीं लू की स्थिति देखी जा सकती है।

इसी तरह 2 और 3 मई को सरायकेला-खरसावां, पश्चिमी सिंहभूम, पूर्वी सिंहभूम में कहीं-कहीं लू की स्थिति देखी जा सकती है।

मनोज केसरी हत्याकांड का मुख्य आरोपित साक्ष्य के अभाव में बरी

रांची। अपर न्यायायुक्त मनीष रंजन की अदालत ने मंगलवार को 26 साल पुराने मनोज केसरी चर्चित हत्याकांड का मुख्य आरोपित सुरेश सिंह को पर्याप्त साक्ष्य के अभाव में बरी कर दिया है। मामले में बचाव पक्ष की ओर से अधिवक्ता जितेंद्र कुमार ने अदालत में पक्ष रखा था। सुरेश सिंह लंबे समय से हत्या के आरोप में जेल में बंद है । सुरेश सिंह पर वर्चस्व की लड़ाई को लेकर मुकेश केसरी की हत्या साल 1998 में करने का आरोप है। लाश का पैर-हाथ-सिर काटकर बोड़े में भर कर ठिकाने लगाने के दौरान लोअर बाजार पुलिस ने मेन रोड स्थित उर्दू लाइब्रेरी के सामने उसे पकड़ा था। तलाशी के दौरान बोड़े से मनोज केसरी की शव बरामद हुआ था। मामले में बहुत दिनों तक आरोपित सुरेश सिंह फरार रहा। उसके बाद पुलिस ने गिरफ्तार कर उसे जेल भेज दिया था ।

महावीर प्रसाद रूंगटा सहित दो आरोपितों की डिस्चार्ज पिटीशन खारिज

रांची। ईडी के विशेष न्यायाधीश पीके शर्मा की अदालत ने मंगलवार को मनी लॉड्रिंग के आरोपित महावीर प्रसाद रूंगटा और राकेश कुमार सिंघानिया की डिस्चार्ज पिटीशन को खारिज कर दिया है। इससे पहले सुनवाई पूरी होने के बाद अदालत ने 12 अप्रैल को आदेश सुरक्षित रख लिया था। इन दोनों पर 4.33 करोड़ रुपए की मनी लॉड्रिंग करने का आरोप है। ईडी ने पहले ही कंपनियों की 4.10 करोड़ रुपए की चल-अचल संपत्ति जब्त कर चुकी है।

संक्षिप्त

बादम-राउतपारा से डंप किया गया 34 टन कोयला जब्त

बड़कागांव : बड़कागांव वन अधिसूचित क्षेत्र बड़कागांव थाना अंतर्गत राउतपारा से वन विभाग की टीम ने गुप्त सूचना के आधार पर अवैध कोयला खदान से खनन कर डंप किया गया लगभग 34 टन कोयला जब्त किया गया। जप्त कोयले को 17 ट्रैक्टर के माध्यम से बड़कागांव वन विश्रामगार लाया गया। छापामारी का नेतृत्व हजारीबाग क्षेत्रीय वन अधिकारी एके परमार एवं बड़कागांव थाना प्रभारी मुकेश कुमार सिंह द्वारा संयुक्त रूप से की गई।

गांव में सरहुल महोत्सव पर निकाली गयी शोभायात्रा

महुआडांड़/लातेहार : महुआडांड़ में मंगलवार को गांव सरहुल पूरे धुमधाम से मनाया गया। सरहुल महोत्सव को लेकर सरना भवन से शोभायात्रा निकलकर अखाड़ा तक गयी। इस शोभायात्रा में आदिवासी समाज के लोग पारंपरिक वेशभूषा पहने पारंपरिक हथियार एवं ढोल नगाड़ो के साथ आदिवासी नृत्य करते हुए जुलूस मे शामिल हुए, इस दौरान जय सरना जय चाला जय सरना,सरना माता की जय के गगनभेदी नारों से पूरा क्षेत्र गुंजायमान हो उठा। वही सांस्कृतिक कार्यक्रम को सफल संचालन में विनय उरांव, राकेश उरांव, प्रवीन उरांव, रामु, कुन्ती देवी, हेलमईत देवी प्रेम शंकर का सहयोग रहा। सांस्कृतिक कार्यक्रम शुरूआत होने से पूर्व बैगा सुले द्वारा पुजा कर अच्छी बारिश और गांव की सुख शांति के सरना माता से प्रथार्ना की गयी।

अभाविप ने चलाया मतदाता जागरण अभियान

लातेहार : अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के द्वारा पूरे भारत में मतदाता जागरण अभियान चलाया जा रहा है। मतदाता जागरण अभियान के तहत 100प्रतिशत मतदान करने को लेकर ग्रामीणों के बीच डोर टू डोर टोली बनाकर जागरण किया जा रहा है। मतदाता जागरण अभियान में अभाविप के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य रमेश उरांव ने बताया कि भारत देश के लिए देश और दिशा को तय करने के लिए हम सभी युवाओं बुजुर्गों महिलाओ सभी कोई को मतदान करने की जरूरत है। और इन्होंने बताया कि हमें महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए विश्व में भारत को सर्वोच्च स्थान पर ले जाने के लिए,देश में युवाओं के रोजगार एवं स्वरोजगार के लिए, समृद्ध किसान के लिए, समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े सभी परिवारों के लिए, शैक्षणिक विकास के लिए, देश को आर्थिक समृद्ध बनाने के लिए, आतंकवाद नक्सलवाद मावोवाद को खत्म करने के लिए,भारत को अंतरिक्ष के क्षेत्र में विकसित करने के लिए, पर्यावरण पूरक औद्योगिक विकास के लिए, भारत को सर्वोच्च स्थान पर ले जाने के लिए मतदान करने की आवश्यकता है।

सेंट जेवियर्स महाविद्यालय के गणित विभाग के विद्यार्थियों ने किया आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन

महुआडांड़/लातेहार : संत जेवियर्स महाविद्यालय महुआडांड़ के गणित विभाग के विद्यार्थियों और प्रोफेसर्स के द्वारा आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत उन्होंने महुआडांड़ स्थित राजडंडा गांव के राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय के विद्यार्थियों के साथ समय व्यतीत किया और विद्यार्थियों के शिक्षा के स्तर को जानने का प्रयास किया। इस दौरान उन्होंने मध्य विद्यालय के बच्चों को पढ़ाया और उच्च शिक्षा के संदर्भ में जानकारी प्रदान की, इससे विद्यार्थी एक बेहतर शिक्षक, जागरूक, दयालु और परोपकारी नागरिक बनते हैं जो समाज की व्यापक भलाई में विश्वास करते हैं। साथ ही बच्चों को शिक्षा के प्रति उत्प्रेरित करने हेतु उनके बीच कॉपी और कलम का वितरण किया।

टाटा स्टील और टेक्समिन ने भारत के खनन क्षेत्र में क्रांति लाने के लिए रणनीतिक साझेदारी की

टाटा स्टील इंडस्ट्रियल कंसल्टिंग और टेक्समिन सरकारी और निजी क्षेत्र की पहलों में भी सहयोग करेंगे

संवाददाता

धनबाद। टाटा स्टील ने टाटा स्टील इंडस्ट्रियल कंसल्टिंग डिवीजन (टीएसआईसी) और आईआईटी (आईएसएम) धनबाद में माइनिंग टेक्नोलॉजी इनोवेशन हब, टेक्समिन के माध्यम से भारत में प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के परिदृश्य को नया आकार देने और नवाचार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक ऐतिहासिक साझेदारी की है। समझौता ज्ञापन (एमओयू) खनन उद्योग को माइनिंग 4.0 के युग में आगे बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रतिबद्धता को दशार्ता है, जो इस क्षेत्र के लिए एक सस्टेनेबल और कुशल भविष्य को बढ़ावा देने के लिए दोनों संस्थानों की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

वाइस प्रेसिडेंट(रॉ मैटेरियल्स) डी.बी. सुंदरा रामम ने कहा कि टेक्समिन के साथ सहयोग करना टाटा स्टील के लिए खनन उद्योग में नवाचार की सीमाओं को आगे बढ़ाने का एक रोमांचक अवसर प्रस्तुत करता है। तकनीकी प्रगति, कौशल विकास और नवीन तकनीकों को प्राथमिकता देकर, यह सहयोग संसाधन प्रबंधन अभ्यासों को फिर से परिभाषित करने का वादा करता है। साथ मिलकर, हमारा लक्ष्य दक्षता और सस्टेनेबिलिटी के लिए नए मानक स्थापित करना है, जिससे पूरे क्षेत्र में परिवर्तनकारी बदलाव लाया जा सके।

टेक्समिन के परियोजना निदेशक और आईआईटी (आईएसएम) के उप निदेशक प्रो. धीरज कुमार ने कहा कि टीएसआईसी के साथ यह साझेदारी खनन क्षेत्र में अनुसंधान, नवाचार और कौशल विकास की दिशा में एक रोमांचक अभियान की शुरूआत है।

टेक्समिन के सीईओ सूरज प्रकाश ने अपने संगठन के दूरदर्शी दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला। तकनीकी नवाचारों को आगे बढ़ाने और खनन उद्यमों को डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन की दिशा में प्रोत्साहित करने के लिए अपनी अटूट प्रतिबद्धता को रेखांकित किया। टीएसआईसी और टेक्समिन के बीच साझेदारी कई प्रमुख उद्देश्यों को प्राप्त करने के उद्देश्य से एक बहुआयामी दृष्टिकोण को शामिल करती है। अपनी विशेषज्ञता का लाभ उठाते हुए दोनों संस्थाएं अन्वेषण, खनन और बेनिफिसिएशन प्रक्रियाओं में अत्याधुनिक सॉफ़्टवेयर और डिजिटल पद्धतियों को एकीकृत करने के लिए तकनीकी सहायता और परामर्श सेवाएँ प्रदान करेंगी, जिससे क्षेत्र के भीतर परिचालन दक्षता बढ़ेगी।

ध्यानपूर्वक क्यूरेट किए गए प्रशिक्षण पहलों के माध्यम से, इस साझेदारी का उद्देश्य अन्वेषण, खनन, रिमोट सेंसिंग और विनियामक प्रोटोकॉल में समकालीन दक्षताओं के साथ माइनिंग पेशेवरों को सशक्त बनाना है, ताकि भविष्य के लिए एक कुशल और सक्षम कार्यबल सुनिश्चित हो सके।

टीएसआईसी और टेक्समिन, उद्योग की चुनौतियों का समाधान करने और परिवर्तनकारी बदलाव लाने के लिए स्केलेबिलिटी और इनोवेशन पर ध्यान केंद्रित करते हुए, व्यावसायिक व्यवहार्यता के साथ नए उत्पादों और सेवाओं की कल्पना करने के लिए अपने प्रयासों को समन्वित करेंगे। साझेदारी, नवीन समाधानों को अपनाने के माध्यम से सतत विकास और उद्योग-व्यापी परिवर्तन को बढ़ावा देते हुए, उन्नत खनन तकनीकों का पता लगाएगी और उन्हें लागू करेगी। इसके अतिरिक्त, टीएसआईसी और टेक्समिन, चुनौतियों पर काबू पाने और खनन उद्योग के भीतर परिवर्तनकारी बदलाव की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए अपनी पूरक क्षमताओं का लाभ उठाते हुए, सरकारी और निजी क्षेत्र की पहलों में सहयोग करेंगे।

जयप्रकाश भाई पटेल को मिल रहा है अपार समर्थन : अंबा प्रसाद

संवाददाता

बड़कागांव : प्रखंड कांग्रेस कमेटी के तत्वाधान में बड़कागांव झारखंड कॉलेज में कोर कमेटी की बैठक हुई। कांग्रेस कमेटी की बैठक में महागठबंधन के संयुक्त प्रत्याशी जयप्रकाश भाई पटेल के नामांकन में प्रखंड क्षेत्र के सभी हिस्सों से शामिल होने को लेकर विचार विमर्श हुआ। बैठक की अध्यक्षता प्रखंड कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष विशेश्वर नाथ चौबे ने की। विधायक अंबा प्रसाद ने कहा कि महागठबंधन समर्थित कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी जयप्रकाश भाई पटेल को पूरा हजारीबाग लोकसभा में आपार जन समर्थन मिल रहा है, आने वाले दिनों में बड़कागांव विधानसभा क्षेत्र में धुआंधार प्रचार करने का कार्य किया जायेगा, गांव में डोर टू डोर प्रचार प्रसार होगी। वहीं इस दौरान दिन बुधवार को जयप्रकाश भाई पटेल के नामांकन में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेने पर सहमति बनी। विधायक ने हर गांव एवं टोला से नामांकन में शामिल होने की अपील की। अंबा प्रसाद द्वारा इस दौरान लोकसभा चुनाव के मदेनजर प्रखंड में कोर कमेटी का गठन करते हुए कई पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं को लोकसभा चुनाव से संबंधित कार्यों की जिम्मेदारी दी गई। मौके पर 20 सूत्री अध्यक्ष हाजी तबस्सुम, प्रखंड कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष विशेश्वर नाथ चौबे, जगत नंदन प्रसाद गुप्ता, त्रिलोकी साव, कामेश्वर सिंह, रमेश सिंह भोक्ता, दिनेश प्रसाद, परमेश्वर महतो, लालू यादव, गिरधारी प्रजापति, सुरेश चौधरी, श्याम भार्गव, ननकू राम, सिद्धार्थ कुमार, बालेश्वर महतो, टुकन कुमार साव, चंद्रिका प्रसाद, मोहम्मद तसलीम, सुरेश महतो, गुरदयाल कुमार जिज्ञासु, दशरथ प्रसाद, बबलू कुमार सहित कई लोग मौजूद रहे।

विधायक रोपना उरांव की मूर्ति लगाने की घोषणा की

गुमला : जारी प्रखंड के जिला परिषद सदस्य दिलीप बड़ाईक ने हाल ही में सरना आदिवासी जागृति के प्रति योगदान की मान्यता में, क्षेत्र में पहले जनसंघ से पहले विधायक एवं क्षेत्र के अत्यधिक सम्मानित व्यक्ति रोपना उरांव की एक मूर्ति स्थापित करने की घोषणा की। रोपना उरांव के काम की व्यापक रूप से प्रशंसा की गई है और इसे सरना जनजाति के उत्थान के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। रोपना उरांव गुमला से विधायक भी रहे हैं। यह प्रतिमा तब की जनसंघ और अब की भाजपा दोनों के लिए महत्वपूर्ण महत्व रखती है, क्योंकि यह आदिवासी संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण और प्रचार के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का प्रतीक है। अपने बयान में दिलीप बड़ाईक ने बताया कि प्रतिमा का अनावरण एवं निर्माण समीर उरांव की जीत के बाद करने की योजना है, समीर उराँव उसी लोहरदग्गा लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से बीजेपी के टिकट पर चुनाव लड़ रहे हैं। इस घोषणा ने स्थानीय लोगों के बीच उत्साह पैदा कर दी है, जो रोपना उरांव के काम की विरासत और प्रभाव को श्रद्धांजलि के रूप में प्रतिमा की स्थापना का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।

विनोद बिहारी महतो इंटर महिला महाविद्यालय मदयढीह की छात्राओं का प्रदर्शन उम्दा

कला संकाय में बेबी कुमारी, प्रिया कुमारी और वाणिज्य में अंसारी यासमीन अनवर महाविद्यालय टॉपर

संवाददाता

तोपचांची/धनबाद। झारखंड अधिविद्या परिषद रांची द्वारा आज इंटरमीडिएट का परीक्षा फल प्रकाशित किया गया जिसमें धनबाद जिला के तोपचांची प्रखंड अंतर्गत विनोद बिहारी महतो इंटर महिला महाविद्यालय मदयडीह का परीक्षा फल काफी बेहतर और संतोष जनक रहा।कला संकाय में जहां 95% बच्चियों सफल हुई वहीं वाणिज्य संकाय में 100% बच्चियों कामयाब रही। ज्ञात हो कि जब से इस सुदूर देहात क्षेत्र में इस कॉलेज का स्थापना किया गया है उस वक्त से आज तक इस महाविद्यालय का परीक्षा परिणाम काफी अच्छा रहा है वही इस क्षेत्र की बच्चियों उच्च शिक्षा ग्रहण करने में काफी रुचि ले रही है, और आसानी के साथ उच्च शिक्षा ग्रहण कर रही है। जहां मैट्रिक के बाद पहले बच्चियों को रायगंज या धनबाद कतरास का रुख करना पड़ता था स्थानीय विधायक मथुरा प्रसाद महतो ने इस क्षेत्र की छात्राओं की परेशानियों को देखकर मदयडीह में महिला कॉलेज का निर्माण कराया और इस क्षेत्र की बच्चियों को उच्च शिक्षा ग्रहण करने में जो सुविधा प्रदान कराया है इसके लिए क्षेत्र के लोग उनका सदैव आभारी रहेंगे। आज प्रकाशित परीक्षा परिणाम में उक्त महाविद्यालय की छात्राएं जहां प्रथम श्रेणी से कामयाब होने वाली छात्राओं की संख्या 149 है वहीं द्वितीय श्रेणी से सफलता हासिल करने वाली छात्राओं की संख्या 75 है। कला संकाय में बेबी कुमारी, प्रिया कुमारी महाविद्यालय में प्रथम आई, वही प्रिया कुमारी महाविद्यालय में द्वितीय स्थान और राखी कुमारी ने महाविद्यालय में तीसरा स्थान प्राप्त की है। वही वाणिज्य संकाय में अंसारी यासमीन अनवर महाविद्यालय मे प्रथम, जैनब परवीन द्वितीय और रुखसार बेगम ने महाविद्यालय में तृतीय स्थान प्राप्त की है।

जेबीकेएसएस समर्थित प्रत्याशी संजय कुमार मेहता ने भरा नामांकन पर्चा, समर्थन में उमड़ा जनसैलाब

हजारीबाग : लोकसभा चुनाव 2024 के लिए हजारीबाग के प्रत्याशियों ने अपना नामांकन करवाना शुरू कर दिया है। मंगलवार को नामांकन करवाने वालो में एक बड़ा नाम जेबीकेएसएस समर्थित प्रत्याशी संजय मेहता का रहा। संजय मेहता के नामांकन कार्यक्रम की रैली मटवारी गांधी मैदान से निकली और हजारीबाग समाहरणालय स्थित निर्वाचन कार्यालय पहुंची। रैली में झारखंडी योद्धा जयराम महतो समेत हजारों की संख्या में झारखंडी क्रांतिकारी व समर्थक दिखें। इस बीच संजय अपना नामांकन पर्चा दाखिल किए। नामांकन के दौरान 40 डिग्री तापमान और चिलचिलाती धूप में हजारों समर्थकों ने यह संदेश दिया है कि हजारीबाग की जनता परिवर्तन के मूड में है। इस बार जनता उसे ही वोट करेगी जो झारखंडी मुद्दों की आवाज उठाता है। स्थानीयता, नियोजन, पुनर्वास, विस्थापन और सामाजिक न्याय की बात करता है। अपने समर्थकों के बीच संजय मेहता ने नामांकन पश्चात हजारीबाग लोकसभा के लिए विकास के नए कृतिमान गढ़ने की बात कही। उन्होंने कहा कि समर्पित सेवा भाव से अपनी माटी का सेवा करना ही मेरा लक्ष्य है। जिस तरह पिछले 3 वर्षों से झारखंड बचाने के लिए हमलोगों ने जनता की आवाज बुलंद किया है। आगे भी सड़क से सदन तक झारखंडियत कि आवाज बुलंद करता रहूंगा।

छतीसगढ़ से छड़-सीमेंट लेकर आ रहा ट्रैक्टर पलटा

पारा शिक्षक व भतीजे की मौत, पुत्र गम्भीर

संवाददाता

पलामू : जिले के चैनपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत बलथरवा घाटी में सोमवार की शाम छड़-सीमेंट लदा एक ट्रैक्टर पलट गया। छड़-सीमेंट को छतीसगढ़ से लाया जा रहा था। इस घटना में ट्रैक्टर चला रहे चालक सह मालिक पाटन के उताकी के रहने वाले पप्पू सिंह (30) एवं उनके फूफा पारा शिक्षक विजय कुमार सिंह (57) की मौत हो गयी, जबकि भाई लखन सिंह (20) गंभीर रूप से जख्मी है। उसका इलाज किया जा रहा है। पारा शिक्षक विजय कुमार सिंह नावाबाजार थाना क्षेत्र के नेनुआ के रहने वाले थे। विजय कुमार सिंह के

मकान की ढलाई होनी है। इसके लिए वे अपने पुत्र लखन सिंह और भतीजे सह ट्रैक्टर मालिक पप्पू सिंह के साथ छतीसगढ़ छड़-सीमेंट लेने गए थे। वहां से सभी सोमवार की शाम लौट रहे थे। रामगढ़-चैनपुर मुख्य मार्ग पर बलथरवा घाटी में अचानक टैज्क्टर अनियंत्रित हो गया और सड़क किनारे गड्ढे में पलट गया। ट्रैक्टर मालिक सह चालक की मौके पर मौत हो गयी, जबकि विजय सिंह को इलाज के लिए एमआरएमसीएच लाया गया। यहां कुछ देर इलाज चलने के बाद उनकी भी मौत हो गयी। मंगलवार को पप्पू सिंह एवं विजय कुमार सिंह की शव का पोस्टमार्टम एमआरएमसीएच में किया गया।

दहेज हत्या आरोपी पति को 10 वर्ष सश्रम कारावास की सजा

संवाददाता

मेदिनीनगर : पलामू जिला व्यवहार न्यायालय के पंचम जिला व अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश अभिमन्यु कुमार की अदालत ने दहेज हत्या के आरोपी पति तसलीम अंसारी को 10 वर्ष की सश्रम कारावास की सजा सजा सुनाई है। सतबरवा थाना के झाबर गांव निवासी शहीदा बीबी ने मृतिका के पति, ससुर, सास, गोतनी, व भसुर के विरुद्ध लेस्लीगंज थाना में कांड संख्या 49 / 2021 दिनांक17 / 6/2021 को भारतीय दंड विधान की धारा 304 बी / 34 के तहत नामजद प्राथमिकी दर्ज कराई थी। इसमें आरोप लगाई थी कि मैं अपनी पुत्री नाजिया खातून की शादी पांच वर्ष पूर्व तस्लीम अंसारी के साथ मुस्लिम रीति रिवाज के अनुसार की थी। शादी के एक वर्ष बाद से

ही मेरी लड़की के साथ दहेज हेतु प्रताड़ित किया जाता था। वह बीच बीच मे बराबर अपनी बेटी दामाद को पैसा देते रहती थी। दिनाक 16 जून 2021 को सुचिका अपने पुत्र मो अहजद से 50 हजार रुपया भेजी थी। 17 जून 2021 को नाजिया खातून को जान मार दिए तथा उसे लटकाकर फांसी का स्वरूप दे दिए। जहा फांसी लगाकर मरने की बात बताई गई थी वहां बास से चारपाई के बीच की उच्चाई चार फीट था जबकि मृतिका नाजिया खातून की लंबाई छह फीट था।

बच्चों की पढाई के साथ-साथ खेलकूद व खानपान पर भी दें ध्यान अभिभावक : ऋतु रानी

संवाददाता

लातेहार : जिला मुख्यालय स्थित सरस्वती विद्या मंदिर में कक्षा अरुण से प्रथम तक के भैया बहनों के माताओं की एक दिवसीय गोष्टी सह कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अधिवक्ता सह अभिभाविका ऋतु रानी थी। विद्यालय के वरिष्ठ आचार्या नीलम अम्बस्टा के द्वारा अतिथि परिचय कराया गया। गोष्ठी की शुरूआत मां सरस्वती ओम एवं भारत माता के चित्र पर दीप प्रज्वलन एवं पुष्प अर्पण के साथ किया गया। इस अवसर पर प्रांत सह शिशु वाटिका प्रमुख गीता कुमारी ने शिशु वाटिका की 12 व्यवस्थाओं बगीचा, क्रीड़ा, तरणताल ,चिड़ियाघर, चित्र पुस्तकालय, वस्तु संग्रहालय, विज्ञान प्रयोगशाला, घर, रंगमंच कार्यशाला , कलाशाला और प्रदर्शनी के बारे में चर्चा की। वही उदय की कक्षाचार्या नीलम अम्बस्टा ने बताया कि भैया बहनों के सर्वांगीण विकास में आचार्य दीदी जी के साथ अभिभावकों का भी बहुत बड़ा योगदान होता है। इस दौरान सभी अभिभावकों ने अपने बच्चों की घर की गतिविधियों से विद्यालय के कक्षाचार्य, विषयाचार्य व प्रधानाचार्य को अवगत कराया और लिखित कार्य की कॉपी भी देखी गई। विद्यालय की आचार्या

अनुजा कुमारी ने बताया कि अभिभावक अपने बच्चों के प्रोजेक्ट वर्क में मदद कर गृह कार्य को आसान बना सकते हैं साथ ही जलपान में बाहर का नाश्ता ना देना, प्लास्टिक के टिफिन में गर्म खाना ना देना, सभी विषयों के दो कॉपी भेजना, बच्चों का बैग बस्ता भारी न हो इसका ध्यान रखना आदि विषयों पर ध्यान आकर्षित किया गया। तत्पश्चात मुख्य अतिथि ऋतु रानी ने अभिभावकों को बच्चों की पढ़ाई के साथ-साथ उनके खान-पान, स्वास्थ्य एवं खेलकूद पर भी विशेष ध्यान देने को कहा। साथ ही साथ बच्चों के साथ समय बिताने को भी कहा जिससे उनमें अभिभावकों के प्रति एक मित्रता पूर्ण व्यवहार हो सके। विद्यालय के प्रधानाचार्य अरुण कुमार चौधरी ने कहा कि विद्या भारती विद्यालय के अंतर्गत पूरे भारतवर्ष में 25000 सरस्वती विद्या मंदिर विद्यालय का संचालन होता है विद्यालयों में कराए जाने वाले संपूर्ण कार्य शोध पर आधारित होता है यहां सभी आचार्य दीदी जी प्रशिक्षित एवं निपुण होते हैं। इस वर्ष दशम बोर्ड की वार्षिक परीक्षा में राज्य स्तर पर हमारे विद्यालय के चार (4)एवं जिला स्तर पर (13) तेरह भैया बहनों ने अपना स्थान प्राप्त किया है। यहां आचार्य दीदी जी सभी भैया बहनों को पुत्रवत स्नेह प्रदान करते हुए पढ़ाने का कार्य करते हैं। वहीं कार्यशाला में अभिभावकों के बीच विभिन खेल प्रतियोगिता कराई गई। इस कार्यक्रम में मंच संचालन शिल्पा कुमारी के द्वारा किया गया कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी आचार्य दीदी जी का सराहनीय योगदान रहा।

संक्षिप्त

कुआं बनाने के दौरान धंसी मिट्टी, मजदूर की मौत

बोकारो । जिले के गोमिया प्रखंड के चतरोचट्टी थाना क्षेत्र के कढ़मा गांव में मनरेगा योजना के तहत कूप निर्माण के दौरान टेकलाल महतो (55) नामक एक मजदूर की मौत हो गई। घटना मिट्टी धंसने से के कारण हुई। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंचकर शव को कब्जे में ले लिया। कूप निर्माण में कार्यरत अन्य मजदूरों ने बताया कि हम सभी अपने-अपने काम में व्यस्त थे, तभी ऊपर से मिट्टी का मलबा टेकलाल महतो के शरीर पर गिर गया। मलबे के साथ टेकलाल महतो गहरे कुंआ में जा गिरा और दब गया। जैसे-तैसे बेहोशी की हालत में मजदूरों ने ही उसे बाहर निकाला और इलाज के लिए बनासो विष्णुगढ़ अस्पताल ले जाने के क्रम में रास्ते में उसकी मौत हो गई। वहीं, मृतक की बेटी ने आरोप लगाया है कि लापरवाही के कारण घटना हुई है। घटनास्थल से हमलोग का घर नजदीक होने के बावजूद में जानकारी नहीं दी गई। घटना को दबाने का पूरा प्रयास किया गया है। घटना से परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। पुलिस ने बेरमो अनुमंडल अस्पताल में पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया है।

पुलिस ने चलाया वाहन जांच अभियान

बोकारो थर्मल । बोकारो एसपी के निर्देश पर लोकसभा चुनाव के तहत बोकारो थर्मल थाना के पुलिस निरीक्षक शैलेंद्र कुमार सिंह के नेतृत्व में मंगलवार को स्थानीय डीवीसी ऑफिसर्स क्लब एवं लाल चौक पर पुलिस ने वाहन जांच अभियान चलाया। पुलिस ने वाहन जांच के दौरान दो पहिया एवं चार पहिया वाहनों की डिक्की एवं डैशबोर्ड को खोलकर हथियार एवं रुपयों की जांच की। जांच के दौरान पुलिस को किसी भी प्रकार के आपत्तिजनक सामान नहीं मिले। दोपहिया वाहन चालकों को पुलिस ने हिदायत दी कि वे हेलमेट लगाकर एवं वाहन के कागजात को साथ लेकर चलें। मौके पर थाना के अनि मनोज कुमार सिंह, भागीरथ महतो तथा हवलदार एवं जवान शामिल थे।

शार्ट सर्किट से केबल में लगी आग

बोकारो थर्मल । बोकारो थर्मल कार्मेल स्कूल स्थित एसटीपी का निर्माण कार्य करनेवाली कंपनी भरतजी पटेल कार्यालय के समीप डीवीसी कॉलोनी सप्लाई वाले बिजली के केबुल में आग लग जाने से जल गयी। बताया जाता है कि उक्त केबुल से हरिजन बस्ती के लोग बिजली का कनेक्शन अवैध रूप से जैसे तैसे ले गये हैं। मंगलवार की दोपहर लगभग दो बजे शार्ट सर्किट से आग लग गयी, जिससे वहां से ले जाया गया सभी तार और केबुल जल गया। आग लगने की घटना से वहां का सभी घास फूस भी जल गया।

सेवानिवृत्त रेलपथ कर्मचारी को दी विदाई

बोकारो । इस्पात नगर के अभियंत्रण रेल पथ कर्मचारी अब्राहम बेसरा मंगलवार को सेवानिवृत हो गए। इस्पात नगर के रेल कर्मियों के द्वारा अंग वस्त्र और समान देकर उन्हें हार्दिक शुभेच्छाओं सहित विदाई दी गई। लगभग 30 वर्ष तक सेवा देने वाले राजेंद्र प्रसाद पीडब्ल्यूआई/बीकेएससी ने पुष्पगुच्छ भेंट कर उन्हें सम्मानित किया। मौके पर राजेंद्र प्रसाद, योगेंद्र कुमार, ध्रुव कुमार त्रिपाठी, नेवालाल मांझी, बिनोद बिहारी गोप, गोपाल प्रसाद नायक, बिनोद कुमार सिंह, राजू रंजन, प्रदीप कुमार, हेमंत कुमार महतो, दीपक कुमार, चंदन कुमार, राजेश, दिनेश, विवेक, राजकुमार, अजीत, अर्जुन, मनोज कुमार, दुर्गा, प्रत्योष, अजय, हरेंद्र सहित आदि मौजूद रहे।

अंगार बनी धरती, शोले बरसा रहा आसमान, आम जनजीवन ठप

बोकारो में पारा 45 डिग्री सेल्सियस पहुंचा, 24 किमी प्रतिघंटे की रफ्तार से चली लू

- इस सीजन का सबसे गर्म दिन रहा मंगलवार, कर्फ्यू सा माहौल

संवाददाता

बोकारो : बोकारो में इस बार की गर्मी अपने-आप में काफी रौद्र मानी जा रही है। मंगलवार को इस सीजन का सबसे अधिक तापमान 45 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। 22 से 24 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से झुलसा देने वाली लू के थपेड़ों ने लोगों का घर से जीना मुहाल कर दिया। स्थिति ऐसी है मानो धरती अंगार बन चुकी हो और आसमान से शोले बरस रहे हों। इसके कारण आम जनजीवन ठप सा हो चुका है। लोगों का अपने घरों से निकला दूभर हो चुका है। बाजारों में ऐसी वीरानी देखी जा रही है मानो कर्फ्यू लगा हो। दोपहर 2 बजे तेज झोंके के साथ लू के थपेड़े ऐसे चल रहे थे जैसे चिमनी का धुआं। शहरवासियों में मुन्ना सिंह, सरोज झा सहित कई लोगों ने कहा कि बोकारो में आजतक उन्होंने अप्रैल महीने में ऐसी गर्मी नहीं देखी थी। अभी यह स्थिति है तो मई जून आते-आते क्या होगा, यह सोच-सोचकर लोग सहमे हुए हैं।

सुबह के 7-8 बजे के बाद से ही लू के थपेड़े चलने लग रहे हैं और शाम पांच-साढ़े पांच तक गर्मी की तपिश बनी रह रही है। झुलसाती गर्मी की इस तपिश में सड़कों पर दोपहिया या पैदल चलना शोलों से गुजरकर चलने जैसा प्रतीत हो रहा है। लोग अभी से ही घर से बाहर निकलने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे। वे दिन भर घर में दुबके रहने को विवश हैं। अनिवार्यतावश मजबूरी में जो लोग निकलते भी हैं तो पूरे एहतियात के साथ मुंह बांधे।

आज भीषण उष्ण लहर की चेतावनी, यलो अलर्ट जारी

मौसम विज्ञान केंद्र, रांची के निदेशक अभिषेक आनंद ने जारी वेदर बुलेटिन में बताया कि बुधवार को बोकारो सहित कई जिलों में सीवियर हीट वेव चलेगी। इसके लिए यलो अलर्ट जारी किया गया है। जिले में मंगलवार को पिछले 24 घंटे में सामान्य से लगभग पांच डिग्री सेल्सियस अधिक तापमान रिकॉर्ड किया गया। मंगलवार को 45 डिग्री के बाद बुधवार को 44 डिग्री, गुरुवार को 43, शुक्रवार को 42 और शनिवार को 41 डिग्री सेल्सियस अधिकतम तापमान रहने की संभावना है। जबकि, बुधवार को राज्य में पश्चिमी सिंहभूम, पूर्वी सिंहभूम, सरायकेला खरसावां, बोकारो, धनबाद, देवघर जामताड़ा, दुमका, पाकुड़, गोड्डा और साहिबगंज जिलों में कहीं-कहीं भीषण उष्ण-लहर की स्थिति देखी जा सकती है। 2 मई तक राज्य में हीट वेव की स्थिति का अनुमान है। अभिषेक आनंद ने कहा कि राज्य में अगले दो-तीन दिनों के दौरान अधिकतम तापमान में धीरे-धीरे दो से तीन डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो सकती है। इसके बाद अगले दो दिनों में इसमें गिरावट आने के आसार हैं।

लू के कारण तुपकाडीह बाजार में सन्नाटा

तेज धूप गर्मी और लू के कारण मंगलवार को तुपकाडीह बाजार की दुकानें दिन के 11 बजते ही बंद हो गई। मेन रोड में वाहनों के गमनागमन थम गये। दिनभर कर्फ्यू जैसा देखने को मिला। दिन में खुले रहने वाले होटल भी बंद करके दुकानदार अपने घर चले गये। शाम 5 बजे के बाद बाजार की चहल-पहल लौटी। अप्रैल माह के अंतिम दिन ने लोगों को आने वाले मई और जून माह में होने वाली गर्मी की चिंता बढ़ा दी है। दुकानदारों ने बताया कि इस तपती धूप में दूर दूर से आने वाले ग्राहक सुबह या शाम को बाजार आयें।

बोकारो स्टील से सीजीएम समेत 61 कर्मी सेवानिवृत्त

- सुखमय अवकाश प्राप्त जीवन की शुभकामना के साथ दी गई विदाई

संवाददाता

बोकारो । बोकारो स्टील प्लांट से अप्रैल 2024 माह में सेवानिवृत होने वाले कर्मियों के लिए मानव संसाधन विकास विभाग के मेन ऑडिटोरियम में एक विदाई समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में मुख्य महाप्रबंधक (सामग्री प्रबंधन) हर्ष निगम उपस्थित थे। समारोह के आरम्भ में सहायक महाप्रबंधक (कार्मिक) डॉ नन्दा प्रियदर्शिनी ने आगंतुकों का स्वागत किया तथा सेवानिवृत हो रहे कर्मियों को अंतिम निपटारा एवं मैत्री भवन से सम्बंधित जानकारी देते हुए प्रत्येक सेवानिवृत हो रहे कर्मियों का बायोडाटा प्रस्तुत किया। मुख्य महाप्रबंधक (सामग्री प्रबंधन) श्री निगम ने सेवानिवृत्त हो रहे कर्मियों को उनकी निष्ठापूर्ण सेवा के लिए बधाई देते हुए उनके सुखमय जीवन की कामना की। उन्होंने सेवानिवृत हो रहे कर्मियों को सेवा प्रमाण पत्र तथा उपहार भी भेंट किये। अप्रैल 2024 में बीएसएल से कुल 06 अधिशासी तथा 55 अनाधिशासी सेवानिवृत्त हो रहे हैं। कार्यक्रम का संचालन डॉ नन्दा प्रियदर्शिनी, सहायक महाप्रबंधक (कार्मिक) ने किया। मुख्य महाप्रबंधक (रिफ्रैक्टरीज) वेद प्रकाश उपाध्याय के लिए निदेशक प्रभारी के सम्मेलन कक्ष में अलग से एक विदाई समारोह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर कार्यकारी निदेशक प्रभारी सी आर महापात्रा, अधिशासी निदेशक (वित्त एवं लेखा) सुरेश रंगानी, अधिशासी निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन एवं अतिरिक्त प्रभार संकार्य) राजन प्रसाद सहित विभिन्न विभागों के मुख्य महाप्रबंधक उपस्थित थे। कार्यकारी निदेशक- प्रभारी श्री महापात्रा ने उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट किये। सभी ने सेवानिवृत्त हो रहे श्री उपाध्याय को उनके भावी जीवन के लिए शुभकामनाएं दी।

रांची में मुर्गियों की मौत के बाद बोकारो प्रशासन अलर्ट, टीमें गठित

बोकारो से सुलगी थी पिछले साल बर्ड फ्लू की चिंगारी, सामने आया था सबसे पहला मामला

डीके वत्स

बोकारो । मुर्गे से बनने वाले चिकन तंदूर, चिल्ली चिकन, लेग कबाब जैसे लजीज व्यंजनों के शौकीन लोगों को एक बार फिर अपने स्वाद और अपनी जीभ पर लगाम लगाने की जरूरत आन पड़ी है। वजह यह कि एक बार फिर झारखंड में बर्ड फ्लू का जिन्न जाग चुका है। झारखंड की राजधानी रांची में बर्ड फ्लू फैलने की पुष्टि हुई है। शहर के होटवार इलाके के रीजनल पोल्ट्री फार्म में खबर लिखे जाने तक लगभग दो हजार मुर्गियों के साथ 2200 से अधिक पक्षियों को मारा जा चुका है। इसके साथ ही बोकारो जिले में भी प्रशासन अलर्ट मोड में आ चुका है।

गौरतलब है कि विगत वर्ष बर्ड फ्लू का मामला फरवरी महीने के अंत में बोकारो से ही सामने आया था। सेक्टर-12 स्थित मुर्गी पालन केन्द्र में बर्ड फ्लू का मामला सामने आने के बाद फार्म के एक किलोमीटर के दायरे में बर्ड फ्लू ग्रसित लगभग चार हजार मुर्गियों और बत्तखों को मारा गया था। इससे पहले 800 पक्षियों की मौत हो गई थी और 103 को तत्काल मारना पड़ा था। जांच में कड़कनाथ नामक मुर्गे में एवियन इंफ्लूएंजा वायरस के एक प्रकार एच5 एन1 की पुष्टि हुई थी। इसके पहले वर्ष 2019 में झारखंड के गोड्डा जिले में आखिरी बार बर्ड फ्लू का मामला सामने आया था। इधर, राज्य में एक बार फिर बर्ड फ्लू का केस सामने आने के बाद बोकारो का प्रशासनिक महकमा अलर्ट हो चुका है। उपायुक्त विजया जाधव के निर्देश पर जिला पशुपालन विभाग की टीम हरकत में आ चुका है। हालांकि, जिले में खबर लिखे जाने तक तक बर्ड फ्लू को लेकर कोई मामला सामने नहीं आया है। डीसी के मुताबिक, विभाग इसकी कड़ी निगरानी रख रही है। विभाग किसी भी स्थिति से निपटने के लिए तैयारी कर ली है। पशु चिकित्सकों व कर्मचारियों की जिला व प्रखंड स्तरीय रैपिड रिस्पांस टीम, क्विक रिस्पांस टीम गठित की गई है। कुक्कुट की अचानक मौत होती होने पर अविलंब इसकी सूचना जिला व प्रखंड टीम को देने की अपील की गई है। हालांकि, विभाग के पास बर्ड फ्लू की जांच के लिए किट उपलब्ध नहीं हैं। इसके लिए जिला पशुपालन विभाग ने राज्य निदेशालय से किट की मांग की है। इसके बाद ही यहां के मुर्गियों का सैंपल लिया जाएगा। चिकन के ब्लड सैंपल जांच के लिए भोपाल भेजा जाएगा। जिला पशुपालन पदाधिकारी ने सेक्टर-12 स्थित कुक्कुट पालन केंद्र की सफाई करने का निर्देश दिया है।

हेल्पलाइन जारी

9123494138 - डा. विनय कुमार सिन्हा, अवर प्रमंडल पशुपालन पदाधिकारी (तेनुघाट)
8102771809 - डा. पुष्पा कुमारी, अवर प्रमंडल पशुपालन पदाधिकारी
9973752779 - डा. अशोक कुमार, प्रखंड पशुपालन पदाधिकारी (चास) 9693440204- विनोद कुमार दास, पशुधन सहायक माडल अस्पताल चास

जिले में 89 निबंधित मुर्गी फार्म

प्राप्त जानकारी के अनुसार, वर्तमान में सेक्टर-12 स्थित कुक्कुट पालन केंद्र में 500 मुर्गे हैं। इनमें 350 के करीब कड़कनाथ मुर्गे हैं। प्रत्येक दिन 150 से 200 अंडों का उत्पादन किया जाता है। बोकारो में 89 रजिस्टर्ड मुर्गी फार्म है। इसके अलावा 500 से 1000 मुर्गी पालक हैं।

सीमावर्ती क्षेत्रों पर कड़ी नजर

पशुपालन पदाधिकारी डॉ. मनोज कुमार मणि के अनुसार, सभी मुर्गीपालकों को एहतियात बरतने को कहा गया है। इतना ही नहीं जिले के बॉर्डर पर विशेष निगरानी रखी जा रही है। बाहर से मुर्गियां नहीं आने दी जा रही हैं। खासकर बंगाल और रामगढ़ की सीमा पर नजर रखी जा रही है। चास प्रखंड पशुपालन पदाधिकारी डॉ. अशोक कुमार ने बताया कि जब तक कोई रिपोर्ट नहीं आती है, तब तक किसी को डरने की जरूरत नहीं है।

दूसरे दिन 12 लोगों ने खरीदे नामांकन प्रपत्र

निर्दलीय उम्मीदवार उषा सिंह ने दाखिल किया अपना पर्चा, तो चंद्रप्रकाश ने खरीदा

संवाददाता

बोकारो । 06 गिरिडीह लोकसभा संसदीय क्षेत्र के लिए अधिसूचना जारी होने के दूसरे दिन मंगलवार को नाम-निर्देशन के लिए कुल तीन लोगों ने नामांकन प्रपत्र खरीदे। जबकि, एक ने निवार्ची पदाधिकारी के समक्ष नामांकन पर्चा दाखिल किया। अब तक कुल 12 लोगों ने नामांकन प्रपत्र खरीदे हैं।

जिला निर्वाचन पदाधिकारी, बोकारो सह- निवार्ची पदाधिकारी 06 गिरिडीह लोकसभा संसदीय क्षेत्र, विजया जाधव ने कहा कि दूसरे दिन कुल तीन लोगों ने नामांकन प्रपत्र जिला नजारत शाखा से खरीदे हैं। वहीं, एक निर्दलीय उम्मीदवार उषा देवी, ग्राम झ पो. फुसरो, पीएस. बेरमो, जिला बोकारो ने नामांकन प्रपत्र दाखिल किया है। मंगलवार को नामांकन प्रपत्र खरीदने वालों में पप्पू कुमार निषाद (भारतीय लोकमत राष्ट्रवादी पार्टी), सुनीता टुडू (निर्दलीय) तथा कमल प्रसाद (बहुजन समाज पार्टी) शामिल हैं। जबकि, इसके पूर्व सोमवार को नामांकन प्रपत्र खरीदने वालों में द्वारका प्रसाद, मथुरा प्रसाद महतो, कलावती देवी, मुरलीधर यादव, जय राम कुमार महतो, चंद्र प्रकाश चौधरी, रामेश्वर दुसाध, प्रमोद राम तथा उषा सिंह के नाम शामिल हैं।

युवक ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

बोकारो । जिले के गोमिया प्रखंड अंतर्गत महुआटांड़ थाना क्षेत्र के ग्राम दरहाबेडा टोला मानिक डीह निवासी सिरश करमाली 45 वर्ष ने फांसी लगाकर आत्म हत्या कर ली। जानकारी के अनुसार बीती रात में किसी बात को लेकर परिवार के साथ विवाद हुआ था। वह घर में खाना खाने के बाद बाहर निकल गया था । रात में परिजन आस पास क्षेत्र में काफी खोज बिन किए । लेकिन वह नही मिला। सुबह परिजन के खोजबीन के क्रम में मनिकडीह के कुछ दूर स्थित तालाब के पास पेड़ पर लटका हुआ शव मिला। मृतक सिरश करमाली की पत्नी आंगनबाड़ी सेविका है। मृतक अपने पीछे पत्नी के अलावे चार पुत्र पुत्री छोड़ गया।

दो बाइक की टक्कर में युवक की मौत

बोकारो । जिले के चंदनकियारी प्रखंड अंतर्गत चंद्रा गांव निवासी मोतीलाल गोप की रविवार की देर रात सड़क दुर्घटना में घायल हो गया था। उसे आनन फानन में सदर अस्पताल ले जाया गया था, जहां से बेहतर इलाज के लिए रिम्स रेफर किया गया था। रिम्स में इलाज के दौरान मोतीलाल ने सोमवार की रात दम तोड़ दिया। इससे पहले मृतक की सड़क दुर्घटना का एक कथित वीडियो वायरल हुआ था। जिसमें दुर्घटना के बाद साबड़ा गांव के एक युवक द्वारा मारपीट करने की बात सामने आई है। मंगलवार की शाम शव पैतृक गांव पहुंचने पर काफी संख्या में लोग उनके आवास पर जुट गए। लोगों ने कथित युवक पर कार्रवाई की मांग को लेकर शव के साथ चंद्रा मोदीडीह जाने वाले सड़क को आंशिक रूप से जाम कर दिया। जाम की सूचना मिलने पर सियालजोरी थाना प्रभारी मनीष कुमार दल-बल के साथ पहुंचे व उचित कार्रवाई का आश्वासन दिया। इसके बाद जाम हटा।

डीवीसी सिविल के अवकाश प्राप्तकर्मी को दी गई विदाई

बोकारो थर्मल । बोकारो थर्मल डीवीसी सिविल कार्यालय स्थित भू-संपदा विभाग के कर्मी कार्तिक घोष को कार्यालय स्थित परिसर में समारोह आयोजित कर भावभीनी विदाई दी गई। अवकाश प्राप्त करनेवालें कर्मी को डीवीसी के डीजीएम सिविल विश्वमोहन गोस्वामी, प्रबंधक सिविल राहुल उरांव, प्रबंधक एचआर सुनील कुमार, भू-संपदाधिकारी अविनाश सिन्हा, पवन कुमार, कल्याणी कुमारी, ओएस एनुल हक अंसारी, बृज किशोर सिंह सहित सभी कर्मियों ने शॉल ओढ़ाकर,उपहार एवं स्मृति चिह्न देकर विदाई दी। मौके पर डीजीएम सिविल सहित उपरोक्त सभी अधिकारियों ने कार्तिक घोष के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए उनके बेहतर स्वास्थ्य एवं समाज में आगे के जीवन का योगदान को लेकर मंगलकामना की। मौके पर विभाग के रंजीत कुमार, आरपी केडिया, अरुण कुमार, विकास तिवारी, सुमन कुमार, रवि चक्रवर्ती, एस सिंह, कपिल, मो मनीरुद्दीन सहित सभी कर्मी मौजूद थे।

विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन के लिए ईएसएल ने कराई अंतर केंद्र क्विज प्रतियोगिता

- सीखने की प्रवृति और प्रतिभा के विकास में प्रतिस्पर्द्धा महत्वपूर्ण : आशीष

संवाददाता

बोकारो । वेदांता समूह की अग्रणी एकीकृत इस्पात उत्पादक कंपनी ईएसएल स्टील लिमिटेड ने सामाजिक और सामुदायिक विकास के प्रति अपनी कटिबद्धता की कड़ी में मंगलवार को अंतर केंद्र क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया। विद्यार्थियों के ज्ञानार्जन के उद्देश्य से आयोजित इस कार्यक्रम में विभिन्न ईएसएल स्टील लिमिटेड के प्रोजेक्ट प्रेरणा केंद्रों (ट्यूटोरियल और ड्राइंग) एवं एक्सेल 30 क्लासेज जैसे शैक्षिक हस्तक्षेप कार्यक्रमों में नामांकित लोगों ने बतौर प्रतिभागी भाग लिया। प्रतियोगिता का आयोजन कंपनी ने अपने कार्यान्वयन भागीदार सार्थक सस्टेनेबल डेवलपमेंट फाउंडेशन के साथ किया। प्रतियोगिता में छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों और स्थानीय गणमान्य व्यक्तियों सहित 100 से अधिक लोग शामिल हुए। मोइन अंसारी, प्रिंसिपल, एमजेएम स्कूल, बिजुलिया सहित गणमान्यजनों में मनोज तिवारी, पूर्व मुखिया, चंदाहा पंचायत और संटू रॉय, उपाध्यक्ष, किसान युवा मोर्चा ने आयोजन की सराहना की।

इस अवसर पर ईएसएल स्टील लिमिटेड के सीएसआर, ईआर और पीआर प्रमुख आशीष रंजन ने कहा कि ईएसएल स्टील लिमिटेड हमेशा अपने संयंत्र के आसपास के समुदायों के समग्र विकास और खुशी पर ध्यान केंद्रित करता है। हम अपने छात्रों के बीच रचनात्मकता और अभिव्यक्ति के लिए एक मंच प्रदान करने का प्रयास करते हैं। इस तरह की पहल प्रतिभा को आगे बढ़ाती है, टीम निर्माण प्रयासों को प्रोत्साहित करती है और एक जीवंत सीखने के माहौल को बढ़ावा देती है जो शिक्षा से परे है।

पूरी प्रतियोगिता सीएसआर के उपप्रमुख राकेश मिश्रा की देखरेख में हुई। मिश्रा ने कहा कि जो कठिन प्रश्नों या चुनौतीपूर्ण परिदृश्यों से प्रतियोगियों के आत्मविश्वास को सराहनीय बताया। कहा कि ऐसे और भी आयोजन करते रहेंगे, जिससे बच्चों के विकास में मदद मिलेगी। ग्रुप ए (प्रेरणा ट्यूटोरियल्स (5 टीमें)) में पहला स्थान प्रेरणा ट्यूटोरियल्स, मोदीडीह ने हासिल किया। दूसरा स्थान प्रेरणा ड्राइंग सेंटर, चंदाहा ने और तीसरा स्थान प्रेरणा ट्यूटोरियल्स, कुमाटांड़ ने पाया। ग्रुप बी में (प्रेरणा केंद्र (5 टीमें); प्रथम प्रेरणा केंद्र, चंदाहा; दूसरा स्थान प्रेरणा केंद्र, सियालजोरी, तीसरा स्थान प्रेरणा केंद्र, योगीडीह का रहा। जबकि ग्रुप सी में (वेदांता ईएसएल एक्सेल 30 सेंटर (5 टीमें) - टीम 1 जीती।

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ती उत्पादों की मांग

पहलाद सबनानी

भारत में आज भी लगभग 60 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है एवं अपने जीवन यापन के लिए मुख्य रूप से कृषि क्षेत्र पर ही आश्रित रहती है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में लगातार किये जा रहे विकास कार्यों के चलते इन क्षेत्रों में विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत व्यय की जाने वाली राशि में अतुलनीय वृद्धि दर्ज हुई है। इससे, ग्रामीण क्षेत्रों में भी रोजगार के नए अवसर निर्मित होने लगे हैं एवं ग्रामीण क्षेत्र से शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन कुछ कम हुआ है। विशेष रूप से कोरोना महामारी के खंडकाल में शहरों से ग्रामीण इलाकों की ओर शिफ्ट हुए नागरिकों में से अधिकतर नागरिक अब ग्रामीण क्षेत्रों में ही बस गए हैं एवं अपने विशेष कौशल का लाभ ग्रामीण क्षेत्रों में नागरिकों को प्रदान कर रहे हैं।

हाल ही में जारी किए गए कुछ सर्वे प्रतिवेदनों के अनुसार, भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोग की एक नई कहानी लिखी जा रही है क्योंकि अब विभिन्न उत्पादों की मांग ग्रामीण क्षेत्रों में तेजी से बढ़ती दिखाई दे रही है। उपभोक्ता वस्तुओं एवं ऑटो निर्माता कम्पनियों द्वारा प्रदान की गई जानकारी के अनुसार, भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में हाल ही के समय में उपभोग की जाने वाली विभिन्न वस्तुओं एवं दोपहिया एवं चार पहिया वाहनों (ट्रैक्टर सहित) की मांग में तेजी दिखाई दे रही है, जो कि वर्ष 2023 में लगातार कम बनी रही थी। यह संभवतः रबी फसल के सफल होने के चलते भी सम्भव हो रहा है।

उक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए भारतीय रिजर्व बैंक ने भी हाल ही में सम्पन्न अपनी द्विमासिक मोनेटरी पॉलिसी की बैठक में रेपो दर में किसी भी प्रकार की वृद्धि नहीं की है, ताकि बाजार, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के बाजार में, उत्पादों की मांग विपरीत रूप से प्रभावित नहीं हो, ताकि इससे अंततः वित्तीय वर्ष 2024-25 में देश के आर्थिक विकास की दर भी अच्छी बनी रहे।

भारत में पिछले कुछ समय से ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न उत्पादों की मांग, शहरी क्षेत्रों में उपलब्ध मांग की तुलना में कम ही बनी रही है। परंतु, वित्तीय वर्ष 2023-24 की तृतीय तिमाही के बाद से इसमें कुछ परिवर्तन दिखाई दिया है एवं अब ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादों की मांग में तेजी दिखाई देने लगी है। यह तथ्य विकास के कुछ अन्य सूचकांकों से भी उभरकर सामने आ रहा है। जनवरी-फरवरी 2024 माह में दोपहिया वाहनों की बिक्री में, पिछले वर्ष इसी अवधि के दौरान की बिक्री की तुलना में, 30.3 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल की गई है। वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान दोपहिया वाहनों की बिक्री में 9.3 प्रतिशत की वृद्धि दर रही है, जो हाल ही के कुछ वर्षों में अधिकतम वृद्धि दर मानी जा रही है। दोपहिया वाहनों की बिक्री ग्रामीण इलाकों (लगभग 10 प्रतिशत) में शहरी इलाकों (लगभग 7 प्रतिशत) की तुलना में अधिक रही है। महात्मा गांधी नरेगा योजना के अंतर्गत प्रदान किए जाने वाले रोजगार के अवसरों की मांग में भी फरवरी-मार्च 2024 माह के दौरान 9.8 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में निवासरत नागरिकों को रोजगार के अवसर अन्य क्षेत्रों में उपलब्ध हो रहे हैं। इसी प्रकार, ट्रैक्टर की बिक्री में भी जनवरी-फरवरी 2024 माह के दौरान 16.1 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है। वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान भारत में कुल 892,313 ट्रैक्टर की बिक्री हुई है जो पिछले वित्तीय वर्ष 2022-23 की तुलना में 7.5 प्रतिशत अधिक है। भारत के मौसम विभाग द्वारा जारी की गई भविष्यवाणी के अनुसार, वर्ष 2024 के मानसून मौसम के दौरान भारत में मानसून की बारिश के सामान्य से अधिक रहने की प्रबल सम्भावना है। इससे भारत के किसानों में हर्ष व्याप्त है क्योंकि मानसून के अच्छे होने से खरीफ की फसल के भी बहुत अच्छे रहने की सम्भावना बढ़ गई है। मौसम विभाग के सोचना है कि इस वर्ष अल नीनो के स्थान पर ला नीना का प्रभाव दिखाई देगा। अल नीनों के प्रभाव में देश में बारिश कम होती है एवं ला नीना के प्रभाव में देश में बारिश अधिक होती है। साथ ही, भारतीय किसान अब तिलहन, दलहन एवं बागवानी की फसलों की ओर भी आकर्षित होने लगे हैं। दालों, वनस्पति, फलों एवं सब्जियों के अधिक उत्पादन से किसानों की आय में वृद्धि दृष्टिगोचर है। केंद्र सरकार द्वारा विभिन्न खाद्य उत्पादों की बिक्री के लिए ई-पोर्टल के बनाए जाने के बाद से तो भारतीय किसान अपनी फसलों को वैश्विक स्तर पर सीधे ही बेच रहे हैं और अपने मुनाफे में वृद्धि दर्ज कर रहे हैं। भारतीय खाद्य पदार्थों की मांग अब वैश्विक स्तर पर भी होने लगी है एवं खाद्य पदार्थों के निर्यात में भी नित नए रिकार्ड बनाए जा रहे हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादों की मांग सामान्यतः अच्छे मानसून के पश्चात अच्छी फसल एवं विभिन्न सरकारों, केंद्र एवं राज्य सरकारों, द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में विकास कार्यों पर किए जा रहे खर्चों में बढ़ौतरी के चलते ही सम्भव होती है। केंद्र सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में लागू की गई विकास की विभिन्न योजनाओं पर व्यय में लगातार वर्ष दर वर्ष वृद्धि की जा रही है एवं इसके लिए केंद्रीय बजट में भी बढ़े हुए व्यय का प्रावधान प्रति वर्ष किया जा रहा है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर निर्मित हो रहे हैं एवं इन इलाकों में विभिन्न उत्पादों की मांग भी बढ़ती हुई दिखाई दे रही है।

नीलसन द्वारा किए गए एक सर्वे के यह बताया गया है कि जनवरी एवं फरवरी 2024 माह में भारत में विभिन्न उत्पादों की शहरी क्षेत्रों में मांग 1.5 प्रतिशत की दर से बढ़ी है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में मांग 2.5 प्रतिशत की दर से बढ़ी है। विशेष रूप से फरवरी 2024 के बाद से ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादों की मांग में वृद्धि लगातार बढ़ती दिखाई दे रही है। रबी की फसल के भी अच्छे रहने की सम्भावना बलवती हुई है जिसके कारण किसानों की मनोदशा भी सकारात्मक बन रही है और यह वित्तीय वर्ष 2024-25 में देश की आर्थिक वृद्धि दर को बलवती करने के मुख्य भूमिका निभाने जा रही है। आज देश की लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है यदि ग्रामीण क्षेत्रों में निवासरत नागरिकों की मनोवृत्ति सकारात्मक हो रही है तो निश्चित ही वित्तीय वर्ष 2024-25, आर्थिक विकास की दृष्टि से अतुलनीय परिणाम देने वाला वर्ष साबित होने जा रहा है।

(लेखक, आर्थिक मामलों के विशेषज्ञ हैं।)

ममता दीदी के नीचे गिरने की हद

डॉ. मयंक चतुर्वेदी

इसे आप पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी की निकृष्टता की हद मान सकते हैं कि वह केंद्रीय एजेंसियों पर भरोसा छोड़िए, उन पर पश्चिम बंगाल में आकर हथियार रखने तक के आरोप लगा रही हैं। आश्चर्य होता है यह जानकर कि वे कह रहीं हैं, ''जब्त की गई चीजें संभवतः उनके (सीबीआई) द्वारा एक कार में लाई गई होंगी''। अभी तक यह क्या कम था कि संदेशखाली के आरोपितों को ममता सरकार बचाती रही और हाईकोर्ट के निर्देश के बाद भी वह कई दिनों तक गिरफ्तार नहीं हो सके थे।

वस्तुतः वामपंथियों की क्रूरता से मुक्त होने की छटपटाहट और उसके लिए तमाम जतन करने वाली बंगाल की जनता ने कभी सपने में भी नहीं सोचा होगा कि जो उन्हें सुरक्षा और विकास का भरोसा दिला रही हैं, वह ममता दीदी भी भविष्य में सत्ता प्राप्त होते ही उन्हें प्रताड़ित करेंगी और समूचे बंगाल में एक ऐसा सिस्टम खड़ा करने में कामयाब हो जाएंगी जिसमें अपराधियों का ही बोल वाला सर्वत्र होगा। वहीं जो उनके विरोध में आवाज उठाएगा उसकी हमेशा के लिए साम, दाम, दंड,व भेद अपनाकर आवाज बंद कर दी जाएगी।

पश्चिम बंगाल सरकार शुरू से ही संदेशखाली के डॉन शाहजहां शेख पर मेहरबान दिखी है । पहले उसके गुनाह को नहीं माना, एफआईआर तक दर्ज करने से मना किया, जब एफआईआर दर्ज हुई तो गिरफ्तारी से बचाती रही। गिरफ्तारी हुई तो सीबीआई को सौंपने से मना कर रही थी। फिर जब न्यायालय की फटकार लगी तब कहीं जाकर संदेशखाली के मुख्य गुनहगार और उसके साथियों को ममता की पुलिस ने पकड़ा। संदेशखाली के आरोपी शाहजहां शेख पर केवल ईडी अधिकारियों की पिटाई करवाने का ही आरोप नहीं है बल्कि संदेशखाली में जमीन पर कब्जा करने और यौन उत्पीड़न के भी भयंकर आरोप लगे है। वाबजूद इसके आप ममता सरकार में शाहजहां का प्रभाव देखिए कि ज्यादातर मामलों में या तो केस की चार्जशीट उपलब्ध नहीं है या फिर शाहजहां के खिलाफ जांच लंबित है।

वास्तव में यह तथ्य सामने आने के बाद विश्वास ही नहीं होता कि कैसे कई मामले दर्ज होने के बावजूद प्रशासन ने अब तक शाहजहां के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की थी। शाहजहां पर तीन भाजपा समर्थकों की हत्या और बिजली कर्मचारियों की मारपीट समेत अन्य 43 मामले दर्ज हैं, इसके बावजूद शेख के प्रति ममता की हमदर्दी शुरू से ही यहां देखने लायक है।

अभी जो हुआ और जिस तरह के हथियार, बम इत्यादि आग्नेयास्त्र संदेशखाली के मुख्य आरोपी शाहजहां के सहयोगी रिश्तेदार अबू तालेब मोल्ला के यहां मिले उससे तो लगता है कि पूरा बंगाल ही संकट के साए में है। उसके घर के फर्श के नीचे बड़ी संख्या में फायर आर्म्स छिपाए गए थे। रोबॉट-स्निफर डॉग्स और मेटल डिटेक्टर की मदद से सीबीआई और एनएसजी के कमांडो ने संदेशखाली से सात हथियार बरामद किए, जिनमें से चार विदेशी आग्नेयास्त्र हैं। शेष देशी पिस्तौल हैं। 228 राउंड कारतूस मिले, बरामद सभी बम स्वदेशी हैं। यह तो एक तृणमूल कांग्रेस नेता के करीबी के यहां मिला है, यदि सभी के यहां ठीक से जांच हो जाए तो पता नहीं बारूद का कितना बड़ा जखीरा और आग्नेयास्त्र संपूर्ण पश्चिम बंगाल से बरामद होंगे । जिसे देखते हुए आज यहां हर व्यक्ति पर जीवन का संकट मंडरा रहा है। पता नहीं कब कौन, कहां शिकार हो जाए और कब बम की चपेट में आ जाए? ऐसे में कहना होगा कि लोकतंत्र की हत्या वास्तव में कहीं होते देखना है तो आप वर्तमान में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के राज में हिंसा ग्रस्त बंगाल को देख सकते हैं।

क्या यह पहली बार है जो बंगाल में हथियार बरामद हो रहे हैं? क्या पहले भी सीबीआई या अन्य किसी केंद्रीय जांच एजेंसी ने यहां आकर हथियार रख दिए थे? जो ममता दीदी खुलेआम मंच से कह रही हैं कि तृणमूल व राज्य सरकार को बदनाम करने के लिए बरामद वस्तुएं (हथियार) केंद्रीय एजेंसी सीबीआई के अधिकारियों द्वारा लाई हो सकती हैं। बंगाल में पटाखा भी फूटता है तो एनआईए, सीबीआई और एनएसजी जांच करने आ जाती है। ऐसा लगता है कि युद्ध चल रहा है।

वास्तव में ममता दीदी ऐसा बोलकर लोगों को भ्रमित कर देना चाहती हैं, साथ ही उनका विश्वास केंद्रीय एजेंसियों से पूरी तरह से उठा देना चाहती हैं। किंतु पश्चिम बंगाल की जनता को अपनी मुख्यमंत्री से पूछना चाहिए कि आखिर उनकी क्या मजबूरी है जो वे 2022 के भूपतिनगर विस्फोट मामले के आरोपितों को बचाती रही हैं। वह राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) के अधिकारियों को फंसाने की कोशिश करती क्यों नजर आती हैं? केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने इस घटना के बारे में बोला भी कि "वहां एक विस्फोट हुआ था। क्या ब्लास्ट के आरोपितों पर कार्रवाई जरूरी नहीं? लेकिन जब एनआईए अधिकारियों ने मामले की जांच शुरू की और उन पर हमला किया गया, तो मुख्यमंत्री केंद्रीय एजेंसी के अधिकारियों पर मामला दर्ज कर जांच अधिकारी को फंसाने का प्रयास कर रही हैं।"

जिस ब्लास्ट की जांच करने राष्ट्रीय जांच एजेंसी पहुंची थी उसे ममता बनर्जी ने पटाखे फोड़ने की घटना बताया। साथ ही एनआईए पर गंभीर आरोप लगते हुए अजीबो-गरीब टिपण्णी भी कर दी थी। ममता ने आरोप लगाया था कि पूर्व मेदिनीपुर जिले के भूपतिनगर इलाके में ग्रामीणों ने राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) के अधिकारियों पर हमला नहीं किया, बल्कि एनआईए के अधिकारियों ने उनपर (ग्रामीणों पर) हमला किया था । क्या ममता दीदी का यह बयान केंद्रीय जांच एजेंसी के संदर्भ में उचित ठहराया जा सकता है? इस घटना का पूरा संदर्भ यह है कि 2022 में भूपतिनगर में बम धमाका हुआ था जिसमें तीन लोगों की मौत हो गई थी। बाद में कोर्ट के आदेश पर घटना की जांच एनआईए को सौंप दी गई थी।

रामनवमी वाले दिन शोभा यात्राओं पर मुर्शिदाबाद के दो इलाकों में पथराव और आगजनी हुई थी। मुर्शिदाबाद में रामनवमी के दौरान हुए दंगों की एनआईए जांच की मांग को लेकर याचिका दायर की गई, ऐसे में जनता को ममता से पूछना ही चाहिए कि पश्चिम बंगाल में दूसरे चरण के मतदान से पहले राज्य के मुर्शिदाबाद इलाके में जारी हिंसा और अनियंत्रित घटनाओं को लेकर कलकत्ता हाई कोर्ट ने तीखी टिप्पणी क्यों की? क्यों हर साल राम नवमी के दिन भी शोभा यात्राओं को इस्लामपंथियों द्वारा टार्गेट किया जाता है?

दरअसल, यहां रामनवमी पर राज्य भर में गांव से लेकर शहरों और महानगरों में भव्य रामनवमी शोभायात्राओं का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में भी शोभायात्रा का आयोजन किया गया था, लेकिन जैसे ही रामभक्तों का जत्था मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र से गुजर रहा था तभी अचानक से मकानों की छतों से पत्थरों की बरसात होना शुरू हो गई। जिससे शोभायात्रा में शामिल कई लोग बुरी तरह से घायल हो गए। पथराव एक सोची समझी रणनीति के तहत किया गया था। जिससे रामभक्तों को संभलने का मौका तक नहीं मिला। कई जगह तो पत्थरों के साथ देशी बम भी राम भक्तों पर फेंके गए। जिसके वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हैं। इसलिए कलकत्ता उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश टीएस शिवगणनम को आखिर कहना ही पड़ा, "जहां लोग आठ घंटे तक शांति से अपना त्योहार नहीं मना सकते, वहां इस वक्त वोट देने की कोई जरूरत नहीं है।"

यहां भी ममता की हद यह है कि वह उलटा रामनवमी के मौके पर हुई हिंसा के लिए भाजपा को ही जिम्मेदार ठहरा रही है और कह रही हैं कि हिंसा उसी ने भड़काई थी। रामनवमी के कार्यक्रमों और शोभा यात्राओं को उपद्रवियों द्वारा इस साल निशाना बनाए जाने का यह क्या पहला मामला है ? आप देखेंगे, ममता के राज में हर साल इस तरह की घटनाएं घट रही हैं। पिछले साल भी जिहादियों द्वारा न केवल पत्थरबाजी की गई बल्कि आगजनी तक की घटनाओं को अंजाम दिया गया। इन घटनाओं में दर्जनों रामभक्तों के घायल हुए थे। जिसमें कि बांकुड़ा और हावड़ा में जमकर हुए उपद्रव देश भर में चर्चा के विषय रहे । बीरभूम नरसंहार को लेकर विपक्ष लगातार पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर हमलावर रहा है। यहां भाजपा को तो छोड़िए, कांग्रेस भी इस मुद्दे पर राज्य में ममता दीदी को लगातार घेरती आई है।

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता शहजाद पूनावाला सही कहते हैं कि आज यह देखकर बहुत दुख होता है कि प. बंगाल में ममता बनर्जी के राज में कानून व्यवस्था पूरी तरह से ध्वस्त हो चुकी है। आज टीएमसी का मतलब 'आतंकवाद, माफिया, भ्रष्टाचार' हो गया है। इस टीएमसी सरकार में बंगाल में कानून व्यवस्था हर दिन बिगड़ती जा रही है। पश्चिम बंगाल में भय का ऐसा माहौल बना हुआ है कि केंद्रीय एजेंसियों के अधिकारी भी सुरक्षित नहीं हैं तो फिर यहां 'मां माटी और मानुष' कैसे सुरक्षित होंगे?

देखा जाए तो आज इस तरह की अनेक घटनाएं हमारे सामने हैं जोकि पिछले दिनों में पश्चिम बंगाल में घटी हैं, लेकिन ममता दीदी उनकी जिम्मेदारी लेने के बजाय उलटे इसके लिए केंद्र की मोदी सरकार और राजनीतिक तौर पर भारतीय जनता पार्टी को जिम्मेदार ठहराकर बच निकलना चाहती हैं, लेकिन वे भूल जाती हैं कि जनता सब देख रही है, उनकी तुष्टिकरण की राजनीति अब और अधिक दिन चलनेवाली नहीं है। अच्छा हो ममता दीदी अपनी इस नकारात्मक सोच से बाहर निकलें ।

मुस्लिम बेटियां और 'शरीयत' की बेड़ियां

अधिवक्ता डॉ. निवेदिता शर्मा

देश में एक बार फिर शरीयत एक्ट पर बहस शुरू हो गई है। ये चर्चा इन दिनों इसलिए सामने आई, क्योंकि चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अगुवाई वाली बेंच के सामने केरल निवासी महिला ने अर्जी दाखिल की है। याचिकाकर्ता ने न्यायालय को बताया, वह एक अलग तरह की स्थिति में अपने को पाती है। क्योंकि भाई को डाउन सिंड्रोम बीमारी होने से वे असहाय हैं, किंतु उनकी देखभाल मेरे द्वारा ही हो रही है। अन्य सामाजिक दायित्व भी मैं बखूबी निभा ही रही हूं, किंतु शरीयत कानून "मुस्लिम पर्सनल लॉ (शरीयत) एप्लीकेशन एक्ट 1937" में पुत्री को बेटे से आधी संपत्ति मिलती है। इस स्थिति में पिता बेटी को एक तिहाई संपत्ति दे सकते हैं, शेष दो तिहाई उन्हें बेटे को देनी होगी। अब यदि भविष्य में भाई के साथ कोई परेशानी होती है, तो फिर भाई के हिस्से वाली संपत्ति पर पिता के भाइयों के परिवार का भी दावा बन जाएगा। उक्त महिला यहां अपने लिए न्याय चाहती है और हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम की तरह ही भाई के नहीं होने की स्थिति में या होते हुए भी बराबर से अपने लिए पैतृक संपत्ति में से हक चाहती है।

यहां कानून की दिक्कत यह है कि भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम 1925 की धारा-58 के तहत संपत्ति के बारे में घोषणा की जा सकती है, लेकिन मुस्लिम पर लागू नहीं है। पर्सनल लॉ कहता है कि मुस्लिम शख्स एक तिहाई से ज्यादा संपत्ति वसीयत के जरिये नहीं दे सकता है। इसके साथ ही वर्ममान में यह एक बड़ा प्रश्न भी सामने आ खड़ा हुआ है कि मुस्लिम परिवार में पैदा होने के पश्चात भी यदि कोई इस्लाम को नहीं मानते तो क्या उन पर भी ये शरीयत एक्ट लागू होगा ? निश्चित तौर पर इस प्रश्न का उत्तर देश के एक बहुत बड़े वर्ग को चाहिए जो पैदा तो इस्लाम में हुआ है, किंतु उसकी आस्था कहीं भी इस मजहब के प्रति नहीं है।

इसके साथ ही यहां हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम 1956 के साथ तुलना करने पर एक बात ओर समझ आती है कि पुत्री को समानता का अधिकार देने का नियम भले ही इसके माध्यम से भारत में जन्में सभी मत, पंथ, विचारधाराओं को एक साथ मिल गया था, किंतु फिर भी पुरुष सत्तात्मक समाज व्यवस्था में कुछ रास्ते सहूलियतों के ऐसे अवश्य थे, जहां एक बहन की तुलना में भाई अधिक लाभ की स्थिति में देखा जा रहा था! किंतु इसमें भी समय के साथ सुधार हुआ । 2005 में महिला हिंदू उत्तराधिकार (संशोधन) अधिनियम आया। पहले के कानून में बेटी को पैतृक आवास में रहने का अधिकार था। परंतु अब जन्म से ही बेटी को एक समान उत्तराधिकारी बना दिया गया। जैसे बेटे का हक वैसे ही अब बेटी का भी हक तय कर दिया गया। सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट तौर पर यह निर्देश दिए हैं कि बिना वसीयत के उत्तराधिकार की स्थिति में भी हिंदू महिला बराबर की हकदार है। लेकिन रास्ता फिर भी आसान नहीं था।

वर्ष 2011 में गंडूरी कोटेश्वरम्मा पिता चक्री वेंकटस्वामी का मामला प्रकाश में आया, जिसकी तत्कालीन समय में बहुत चर्चा रही । इस केस को आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय ने खारिज कर दिया था यह कहकर कि बेटी और बेटों को बराबर का अधिकार है। फिर उपरोक्त फैसले के विरुद्ध उच्चतम न्यायालय में गंडूरी कोटेश्वरम्मा की तरफ से याचिका दायर की गई। इस याचिका पर अक्टूबर 2011 में न्यायमूर्ति आरएम लोढ़ा और जगदीश सिंह खेहर का निर्णय आया, जिसमें कहा गया, हिंदू उत्तराधिकार (संशोधन) अधिनियम 2005 के तहत बेटियां अन्य पुरुष सहोदरों के बराबर का अधिकार रखती हैं। 2005 के अधिनियम की नई धारा 6 में बेटी और बेटों को बराबर का अधिकार है। सिर्फ अधिकार ही नहीं, बराबरी का उत्तरदायित्व भी निभाना पड़ेगा। साथ ही इस निर्णय में यह भी कहा गया कि यदि बेटियों को बेटों के बराबर उत्तराधिकार का अधिकार नहीं दिया जाता है तो यह संविधान के द्वारा दिए गए समानता के मौलिक अधिकारों का भी हनन होगा। बेटियों को पिता की संपत्ति में हक नहीं देना एक ओर समानता के मौलिक अधिकार का हनन है तो दूसरी ओर यह सामाजिक न्याय की भावना के भी विरुद्ध है।

निष्कर्ष यह है कि जो हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम 1956 में लागू हुआ, उसमें भी कुछ खामियां चिह्नित की गईं और उन्हें समय के साथ 2005 में दूर किया गया। फिर भी जो थोड़े बहुत भ्रम थे, उन्हें अक्टूबर 2011 में न्यायमूर्ति आरएम लोढ़ा और जगदीश सिंह खेहर के महिलाओं के हक में आए निर्णय ने दूर कर दिया था। लेकिन यह समानता का अधिकार मुस्लिम बेटी या महिला होने पर उसे आज तक नहीं मिल सका है। जिसे वास्तविक रूप से पाना उसका संवैधानिक अधिकार है; जैसा कि इस गंडूरी कोटेश्वरम्मा केस में न्यायालय के 2011 के निर्णय में प्रत्येक महिला को पुरुष के बराबर संपत्ति में से अधिकार देना अनिवार्य करार दिया है । यहां केरल निवासी महिला का मामला भी कुछ इसी प्रकार का है, जिसे अपने लिए मुस्लिम होने पर संविधानिक के स्तर पर न्याय चाहिए और जो अपने ऊपर शरीयत कानून "मुस्लिम पर्सनल लॉ (शरीयत) एप्लीकेशन एक्ट 1937" का दबाव नहीं चाहती है।

यहां हम सभी जानते हैं कि मुस्लिम में शरीयत एक्ट 1937 के तहत उत्तराधिकार संबंधित विवाद का निपटारा होता है। मसलन किसी शख्स की मौत हो जाए तो उसकी संपत्ति में उनके बेटे, बेटी, विधवा और माता पिता सबका हिस्सा वर्णित किया गया है। बेटे से आधी संपत्ति बेटी को देने का प्रावधान है। पति की मौत के बाद विधवा को संपत्ति का छठवां हिस्सा दिया जाता है। अगर बेटियां ही हैं तो बेटियों को तिहाई हिस्सा ही मिलेगा। मुस्लिम शख्स वसीयत भी अपनी संपत्ति का एक तिहाई ही कर सकता है। बाकी दो तिहाई संपत्ति की वसीयत नहीं कर सकता है। वह उसके परिवार के अन्य लोगों के हिस्से में चली जाती है।

यहां यह आंकड़ा भी देखने और उस पर विचार करने योग्य है; वर्तमान में भारत की दूसरी सबसे बड़ी जनसंख्या मुसलमानों की है। भले ही अल्पसंख्यक की स्पष्ट परिभाषा संविधान में नहीं होने से भारत का मुसलमान आज अल्पसंख्यक होने का सबसे अधिक 97 प्रतिशत से भी ज्यादा लाभ लेता है, फिर भी 2024 में भारत में मुस्लिम आबादी अनुमानित 20 करोड़ के लगभग हो चुकी है। आप स्वयं विचार करें कि इस बीस करोड़ की आधी आबादी यानी कि 10 करोड़ महिलाएं आज भी समानता के न्याय से भारत में इसलिए पूरी तरह से वंचित हैं, क्योंकि शरीयत कानून ऐसा करने की इजाजत नहीं देता है ।

यह कितनी बड़ी जनसंख्या है, उसका अनुमान इससे भी लगता है कि वर्तमान में जो मुंबई है, उस जैसे पांच शहर की कुल आबादी को भारत में अपने साथ न्याय की दरकार है। देश की राजधानी दिल्ली की कुल जनसंख्या के नजरिए से भी देखें तो देश में पांच दिल्ली बसा दी जाएं और उसमें सिर्फ मुस्लिम महिलाएं हों, तब सोचिए उनके साथ यह अन्याय कितने वक्त से हो रहा है ? और इस तरह से देश में स्वाधीनता के पहले एवं आजादी के बाद भी लगातार इस जनसंख्या का शोषण पिछले 78 सालों से बदस्तूर जारी है।

यह खुशी की बात है कि वर्तमान में ही सही इस विषय पर विचार तो शुरू हुआ। अब यदि कोई मुस्लिम परिवार में पैदा होने के बावजूद इस्लाम में यकीन नहीं रखता तो उस पर शरीयत कानून लागू नहीं होना चाहिए, बल्कि भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम लागू होना चाहिए । इस मांग पर सुनवाई करने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने अपनी सहमति दे दी है। उच्चतम न्यायालय की चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अगुवाई वाली बेंच ने केंद्र और केरल सरकार को नोटिस जारी करते हुए कहा भी है कि यह एक अहम मुद्दा है, ऐसे में प्रतिवादी इस मामले में जवाब दाखिल करें। साथ ही कोर्ट को सहयोग के लिए अटॉर्नी जनरल से भी कह दिया है। सुनवाई के लिए जुलाई के दूसरे हफ्ते की तारीख भी तय कर दी है। इसमें कहना यही है कि इस तरह की याचिकाएं देश में संविधान के अध्याय 18, राज्य की नीति के निदेशक तत्व के अनुच्छेद 44 के अंतर्गत सभी नागरिकों के लिए एक ''समान सिविल सहिंता'' लागू करने की मांग करती हैं। जिससे विवाह, उत्तराधिकार और इस प्रकार के सामाजिक प्रकृति की बातों को धार्मिक स्वतंत्रता से बाहर रखकर और उन्हें विधि बनाकर विनियमित किया जा सके।

(लेखिका, मध्य प्रदेश बाल संरक्षण आयोग की सदस्य हैं।)

राशिफलः 01 मई, 2024

मेष : मन प्रसन्न बना रहेगा। अचल संपत्ति की खरीद अथवा कृषि उद्यम में रुचि पैदा होगी। परिवार के साथ मनोरांजनिक स्थल की यात्रा होगी। आपसी प्रेम-भाव में बढ़ोतरी होगी। भविष्य की योजनाओं पर विचार-विमर्श होगा। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। सभी का सहयोग मिलेगा। शुभांक-1-3-5

वृष : दिन-भर का माहौल आडंबरपूर्ण और व्ययकारी होगा। वरिष्ठ लोगों से कहासुनी के कारण तनाव पैदा हो सकता है। संयमित भाषा का इस्तेमाल करें। कुछ कार्यक्रम बदलने होंगे। आवेग में आकर किये गए कार्यों का मलाल, अवसाद रहेगा। उतावलेपन से बचें। प्रेमभाव बढ़ेगा। शुभांक-3-6-9

मिथुन : घर के सदस्य मदद करेंगे और साथ ही आर्थिक बदहाली से भी मुक्ति मिलने लगेगी। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। मनोरथ सिद्धि का योग है। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। सभा-सोसायटी में सम्मान मिलेगा। पद-प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। शुभांक-5-6-7

कर्क : सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। प्रेमभाव बढ़ेगा। आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। स्त्री-संतान पक्ष का सहयोग मिलेगा। शुभांक-3-5-7

सिंह : कुछ कार्य भी सिद्ध होंगे। व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा। स्वविवेक से कार्य करें। दुर्लभ स्वप्न साकार होंगे। शुभांक-3-5-7

कन्या : आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध हो रहे हैं। कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते हैं। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। स्त्री पक्ष का सहयोग मिलेगा। शुभांक-2-5-7

तुला : व्यापार में स्थिति नरम रहेगी। शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। आय-व्यय समान रहेगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। मेल-मिलाप से कोशिश सफल होगी। शुभांक-2-4-6

वृश्चिक : कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सवेरे ही निपटा लें, क्योंकि आगे कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। स्वास्थ्य का पाया भी कमजोर बना रहेगा। शुभांक-3-6-9

धनु : यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार रहेंगे। अपने काम को प्राथमिकता से करें। चिंतनीय वातावरण से मुक्ति मिलेगी। शुभांक-4-6-8

मकर : मेहमानों का आगमन होगा। राजकीय कार्यों से लाभ। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। नैतिक दायरे में रहें। मेहमानों का आगमन होगा। पुरानी गलती का पश्चाताप होगा। विद्यार्थियों को लाभ। दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। वाहन चालन में सावधानी बरतें। आय के अच्छे योग बनेंगे। सफलता मिलेगी। शुभांक-3-6-8

कुंभ : परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। ज्ञानार्जन का वातावरण बनेगा। शुभांक-3-6-8

मीन : अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। मित्रों से सावधान रहें तो ज्यादा उत्तम है। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। इच्छित कार्य सफल होंगे। सुख-आनंद कारक समय है। शुभांक-2-4-6

व्यंग्य

हाय-हाय यह गर्मी

कुछ कहावतें समय के साथ बदलती रहती हैं। जैसे तीन तिगाड़ा काम बिगाड़ा। लेकिन पंखे की तीन पत्तियाँ तीन तिगाड़ा तो कतई नहीं हो सकती। गर्मी के दिनों में वो न हो तो आदमी का बिगाड़ा हो सकता है। जिस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु, महेश की तिकड़ी दुनिया चलाती है, ठीक उसी तरह पंखे की तीन पत्तियाँ मेरे घर को। पंखे की स्पीड पाँच की हो तो कहना ही क्या, बिखरे हुए अखबार के पन्नों की तरह सब कुछ फड़फड़ाने लगता है। पंखा पुराण में नाना प्रकार की कष्ट लीलाएँ वर्णित हैं। पंखा न चले तो बच्चे घर से भाग जाते हैं। सब्जियाँ खराब हो जाती हैं। गर्मी में जिन कपड़ों को धोने के लिए पांच मिनट लगते हैं, वही पसीने से तर-बतर होने के लिए दो मिनट। कभी-कभी तो लगता है कि मैगी नूडल्स ने दो मिनट का फार्मूला यहीं से चुराया है। पंखे के बंद होते मैं इस तरह छटपटाने लगता हूँ जैसे बिन पानी मछली। वैसे मछलियाँ बरसात के दिनों में भी सुरक्षित नहीं होती। भूख के आगे सभी अभागे हैं। कभी-कभी सोचता हूँ यह पंखा न होता तो क्या होता? न मेरी शादी होती, न मेरे बच्चे। या यूँ कहिए कि दुनिया ही नहीं होती। बहरहाल, पंखे के बंद होते ही, सारा-का-सारा माहौल अचानक से पसीने का पानीपत बन जाता है। कभी आप बगलों को खुजलाते हैं तो कभी सिर। कभी पीठ को खुजलाते हैं तो कभी कुछ।

ऐसे समय में हमें अपने शरीर पर बड़ा पछतावा होता है। भगवान से प्रार्थना करते दिखाई देते हैं कि यह गर्मी का मौसम क्यों बनाया? बनाया तो बनाया बदन खुजलाने के लिए और दो-चार हाथ क्यों नहीं दिए? सच कहें तो पंखे का बंद होना समस्त मानवजाति के लिए अभिशाप बन जाता है। पंखा है तो हवा है। हवा है तो वाह-वाह है। नहीं तो आह-आह है। गर्मी के दिनों में वैसे तो सब कुछ जल्दी पकता है, लेकिन दिमाग का नंबर पहले आता है। इन दिनों में सरल वाक्यों का प्रयोग श्रेष्ठ माना जाता है। संयुक्त अथवा मिश्रित वाक्यों से खोपड़िया कुछ ज्यादा ही पक जाती है। ऐसे में मनुष्य गलतियों का पुतला वाली उक्ति को चरितार्थ करने में अपना सब कुछ लगा देता है। यही कारण है कि जब कोई किसी के घर जाता है तो उसके लिए टेबल वाला तीन पत्तियों का झेलनदार तीव्र गति में दौड़ा दिया जाता है। उसके बाद पानी, शरबत और आवभगत की अन्य सामग्री दी जाती है। गर्मी की दुपहरिया में जब सूर्य सिर को भूमध्य रेखा समझ शून्य डिग्री पर प्रयाण करता है तब सुनने, समझने और बोलने की क्षमता समाप्त हो जाती है। डैड डेड की तरह, मम्मी मिस्र की मम्मी की तरह दिखाई देने लगते हैं। गर्मी के दिनों में बिजली चली जाए तो सबके मुँह से एक ही वाक्य निकलता है– बिजली कब आएगी? गर्मी के दिनों में बिजली को छुप्पम-छुपाई खेलने का बड़ा शौक होता है। आदमी जब तक जीने की आस न छोड़ दे तब तक उसके दर्शन नहीं होते। थोड़ी सी हवा भी कहीं से आ जाए तो मानो ऐसा लगता है जैसे पंखा चल पड़ा। अब भला पंखा सरकार थोड़े न है कि भेड़-बकरियों के वोट से चल पड़ेगा। इसके लिए बिजली की आवश्यकता पड़ती है, जो कि इस समय मंहगाई को छोड़कर कहीं दूसरी जगह दिखाई नहीं देती। मैं तो कहूँ महंगाई की बिजली से सपनों का पंखा चलाइए और इस जिंदगी से छुटकारा पाइए।

एक मई को क्यों मनाया जाता है मजदूर दिवस?

अंतरराष्ट्रीय मज़दूर दिवस हर साल 1 मई को मनाया जाता है. जिसे लेबर डे, मई दिवस, श्रमिक दिवस आदि नामों से भी जाना जाता है. किसी भी देश के विकास में वहां के मज़दूर का सबसे बड़ा योगदान होता है. ऐसे में यह दिवस उनके हक की लड़ाई उनके प्रति सम्मान भाव और उनके अधिकारों के आवाज को बुलंद करने का प्रतीक है. 19वीं शताब्दी में संयुक्त राज्य अमेरिका में श्रमिक संघ आंदोलन में मजदूर दिवस की उत्पत्ति हुई थी. 1889 में मार्क्सवादी इंटरनेशनल सोशलिस्ट कांग्रेस ने एक महान अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शन के लिए एक प्रस्ताव अपनाया. जिसमें उन्होंने मांग की कि श्रमिकों को दिन में 8 घंटे से अधिक काम नहीं करना चाहिए. इसके बाद यह एक वार्षिक आयोजन बन गया और 1 मई को मजदूर दिवस के रूप में मनाया जाने लगा. 14 जुलाई, 1889 को यूरोप में सोशलिस्ट पार्टियों की पहली अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा घोषित किए जाने के बाद मई दिवस पहली बार 1 मई, 1890 को मनाया गया था. यूरोप में 1 मई को ऐतिहासिक रूप से ग्रामीण पारंपरिक किसान त्योहारों से जोड़ा गया है, लेकिन बाद में मई दिवस आधुनिक श्रमिक आंदोलन से जुड़ गया.

कैसे हुई मजदूर दिवस की शुरुआत?

वहीं, भारत के चेन्नई में 1 मई 1923 में लेबर किसान पार्टी ऑफ हिंदुस्तान की अध्यक्षता में मजदूर दिवस मनाने की परंपरा की शुरूआत हुई. इस दौरान कई संगठनों व सोशल पार्टियों का समर्थन मिला. जिसका नेतृत्व वामपंथी कर रहे थे. आपको बता दें कि पहली बार इसी दौरान मजदूरों के लिए लाल रंग का झंडा वजूद में आया था. जो मजदूरों पर हो रहे अत्याचार व शोषण के खिलाफ आवाज उठाने का प्रतिक है.

क्या है इस दिन का उद्देश्य?

- मजदूर दिवस को मनाने का उद्देश्य लोगों को श्रमिकों और उनकी समस्याओं के प्रति जागरूक करना है.
- इस दिवस का मुख्य उद्देश्य है मजदूरों की उपलब्धियों का सम्मान करना. उनके योगदान की चर्चा करना.
- उनके अधिकारों के लिए आवाज बुलंद करना.
- मजदूर संगठन को मजबूत करना आदि.

रोजाना सिर्फ 8 घंटे काम की मांग का वो आंदोलन जिसकी याद में मनता है मजदूर दिवस

हर साल 1 मई को मजदूर दिवस मनाया जाता है. इसे अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस, लेबर डे, मई डे, कामगार दिवस, या श्रम दिवस भी कहा जाता है. इस दिन को मनाने का मकसद मज़दूरों और श्रमिकों को सम्मान देना, उनकी उपलब्धियों का जश्न मनाना, उनके योगदान को याद करना, और उनके अधिकारों के लिए आवाज़ बुलंद करना है. मज़दूर दिवस की शुरुआत अमेरिका में 135 साल पहले हुई थी. 1889 में अंतरराष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में तय हुआ था कि हर मज़दूर से दिन में सिर्फ़ 8 घंटे काम लिया जाएगा और 1 मई को छुट्टी दी जाएगी. भारत में मज़दूर दिवस की शुरुआत 1 मई, 1923 को लेबर किसान पार्टी ऑफ़ हिन्दुस्तान ने मद्रास में की थी. इस दिन पहली बार लाल झंडे को मज़दूर दिवस का प्रतीक माना गया था.

बीते तीन दशकों के वैश्वीकरण ने रोज़गार की परिभाषा भी बदली है और स्वरूप भी. काम करने के तौर तरीक़ों में काफ़ी बदलाव आए हैं, कोरोना संक्रमण के दौरान दुनिया भर में रिमोट वर्किंग का रूप भी देखने को मिला. मज़दूर और मज़दूरी दोनों के अर्थ समय के साथ बदले हैं, ऐसे में 132 साल से चली आ रही मई दिवस की परंपरा के आज क्या मायने हैं?

क्या आज के दौर में भी मज़दूर दिवस की ज़रूरत है?

दुनिया में सबसे ज़्यादा बंधुआ मज़दूर भारत में हैं. विश्व गुलामी सूचकांक की रिपोर्ट के मुताबिक साल 2016 में भारत में 80 लाख लोग आधुनिक गुलामी में जी रहे थे. यानी औसतन एक हज़ार भारतीयों में से छह को अपने काम का मेहनताना नहीं मिल रहा था. हालांकि भारत सरकार ने इन आँकड़ों पर सवाल उठाए हैं.

गुडवीव इंटरनेशनल नाम की एक संस्था के साल 2020 के सर्वे के मुताबिक महामारी की वजह से मजदूरों के कर्ज़ में फंसने का जोख़िम तीन गुना बढ़ गया है. अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) के अनुसार साल 2016 में दुनिया भर में 4 करोड़ से ज़्यादा लोग बंधुआ मज़दूरी का शिकार थे. अनुमानों के मुताबिक इनमें से 71 फ़ीसदी महिलाएं थीं. इस साल जारी हुई विश्व असमानता रिपोर्ट की मानें तो भारत में श्रम से होने वाली कुल कमाई का सिर्फ 18 प्रतिशत हिस्सा ही महिलाओं के हाथ आता है. सरकार के अपने आँकड़े बताते हैं कि देश के कुल श्रमिकों में से 93 फीसदी असंगठित क्षेत्र में काम करते हैं. यानी उनके लिए न्यूनतम वेतन जैसी सामाजिक सुरक्षा के हक पाना और मुश्किल है. अखिल भारतीय खेत मज़दूर यूनियन के संयुक्त सचिव विक्रम सिंह कहते हैं, देश में करोड़ों शहरी असंगठित मज़दूर और ग्रामीण खेत मज़दूर है जो किसी भी कानून के दायरे में नहीं आते. आज तक हम खेत मज़दूरों के लिए एक केंद्रीय क़ानून नहीं बना पाए हैं. इसलिए मज़दूर दिवस न केवल अधिक प्रासंगिक हो गया है बल्कि हमारी पीढ़ी की ज़िम्मेदारी बन गया है.

दुनिया भर की समाजवादी और श्रमिक पार्टियों के संगठन द्वितीय अंतरराष्ट्रीय ने साल 1889 के पेरिस सम्मेलन में मज़दूरों के हक़ों की आवाज़ बुलंद करने के लिए 1 मई का दिन चुना था. ये पश्चिम में औद्योगीकरण का दौर था और मज़दूरों से सूर्योदय से सूर्यास्त तक काम करने की उम्मीद की जाती थी. अक्टूबर 1884 में अमेरिका और कनाडा की ट्रेड यूनियनों के संगठन फेडरेशन ऑफ ऑर्गेनाइज्ड ट्रेड्स एंड लेबर यूनियन ने तय किया कि मज़दूर 1 मई, 1886 के बाद रोज़ाना 8 घंटे से ज़्यादा काम नहीं करेंगे. जब वो दिन आया तो अमेरिका के अलग-अलग शहरों में लाखों श्रमिक हड़ताल पर चले गए. इन विरोध प्रदर्शनों के केंद्र में शिकागो था. यहां दो दिन तक हड़ताल शांतिप्रिय तरीके से चली. लेकिन तीन मई की शाम को मैकॉर्मिक हार्वेस्टिंग मशीन कंपनी के बाहर भड़की हिंसा में दो मज़दूर पुलिस फायरिंग में मारे गए. अगले दिन फिर दोनों पक्षों के बीच झड़पें हुईं जिनमें 7 पुलिसवालों समेत 12 लोगों को जान गँवानी पड़ी. इसी वजह से द्वितीय अंतरराष्ट्रीय ने 1 मई का दिन चुना था. शुरुआत में दुनिया भर के मज़दूरों से सिर्फ रोज़ाना 8 घंटे काम की मांग को लेकर एकजुट होने के लिए कहा गया था. इसके बाद 1889 से लेकर 1890 तक अलग अलग देशों में मज़दूरों ने प्रदर्शन किए. ब्रिटेन के हाइड पार्क में 1890 की पहली मई को तीन लाख मज़दूरों 8 घंटे काम की मांग को लेकर सड़कों पर उतरे. जैसे-जैसे वक्त बीता ये दिन श्रमिकों के बाकी अधिकारों की तरफ ध्यान दिलाने का भी एक मौका बन गया.

आज मज़दूर दिवस है. इस दिन को दुनिया भर के कामकाजी लोगों के सम्मान के तौर पर मनाया जाता है.

दिलचस्प बात ये है कि आरएसएस से संबंध रखने वाला भारतीय मज़दूर संगठन (बीएमएस) पिछले कुछ सालों से 1 मई की जगह विश्वकर्मा जयंती यानी 17 सितंबर को राष्ट्रीय मज़दूर दिवस घोषित किए जाने की मांग कर रहा है. संगठन के पूर्व अध्यक्ष सीके सजी नारायणन आरएसएस से जुड़ी मैगज़ीन ऑर्गेनाइज़र के लिए एक लेख में दलील देते हैं, बीएमएस ने औद्योगिक रिश्तों में कम्युनिस्टों की वर्ग-शत्रुता के बजाए औद्योगिक परिवारका सिद्धांत सामने रखा है. हम विश्वकर्मा जैसी हस्तियों से मिलने वाले त्याग- तपस्या- बलिदान और कर्म ही पूजा है की सीख पर चलते हैं. मई दिवस एक पश्चिमी सिद्धांत है और भारत के श्रमिकों को उस तरह प्रेरणा नहीं देता जैसी उन्हें विश्वकर्मा जयंती से मिल सकती है. लेकिन सिंधु की नज़र में बीएमएस की मांग मज़दूरों के सरोकारों को धार्मिक मान्यताओं का रंग देने की कोशिश है. वो कहती हैं, मज़दूरों का शोषण सिर्फ भारत में नहीं बल्कि पूरी दुनिया में हो रहा है. विश्वकर्मा संघर्ष का प्रतीक नहीं हैं. मई दिवस का ताल्लुक कामगार वर्ग के संघर्ष से है.

दुनिया के 34 साल बाद भारत में शुरू हुआ मजदूर दिवस

1 मई को दुनिया भर में मजदूर दिवस या श्रमिक दिवस मनाया जा रहा है. भारत में मई दिवस और इंटरनेशनल लेबर डे को कामगारों के बीच जश्न के साथ मनाए जाने की शुरुआत दुनिया के करीब 34 साल बाद हुई. मजदूरों का सम्मान, उनके काम के घंटे, मेहनताने वगैरह को लेकर एक व्यवस्था के लिए आंदोलन शुरू होने की याद में इस दिन को दुनिया के कई देशों और अपने देश के कई राज्यों में सार्वजनिक अवकाश रहता है. मजूदरों के लिए समर्पित उस आंदोलन को शिकागो आंदोलन के नाम से भी जानते हैं.

आज से 138 साल पहले दुनिया भर में मजदूरों के लिए काम करने की कोई समय-सीमा तय नहीं थी. उनके लिए कोई नियम-कायदे ही नहीं होते थे. मजदूरों से लगातार 15 घंटे या उससे भी ज्यादा समय तक काम लिया जाता था. उनकी छुट्टियों को लेकर भी कोई व्यवस्था नहीं थी. इसकी वजह से साल 1886 में 1 मई को अमेरिका के शिकागो शहर में एकजुट होकर हजारों मजदूरों ने बड़ा प्रदर्शन किया था. उनकी मांग थी कि मजदूरी का समय 8 घंटे निर्धारित किया जाए. इसके अलावा हफ्ते में एक दिन छुट्टी दी जाए.

रंग लाया था शिकागो का मजदूर आंदोलन

आज लगभग पूरी दुनिया में वैधानिक रूप से कर्मचारियों, मजदूरों या कामगारों के लिए एक दिन में काम के 8 घंटे तय हैं. इसकी सबसे बड़ी वजह शिकागो आंदोलन को ही माना जाता है. हफ्ते में एक दिन छुट्टी की शुरुआत भी इस आंदोलन की देन ही मानी जाती है. धीरे-धीरे पूरी दुनिया में 1 मई को मजदूर दिवस या कामगार दिवस के रूप में मनाने की शुरुआत हो गई. दुनिया के कई देशों में 1 मई को राष्ट्रीय अवकाश के तौर पर मनाया जाता है.

आंदोलन में 4 मजदूर बलिदान- 100 घायल

अमेरिका में शिकागो आंदोलन तेज होने लगा और आंदोलनकारियों ने 4 मई, 1886 को स्थानीय पुलिस को निशाना बनाकर बम फेंक दिया. पुलिस की जवाबी गोलीबारी में 4 मजदूरों की मौत हो गई. साथ ही करीब 100 मजदूर पुलिस की गोली से घायल हो गए. इसके बावजूद उनका आंदोलन चलता रहा. इसके तीन साल बाद 1889 में पेरिस में हुए इंटरनेशनल सोशलिस्ट कॉन्फ्रेंस में बलिदान देने वाले मजदूरों की याद में 1 मई के दिन को समर्पित करने का फैसला किया गया था.

भारत में कब हुई मजदूर दिवस की शुरुआत

भारत में लेबर किसान पार्टी ऑफ हिंदुस्तान ने चेन्नई (तत्कालीन मद्रास) में 1 मई 1923 को मजदूर दिवस मनाने की शुरुआत की थी. वामपंथी और सोशलिस्ट पार्टियां तब इसका नेतृत्व कर रही थीं. उसी दिन पहली बार मजदूरों की एकजुटता और संघर्ष के प्रतीक के तौर पर लाल रंग का झंडा इस्तेमाल किया गया था. भारत में तब से हर साल यह दिन मनाया जाता है. इस दिन खास तौर पर मजदूरों के हक और अधिकारों के लिए आवाज बुलंद करने और उनके शोषण को रोकने को लेकर आवाज बुलंद की जाती है.

शिकागो दंगे ने बदल दिए थे मजदूरों के काम करने के नियम

देश-दुनिया में मजदूर दिवस हर साल 1 मई को मनाया जाता है। इस दिन को मनाने का मुख्य उद्देश्य मजदूरों और श्रमिकों की उपलब्धियों का सम्मान करना और उनके द्वारा किये गए योगदान को याद करना है। इसके साथ ही मजदूरों के हक और अधिकारों के लिए आवाज बुलंद करना और शोषण को रोकना है। मजदूरों और श्रमिकों को सम्मान देना होता है, इसे लेबर डे और श्रमिक दिवस भी कहा जाता है। मजदूरों के इस आंदोलन की शुरुआत 1 मई 1886 को अमेरिका में हुई थी। इस आंदोलन में अमेरिका के मजदूर अपनी मांगों को लेकर सड़क पर आ गए थे, दरअसल उस समय मजदूरों से 15-15 घंटे काम लिया जाता था। इस आंदोलन के बीच मजदूरों पर पुलिस ने गोली चला दी जिसमें मजदूरों की जान चली गई, वहीं 100 से ज्यादा श्रमिक घायल हो गए। इस आंदोलन के तीन साल बाद 1889 में अंतरराष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन की बैठक हुई। जिसमे तय हुआ कि हर मजदूर से केवल दिन के 8 घंटे ही काम लिया जाएगा। इस सम्मेलन में ही 1 मई को मजदूर दिवस मनाने का प्रस्ताव रखा गया, साथ ही हर साल 1 मई को छुट्टी देने का भी फैसला लिया गया। अमेरिका में श्रमिकों के आठ घंटे काम करने के निमय के बाद कई देशों में इस नियम को लागू किया गया।

भारत में लेबर डे की शुरुआत कब हुई

अमेरिका में भले ही 1 मई 1889 को मजदूर दिवस मनाने का प्रस्ताव आ गया हो। लेकिन भारत में ये आया करीब 34 साल बाद। वहीं भारत में मजदूर दिवस मनाने की शुरुआत 1 मई 1923 को चेन्नई से हुई। लेबर किसान पार्टी ऑफ हिंदुस्तान की अध्यक्षता में ये फैसला किया गया। इस बैठक को कई सारे संगठन और सोशल पार्टी का समर्थन मिला। जो मजदूरों पर हो रहे अत्याचारों और शोषण के खिलाफ आवाज उठा रहे थे।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम दिवस से जुड़े रोचक तथ्य

- विश्व भर में विभिन्न इंडस्ट्री और क्षेत्रों में कार्य करने वाले श्रमिकों और कामगारों के योगदानों को सम्मानित करने के लिए इंटरनेशनल लेबर डे या विश्व मजदूर दिवस मनाया जाता है।
- 14 जुलाई 1889 को यूरोप में सोशलिस्ट पार्टियों की पहली अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा घोषित किए जाने के बाद, मई दिवस पहली बार 1 मई 1890 को मनाया गया था।
- श्रम दिवस या मजदूर दिवस 80 से अधिक देशों में मनाया जाता है। विश्व में 80 से अधिक देशों (भारत सहित) में मजदूर दिवस पर छुट्टी रहती है।
- अंतर्राष्ट्रीय श्रम दिवस के बावजूद इसकी उत्पत्ति शिकागो में हेमार्केट मामले की स्मृति में हुई, कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका में श्रम दिवस सितंबर में पहले सोमवार को मनाया जाता है न कि 01 मई को।
- महाराष्ट्र दिवस और गुजरात दिवस भी 01 मई को मनाया जाता है।
- भारत में पहला मई दिवस 1923 में द लेबर किसान पार्टी ऑफ हिंदुस्तान द्वारा चेन्नई (तब मद्रास) में मनाया गया था।
- लेबर किसान पार्टी ऑफ हिंदुस्तान द्वारा भारत में पहली बार मई दिवस समारोह का आयोजन किया गया था।
- भारत में मई दिवस या मजदूर दिवस या अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस, तमिल में उझोपलार नाल और मराठी में कामगार दिवस जैसे कई नामों से जाना जाता है।
- संयुक्त राज्य अमेरिका से 10 साल पहले 1872 में कनाडा ने मजदूर दिवस मनाया था।
- पेरिस में श्रमिकों के लिए हर साल 1 मई को अंतर्राष्ट्रीय एकता श्रमिक दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की गई थी।
- इस दिन खास तौर पर मजदूरों के हक और अधिकारों के लिए आवाज बुलंद करने और उनके शोषण को रोकने को लेकर आवाज बुलंद की जाती है।

भागलपुर में स्कॉर्पियो पर हाईवा पलटा, छह की मौत, तीन घायल

प्रतिनिधि, घोघा (भागलपुर)।

बरातियों का इंतजार कर रहे कन्या पक्ष को मिली दुर्घटना में मौत की खबर

बारात आने की खुशी में कन्या पक्ष के लोग दौड़-दौड़ कर तैयारी कर रहे थे कि अचानक रात 11 बजे के बाद बारातियों के भयानक सड़क दुर्घटना के शिकार होने की खबर आयी। सोमवार की रात श्रीमतपुर के स्व विजय रविदास व भोलिया देवी की चौथी पुत्री लवली कुमारी की शादी के लिए बारातियों का इंतजार हो रहा था। लड़की के बड़े भाई अशोक दास के पास मोबाइल पर खबर आयी है कि बारात की एक गाड़ी पर गिट्टी लदा 14 चक्का का हाइवा पलट गयी है। वह अपने एक मित्र के साथ तुरंत घटनास्थल की ओर बाइक से रवाना हुए। वहां की स्थिति देख उनके होश उड़ गये। घटनास्थल पर छह बरातियों की मौत व तीन लोगों के भयानक रूप से चोटग्रस्त होते देख कर वह परेशान हो गये। उसने संतोष की सांस ली कि दूल्हा सहित उसके परिवार के लोग सुरक्षित हैं, लेकिन उसकी हिम्मत बारात को अपने घर चलने की कहने की नहीं हुई।

घोघा क्षेत्र के एनएच-80 स्थित आमापुर के पास सोमवार की देर रात हुए सड़क हादसे में अलग -परिवार के छह लोगों ने अपनी जान गंवा दी। घटना के लिए एनएच-80 की दुर्दशा, या फिर उसके लिए काम करने वाले जनप्रतिनिधि, या निर्माण एजेंसी, या फिर हाइवा चालक या फिर बारातियों को लेकर जा रहे कार चालक जिम्मेदार थे, इसका खुलासा तो जांच के बाद ही होगा। वरीय अधिकारियों से लेकर कनीय पदाधिकारियों तक लगातार चक्कर लगाते दिखे। हालांकि लोगों के बीच यह भी चर्चा थी कि रात 12 बजे हुए हादसे के 10 घंटे बाद पुलिस-प्रशासनिक अधिकारियों की नींद टूटी और वे लोग मृतक के परिजनों को सांत्वना देने पहुंचे। पोस्टमार्टम हाउस में एक तरफ जहां मृतकों के शव का पोस्टमार्टम हो रहा था, तो दूसरी तरफ बाहर खड़े परिजन विलाप कर कोई दुल्हन को तो कोई बारात ले जाने वाले लोगों को कोसते दिखे।

सभी जुबान पर बस एक ही बात थी, मौत ने जबरदस्ती बुलाया : मृत स्कॉर्पियो चालक सत्यम मंडल के बड़े भाई ने बताया कि सत्यम किसी और की गाड़ी चलाता था। सोमवार की रात बगल के गांव के एक कार मालिक ने उसे फोन कर कहा कि वह काफी थका हुआ है और एक बारात जाने के लिए उसकी गाड़ी की बुकिंग है। सत्यम ने पहले तो मना किया पर कार मालिक द्वारा काफी जोर देने के बाद सत्यम तैयार हो गया। इधर, 17 वर्षीय संचित कुमार जो कि इंटर का छात्र था, उसकी मां ने बताया कि उनका बेटा कभी भी किसी बरात में नहीं जाता था। गांव में हो रही शादी को लेकर बरात जाने के लिए उसने अकेले ही जाने की जिद की थी। दोनों ही मृतकों के परिजनों का कहना था कि मौत ने ही दोनों को बुला लिया।

पहले पत्नी व बेटे को, अब अपनी बेटियों को बढ़ा रहे आगे : नीतीश

सहरसा/मधेपुरा/झंझारपुर। सीएम नीतीश कुमार ने मंगलवार को सहरसा, मधेपुरा व झंझारपुर में चुनावी सभा व रोड शो कर कर राजद पर तीखा प्रहार किया। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि कोई इतना बच्चा पैदा करता है क्या। पहले तो नौ-नौ बच्चे पैदा किया। फिर अपने परिवार को आगे बढ़ाने के लिए काम किया। पहले अपनी पत्नी व बेटे को आगे बढ़ाया फिर अभी अपनी बेटियों को आगे बढ़ाने के लिए काम कर रहे हैं। वो सिर्फ अपने परिवार के बारे में सोचते हैं।

मेरे लिए पूरा बिहार ही मेरा परिवार है। न मैंने अपने परिवार को आगे बढ़ाया और न ही प्रधानमंत्री जी ने अपने परिवार को आगे बढ़ाया। सीएम ने भाषण के दौरान पूर्व डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव पर भी कटाक्ष किया। उन्होंने कहा कि जब वह साथ थे तो गड़बड़ करते थे। इसलिए उनको हटा दिये। 2008 से 2020 तक 8 लाख लोगों को नौकरी हमने दी है।

बिहार में बहुत काम हुआ है : झंझारपुर में सीएम ने बिहार सरकार द्वारा किये गये कार्यों से लोगों से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि समय बदल गया है। घर घर बिजली, नल का जल, शौचालय पहुंच गया है। बहुत काम हुआ है। पर याद कीजिये 2005 से पूर्व लोग शाम ढलते ही घर से बाहर नहीं निकल पाते थे। शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, पुल, पुलिया, बिजली की स्थिति खराब थी। एनडीए की सरकार बनते ही इन समस्याओं को दूर किया गया। सीएम ने कहा कि आज हर पंचायत में उच्च माध्यमिक विद्यालय की स्थापना की गयी है। लड़के और लड़कियों को साइकिल, पोशाक योजना का लाभ देकर शिक्षा के प्रति प्रेरित किया गया। महिला शिक्षा में जागरूकता का ही प्रतिफल है की प्रजनन दर 4.3 से घटकर आज 2.9 पर आ गयी है। इसे 2% पर लाने का लक्ष्य है।

महिला सशक्तीकरण के लिए किया काम : सीएम ने कहा कि महिला सशक्तीकरण की दिशा में कई कदम उठाये गये। 2006 के पंचायत चुनाव में तथा 2007 के नगर निकाय चुनाव में महिलाओं के लिए 50% आरक्षण का प्रावधान किया गया। इस निर्णय का दूसरे राज्यों ने भी अनुकरण किया। वर्ष 2013 में पुलिस सेवा में महिलाओं के लिए 35% आरक्षण सुनिश्चित किया। आज 30 हजार बेटियां पुलिस विभाग में काम कर रही हैं। स्वयं सहायता समूह को संवारने का काम इनके द्वारा किया गया। इस समूह को जीविका दीदी का नाम दिया। आज 1 करोड़ 3 लाख महिलाएं जीविका से जुड़कर अपना रोजगार कर रही हैं।

संक्षिप्त

अगलगी में 70 से अधिक घर जल कर राख

भितहा (पचं)। स्थानीय प्रखंड के परसौना पंचायत के मुराडीह टांड़ टोला तथा हथुअहवा पंचायत के हथुअहवा बीन टोली एवं हरिजन बस्ती में मंगलवार की दोपहर आग की कहर से लगभग 70 घर जल गए। जहां लाखों की संपत्ति जल कर खाक हो गयी है। इस अग्निकांड में आधा दर्जन मवेशी जलने की खबर है। आग दोपहर परसौना के मुराडीह में लगी। जहां पछिया हवा तेज होने के कारण आग पल भर में पूरे गांव में फैल गया। चारों तरफ ग्रामीणों की चीख पुकार मचने लगी। वहीं घटना की सूचना मिलते ही सीओ मनोरंजन शुक्ला, बीडीओ मनोज कुमार पड़ित, आरओ अमरेंद्र कुमार, थानाध्यक्ष राकेश कुमार सहित पुलिस के जवानों ने मौके पर पहुंच कर ग्रामीणों की सहयोग से किसी तरह आग पर काबू पाया।

पति ने पत्नी की गला दबा कर की हत्या

मधुबन (पूचं)। गड़हिया ओपी क्षेत्र के कोठिया गांव में पारिवारिक कलह में पति ने अपनी 30 वर्षीय पत्नी के साथ मारपीट करने बाद गला दबाकर हत्या कर दी है। घटना के बाद आरोपी पति घर छोड़कर फरार है। वहीं पुलिस मृतका के ससुर को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। मृतका कोठिया गांव के विजय राय की पत्नी कांति देवी ऊर्फ कालांती देवी है। घटना की सूचना पर मंगलवार को पुलिस पहुंचकर मृतका का शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिये सदर अस्पताल मोतिहारी भेज दिया है।

पति को आजीवन कारावास, 50 हजार का जुर्माना

बक्सर। सिमरी थाना कांड संख्या 186/ 2023 में अभियुक्त संजय चौधरी, ज्ञांती देवी व पुष्पा देवी को न्यायालय ने दहेज हत्या के मामले में मंगलवार को सजा सुनायी। न्यायालय ने पति को आजीवन कारावास की सजा सुनाई साथ ही 50 हजार रुपए का अर्थ दंड भी लगाया। वही दोनों गौतनियों को सात-सात वर्षों के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई एवं 20-20 हजार रुपए का अर्थ दंड भी लगाया गया। जिसे नहीं देने पर छह माह अतिरिक्त जेल में बिताने होंगे। उक्त मामले में अभियोजन पक्ष की ओर से अपर लोक अभियोजक विनोद कुमार सिंह व अधिवक्ता श्रीमन नारायण ओझा ने बहस में हिस्सा लिया।

आरोपी को गिरफ्तार करने गयी पुलिस पर हमला

चनपटिया (पचं)। अभियुक्त की गिरफ्तारी के लिए गई चनपटिया पुलिस के साथ झड़प मामले में पांच नामजद समेत 15-20 लोगो पर एफआईआर दर्ज की गई है। नामजद अभियुक्तों में भाजपा के नगर अध्यक्ष अमित का भी नाम है। वहीं मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए पुलिस ने एक आरोपित को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। जानकारी के अनुसार नगर के वार्ड नंबर 06 निवासी मोहन साह का लड़का श्याम कुमार पर पहले से एफआईआर दर्ज था। उसे गिरफ्तार करने के लिए एसआई अच्युतानंद सिंह के नेतृत्व में पुलिस बल वार्ड नंबर 06 गांधीनगर गई हुई थी।

सीवान सीट से अवध बिहारी, हिना शहाब समेत तीन लोगों ने भरा पर्चा

प्रतिनिधि, सीवान।

लोकसभा चुनाव को लेकर नामांकन के दूसरे दिन मंगलवार को सीवान सीट से तीन लोगों ने अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। जिसमें इंडिया गठबंधन से राजद प्रत्याशी के रूप में पूर्व विधानसभा अध्यक्ष अवध बिहारी चौधरी ने अपना नामांकन पत्र दाखिल किया।वहीं पूर्व सांसद शहाबुद्दीन की पत्नी हिना शहाब व राघवेन्द्र कुमार खरवार ने निर्दलीय नामांकन पत्र दाखिल किया। कलेक्ट्रेट परिसर में अपने प्रस्तावकों के साथ सबसे पहले नामांकन पत्र दाखिल करने के लिये दिवंगत पूर्व सांसद मो।शहाबुद्दीन की पत्नी हिना शहाब पहुंची। उन्होंने जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिलाधिकारी मुकुल कुमार गुप्ता के समक्ष 2 सेट में निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में नामांकन पत्र दाखिल किया।

राजद प्रत्याशी पूर्व विधानसभा अध्यक्ष अवध बिहारी चौधरी समर्थकों की भारी भीड़ के साथ नामांकन करने पहुंचे।इसमें गठबन्धन के विधायक,विधान पार्षद ,इंडी गठबंधन के सभी दलों के जिलाध्यक्ष प्रमुख रुप से शामिल रहे। सभी लोग पहले गांधी मैदान पहुंचे।यहां राजद नेता तेजस्वी यादव की सभा के बाद जुलूस के शक्ल में सभी कार्यकर्ता नामांकन स्थल की ओर रवाना हुए।

गुरुवार को रूडी करेंगे सारण से नामांकन

छपरा (सारण)। पूर्व केंद्रीय मंत्री सह निवर्तमान सांसद राजीव प्रताप रूडी सारण लोकसभा क्षेत्र से एनडीए समर्थित भाजपा उम्मीदवार के रूप में गुरूवार दो मई को अपना नामांकन पत्र दाखिल करेंगे। तय कार्यक्रम के अनुसार रुडी सुबह 10।30 बजे कलेक्ट्रेट पहुंचेंगे और नामांकन पत्र दाखिल करेंगेण् इसके बाद राजेन्द्र स्टेडियम छपरा जायेंगे जहां नामांकन समारोह सह आशीर्वाद सभा का आयोजन किया गया है। नामांकन कार्यक्रम में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा, समेत जदयू व हम के कई नेता शामिल होंगे।

इंडी गठबंधन हताशा में संविधान बदलने की बात उठा रहे

पटना। भाजपा के वरिष्ठ नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद ने कांग्रेस और राजद के संविधान और आरक्षण समाप्त करने के बयान पर दोनों पार्टियों को घेरा। कहा कि दोनों पार्टियों के नेता हताशा में ऐसा बयान दे रहे है।उनके पास कोई मुद्दा नहीं है, इस कारण वे ऐसा बोल रहे हैं।मंगलवार को श्री प्रसाद पटना मीडिया सेंटर में प्रेस कांफ्रेंस को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आज कांग्रेस और राजद के लोग कह रहे हैं कि भाजपा सरकार में आयी तो संविधान बदल देगी। मोदी जी के नेतृत्व में एनडीए की सरकार 10 साल से है, लेकिन अभी तक संविधान छुआ तक नहीं। एनडीए ने ओबीसी संवैधानिक कमीशन को संवैधानिक दायित्व दिया।

यह चुनाव संविधान बचाने की लड़ाई : तेजस्वी यादव

प्रतिनिधि, सीवान

पूर्व उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने कहा कि लोकसभा चुनाव में इस बार संविधान बचाने की लड़ाई है। नौजवानों के लिए रोजगार का सवाल है। हमने अपने 17 माह के कार्यकाल में पांच लाख नौजवानों को रोजगार दिया। इसके अलावा तीन लाख रोजगार के लिए पद सृजित कराया, लेकिन आगे इस सरकार ने रोजगार के लिए कोई काम नहीं किया।

तेजस्वी यादव मंगलवार को सीवान से राजद के उम्मीदवार अवध बिहारी चौधरी के नामांकन के पूर्व उनके समर्थन में गांधी मैदान में सभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने गाना गाकर पीएम पर तंज कसते हुए कहा कि तुम तो धोखेबाज हो, वादा करके भूल जाते हो, रोज रोज मोदी जी जो झूठ बोलोगे, जनता जब रूठ जायेगी तो हाथ मलोगे। कहा कि मोदी जी ने जिंदगी भर झूठ ही बोला है। अब सरकार बदलेगी। बिहार से ही परिवर्तन की लहर देश में चलेगी। उन्होंने कहा कि बेंगलुरु में मोदी जी के एमपी ने ढाई हजार महिलाओं का शोषण किया और मोदी जी नारा लगाते हैं कि बेटी बचाओ और बेटी पढ़ाओ। तेजस्वी यादव ने कहा कि गरीबों के हक की रक्षा व देश बचाने की लड़ाई है।

पेज एक का शेष

पतंजलि आयुर्वेद और...

यह आदेश इस महीने की शुरुआत में ड्रग्स एंड मैजिक रेमेडीज (आपत्तिजनक विज्ञापन) अधिनियम और ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक एक्ट के उल्लंघन में फर्म द्वारा इन उत्पादों के भ्रामक विज्ञापनों की शिकायतों का संज्ञान लेते हुए जारी किया गया था। प्राधिकरण ने अपने आदेश में कहा कि कंपनी ने उत्पादों के संबंध में उससे मांगी गई जानकारी उपलब्ध नहीं कराई और अपने बचाव में उसने जो स्पष्टीकरण दिया वह संतोषजनक नहीं था।

आदेश के अनुसार, दिव्य फार्मेसी के जिन उत्पादों के विनिर्माण लाइसेंस को निलंबित कर दिया गया है, उनमें दृष्टि आई ड्रॉप, स्वासारि गोल्ड, स्वासारि वटी, ब्रोंकोम, स्वासारि प्रवाही, स्वासारि अवलेह, मुक्ता वटी एक्स्ट्रा पावर, लिपिडोम, बीपी ग्रिट, मधुग्रिट, मधुनाशिनी वटी एक्स्ट्रा पावर, लिवामृत एडवांस, लिवोग्रिट और आईग्रिट गोल्ड शामिल हैं।

झारखंड में सभी...

झारखंड से हम प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को 13 फूल (भाजपा) और एक फल (आजसू) भेंट करेंगे। भजनलाल ने कहा कि राजस्थान में 2014 के लोकसभा चुनाव में 25 सीट आए थे, 2019 में भी 25 सीट दिया और इस बार भी 25 में से 25 सीट भाजपा को मिलने वाली है। उन्होंने कहा कि धनबाद के युवाओं, महिलाओं और आम लोगों में जिस तरह का उत्साह दिख रहा है उससे यह साफ हो गया है कि झारखंड में भी सभी 14 सीटें एनडीए गठबंधन को मिलने जा रहा है। साथ ही कहा कि आने वाला समय आपका है। आगामी विधानसभा चुनाव में भी झारखंड में भाजपा एनडीए गठबंधन की सरकार भारी बहुमत के साथ आएगी। भजनलाल ने कहा कि भाजपा हमेशा देश की संस्कृति और विचार को लेकर के चलती है। उन्होंने इंडी गठबंधन पर जोरदार प्रहार करते हुए कहा कि ये लोग कहते थे, कश्मीर से धारा 370 हटी तो खून की नदियां बह जाएंगी लेकिन वहां तो एक कंकड़ भी नहीं चला। साथ ही कहा कि वे लोग भगवान राम को काल्पनिक बताते थे। रामलला के प्राण-प्रतिष्ठा की तारीख पूछते थे। हमने रामलला के प्राण-प्रतिष्ठा की तारीख भी बताई और उन्हें निमंत्रण भी भेजा। भजनलाल ने कहा कि राजस्थान में इंडी गठबंधन वालों ने जिसे भी टिकट दिया उसने चुनाव लड़ने से ही मना कर दिया। कई ने तो कहा कि मैने तो टिकट मांगी ही नहीं। ऐसे में कई सीटों पर प्रत्याशी बदलना पड़ा। उन्होंने कहा कि जब आप राम के ही नहीं है तो राम आपमें कैसे रहेंगे।

लड़कियों ने फिर...

लड़कियां लड़कों से आगे : बता दें कि, हर साल की तरह इस साल भी जैक बोर्ड रिजल्ट में लड़कियों ने बाजी मारी ली है। जैक झारखंड बोर्ड कक्षा 12वीं की परीक्षा में 86.78 प्रतिशत लड़कियां पास हुई हैं, वहीं लड़कों का पास प्रतिशत 84.26 प्रतिशत रहा है। जैक 12वीं रिजल्ट 2024 में तीनों स्ट्रीम में लड़कियों ने टॉप किया है। जैक इंटर आर्ट्स में जीनत परवीन, साइंस में स्नेहा उर्सलाइन कान्वेंट स्कूल रांची की छात्रा और कॉमर्स की टॉपर प्रतिभा शाहा उर्सलाइन इंटर कॉलेज रांची की छात्रा हैं।

निलेन्दु कुमार सिंह...

सिंह के पास मेगा ओपन कास्ट खदानों में काम करने, एफएमसी परियोजनाओं के संचालन, साइडिंग शुरू करने, नई खनन प्रौद्योगिकियों को अपनाने और उच्चतम क्षमता वाले एचईएमएम के साथ काम करने का व्यापक अनुभव है।

निलेन्दु कुमार सिंह ने खनन तकनीकों में अनुभव प्राप्त करने के लिए 1997 में ऑस्ट्रेलिया का भी दौरा किया है। उन्हें खेल और पेंटिंग में गहरी रुचि है। उन्होंने अखिल भारतीय विश्वविद्यालय स्तर पर वॉलीबॉल का प्रतिनिधित्व किया है। कोयला उद्योग में तीन दशकों से अधिक के अनुभव के धनी सिंह विभिन्न नई खनन पद्धतियों की शुरुआत करने में और कंपनी के कामकाज में सुधार लाने में अपना अहम योगदान दिया है। इसके साथ-साथ विभिन्न श्रम संगठनों व कंपनी के हितधारकों को साथ लेकर कार्य करने का उन्हें कोयला उद्योग में विविध और दीर्धकालीन अनुभव प्राप्त है।

मोहब्बत की दुकान...

जब यहां के शक्तिशाली नेता थे दिल्ली से शासित, गन्ने का एफआरपी लगभग 200 रुपये प्रति क्विंटल था और आज, मोदी के कार्यकाल में, एफआरपी बढ़कर 350 रुपये प्रति क्विंटल हो गया है।"

इससे पहले, फरवरी में, केंद्रीय कैबिनेट ने सीजन 2024-25 (अक्टूबर-सितंबर) के लिए चीनी मिलों द्वारा देय गन्ने के लिए 'उचित और लाभकारी मूल्य' (एफआरपी) को मंजूरी दे दी थी। इस मंजूरी के साथ, चीनी मिलों को अब गन्ना उत्पादकों को 10.25 प्रतिशत की वसूली पर 340 रुपये प्रति क्विंटल की दर से एफआरपी का भुगतान करना होगा।

प्रधानमंत्री मोदी ने आरोप लगाया कि महाराष्ट्र में पिछली कांग्रेस सरकारों ने राज्य के किसानों के लिए केंद्र द्वारा आवंटित धन को लूट लिया। उन्होंने कहा, "पिछले वर्षों में, कांग्रेस (सरकारों) ने यहां के किसानों के लिए केंद्र सरकार द्वारा जो भी थोड़ा धन आवंटित किया था, उसे हड़प लिया। हालांकि, अब यह आपका बेटा है जो दिल्ली में बैठता है। हम यह सुनिश्चित करेंगे कि दिल्ली से आने वाला हर पैसा सीधे आपके खाते में जाए।"

"'विकसित भारत' के निर्माण में भूमिका को रेखांकित करते हुए, पीएम मोदी ने कहा, "आपके मोदी ने महिलाओं को सशक्त बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। पिछले 10 वर्षों में हजारों महिलाएं स्वयं सहायता समूहों में शामिल हुई हैं। गांवों के चल रहे विकास में तेजी से योगदान दे रहे हैं। हमने 1 करोड़ महिलाओं को लखपति दीदी बनाया है। देश में जल्द ही 3 करोड़ लखपति दीदी होंगी और यह मेरी गारंटी है!" बता दें कि, महाराष्ट्र की 11 सीटों पर तीसरे चरण में 7 मई को मतदान होगा। राज्य की 48 सीटों में से 13 सीटों पर पहले और दूसरे चरण में मतदान हुआ था।

जमशेदपुर लोस सीट...

शेखावत ने कहा कि देश की इकोनॉमी के प्रमुख केंद्र मुंबई, पुणे, चेन्नई जैसे शहरों और मंदिरों (अक्षरधाम वगैरह) पर आतंकी हमले होते थे। तत्कालीन सरकार बस सांत्वना देती थी या कड़ी निंदा करती थी। यूएन जाकर मदद की अपील करती थी। वर्ष 2014 में प्रचंड बहुमत से नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र में सरकार बनी। अब देश की अर्थव्यवस्था की गति तेज हुई। सीमाएं सुरक्षित हुईं। मोदी सरकार में केवल दो आतंकी हमले (उरी, पुलवामा) हुए और आतंकी ठिकानों को नष्ट कर बदला लिया गया। शेखावत ने भरोसा जताया कि विद्युतवरण महतो चार लाख से अधिक मतों से विजयी होंगे। भाजपा देश में 400 से अधिक सीट लाकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में तीसरी बार सरकार बनाएगी।

भाजपा सिर्फ सांसद बनाने को नहीं, देश को सशक्त बनाने को जनसहयोग लेती है: अर्जुन मुंडा : केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा ने कहा कि नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश आज जहां है, उससे सभी भारतीय गदगद हैं। हमने सिर्फ राम मंदिर नहीं बनाया, राम राज की कल्पना को भी साकार करने में लगे हैं। मिलकर विकसित, समृद्ध, मजबूत भारत बनाने में लगे हैं। हर भारतीय मजबूती से ना सिर्फ आगे बढ़े, बल्कि यह देश विश्व का भी नेतृत्व करे। ऐसे कई काम मोदीजी के नेतृत्व में हुए भी हैं। बीते 10 वर्षों में जिन उद्देश्यों, लक्ष्यों को लेकर आगे बढ़े, उनमें कई काम पूरे भी हुए हैं। पहले विपक्ष सिर्फ सरकार बनाने का काम करता था, देश बनाने का नहीं। भाजपा सिर्फ सांसद बनाने को नहीं, देश को सशक्त बनाने को जनसहयोग लेती है। जनजातीय कल्याण मंत्रालय और कृषि मंत्रालय के जरिए देश में जनजातीय समाज और किसानों की समृद्धि के लिए प्रयास हो रहे हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने केजरीवाल...

हम चाहते हैं कि आप (तैयार) रहें।''

अदालत में केजरीवाल का प्रतिनिधित्व कर रहे अभिषेक मनु सिंघवी ने इस बात पर जोर दिया कि ईडी को बदले की भावना से कार्रवाई नहीं करनी चाहिए और "उच्चतम स्तर की निष्पक्षता के साथ काम करना चाहिए।"सुप्रीम कोर्ट ने बयान दर्ज कराने के लिए बार-बार समन भेजने के बावजूद दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के ईडी के सामने पेश न होने पर सोमवार को सवाल उठाया और पूछा कि क्या वह अपना पक्ष दर्ज न करने के आधार पर उत्पाद शुल्क नीति घोटाले से संबंधित मनी लॉन्ड्रिंग मामले में गिरफ्तारी को चुनौती दे सकते हैं। न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता की पीठ ने केजरीवाल की ओर से पेश वरिष्ठ वकील अभिषेक सिंघवी से कई सवाल पूछे और पूछा कि आम आदमी पार्टी (आप) नेता ने निचली अदालत में जमानत याचिका क्यों नहीं दायर की। सिंघवी ने कहा, "यह कहने के लिए धन्यवाद। धारा 50 के बयानों को दर्ज न करना मुझे अपराध मानने के कारण गिरफ्तार करने का बचाव नहीं है।"

सिंघवी ने कहा, "मैं कह रहा हूं कि अन्य सामग्री भी मेरे अपराध को स्थापित नहीं करती है। ईडी मुझे गिरफ्तार करने के लिए मेरे घर आई थी। फिर ईडी मेरे घर पर धारा 50 के तहत मेरा बयान क्यों दर्ज नहीं कर सकती?" सिंघवी ने बताया कि 16 अप्रैल, 2023 को केजरीवाल मामले के सिलसिले में सीबीआई के सामने पेश हुए और सभी सवालों के जवाब दिए।

सिंघवी ने कहा, "आज, आप यह नहीं कह सकते कि हम आपको गिरफ्तार कर लेंगे, क्योंकि आप समन पर उपस्थित नहीं हुए। क्या आप कह सकते हैं कि चूंकि आपने सहयोग नहीं किया, इसलिए आपको गिरफ्तार कर लिया जाएगा? सिंघवी ने कहा, "असहयोग आपराधिकता या गिरफ्तारी का आधार नहीं हो सकता। इस अदालत ने पिछले साल माना था कि असहयोग पीएमएलए के तहत गिरफ्तारी का आधार नहीं हो सकता।"

सिंघवी ने कहा कि उन्होंने गिरफ्तारी को चुनौती दी है और अगर गिरफ्तारी को अवैध करार दिया जाता है, तो बाकी सभी चीजें चली जाती हैं। उन्होंने कहा, "मेरा मामला यह है कि गिरफ्तारी अवैध है। पीएमएलए की धारा 19 का दायरा बहुत व्यापक है, क्योंकि यह ईडी को किसी व्यक्ति को उसके पास मौजूद सामग्री के आधार पर गिरफ्तार करने का अधिकार देता है जो संदेह को उचित आधार प्रदान करता है कि किसी व्यक्ति ने कानून के तहत दंडनीय अपराध किया है।

छत्तीसगढ़ में सुरक्षाबलों...

गर्मी के समय में नक्सली सुरक्षाबलों को नुकसान पहुंचाने की कोशिश करते हैं। इसी को देखते हुए सुरक्षाबलों का ऑपरेशन चल रहा है।''

बता दें कि, 16 अप्रैल को कांकेर जिले में सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में 29 नक्सली मारे गए थे। पुलिस के मुताबिक, बस्तर क्षेत्र में सुरक्षाबलों के साथ अलग-अलग मुठभेड़ों में इस साल अब तक 88 नक्सली मारे गए हैं, जिसमें नारायणपुर और कांकेर सहित सात जिले शामिल हैं। सभी नक्सली वर्दीधारी हैं। घटनास्थल से बरामद एके-47 अत्याधुनिक हथियार से अंदाजा लगाया जा रहा है कि मुठभेड़ में मारे गए नक्सली माओवादी संगठन के बड़े कैडर में शामिल हो सकते हैं। फिलहाल, जवानों द्वारा नक्सलियों के शवों को लेकर जिला मुख्यालय पहुंचने के बाद ही उनकी शिनाख्त हो सकती है।

पानी लेने आया था बड़ा भाई छोटे ने पीट-पीट कर मार डाला

संवाददाता, भागलपुर

बढ़ती गर्मी में पानी की पैदा हो रही किल्लत के बीच हुए एक विवाद में पानी के बदले भाई ने भाई का ही खून बहा दिया। मामला भागलपुर जिला के हबीबपुर थाना क्षेत्र स्थित शाहजंगी मोहल्ले का है। शाहजंगी स्थित पुरानी महल के पीछे मोहल्ला में रहने वाले टोटो चालक मो कामिल उर्फ कामो (55) मंगलवार सुबह करीब 9 बजे हर दिन की तरह अपने पैतृक घर पर पानी लेने के गये थे। जहां पहुंचने पर उनके छोटे भाई मो लाल ने पानी लेने से मना कर दिया। इसी बात को लेकर शुरू हुआ विवाद मारपीट में तब्दील हो गया। इस दौरान छोटे भाई ने अपने बड़े भाई को लाठी-डंडे से पीटना शुरू कर दिया। इस बीच कामो की बेटी रोजी चीख-चीख कर मोहल्ले के लोगों से अपने पिता को बचाने के लिए मदद मांगती रही। पर कोई भी सामने नहीं आया। मो लाल अपने बड़े भाई को तब तक पीटा जब तक वह बेहोश नहीं हो गया। बेहोशी के हालत में करीब दो घंटे तक कामो ऐसे ही पड़ा रहा। जहां बेटी और पत्नी दोनों लोगों से उनके पिता को डॉक्टर के पास ले जाने के लिए गुहार लगाती रही। पर कोई सामने नहीं आया। इसी दौरान बाहर से काम कर लौटे पड़ोसी कलीम ने जब यह देखा तो उसने मोहल्ले के लोगों को धुतकारा और अपने भाई-भतीजों के साथ कामो को उठाकर इलाके में मौजूद एक निजी डॉक्टर के पास लेकर गये। जहां डॉक्टर ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

दोपहर करीब दो बजे हबीबपुर पुलिस को इस बात की सूचना मिली। जिसके बाद पुलिस जांच को पहुंची। जहां मृतक कामो की बेटी ने पुलिस को सारी बातों की जानकारी दी। पुलिस ने मामले में मृतक की

खुद को सरकारी अधिकारी बता कारोबारी से 2 करोड़ की धोखाधड़ी की

ठाणे । महाराष्ट्र में नवी मुंबई के 42 वर्षीय एक कारोबारी से खुद को सरकारी अधिकारी बताने वाले एक व्यक्ति ने 2 दो करोड़ रुपये की धोखाधड़ी की है। पुलिस ने आज यह जानकारी दी। नवी मुंबई में नेरुल निवासी पीड़ित को कोविड-19 महामारी के दौरान कारोबार में नुकसान हुआ था। नेरुल पुलिस थाने के एक अधिकारी ने बताया कि जनवरी 2021 में वह पड़ोसी मुंबई में पारेल निवासी आरोपी के संपर्क में आया जिसने खुद को केंद्र सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय में एक उच्च अधिकारी बताया। उन्होंने बताया कि आरोपी ने पीड़ित को यह दावा करते हुए कर्ज दिलाने का वादा किया कि उसकी एक बैंक के सीईओ से जान-पहचान है। उसने कर्ज के लिए एक संपत्ति गिरवी रखने का प्रस्ताव भी किया। पीड़ित ने उसे बताया कि उसके पास गिरवी रखने के लिए संपत्ति नहीं है। इसके बाद आरोपी ने उसे एक अन्य व्यक्ति के बारे में बताया जो कर्ज ले रहा है। उसने दावा किया कि वह व्यक्ति अपनी संपत्ति गिरवी रख सकता है और कर्ज की राशि दोनों के बीच समान रूप से वितरित हो सकती है। उन्होंने बताया कि पीड़ित ने इस झांसे में आकर उसे 2 करोड़ रुपये दे दिए जो उसे पुणे मेट्रो परियोजना के लिए तेलंगाना के एक ठेकेदार से मिले थे। जब पीड़ित ने कर्ज मांग रहे दूसरे व्यक्ति और बैंक अधिकारी से मिलने के लिए कहा तो ठग ने उससे बात करना बंद कर दिया। उन्होंने बताया कि पीड़ित की शिकायत पर नेरुल पुलिस थाने ने शनिवार को धोखाधड़ी और जालसाजी के लिए भारतीय दंड संहिता के तहत आरोपी के खिलाफ एक मामला दर्ज किया है। मामले की जांच की जा रही है।

स्मृति ईरानी के पास 8.75 करोड़, राजनाथ सिंह के पास 6.46 करोड़ रुपये की प्रॉपर्टी है

लखनऊ/अमेठी । रक्षामंत्री राजनाथ सिंह से ज्यादा धन केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी के पास है। इसका खुलासा सोमवार को दोनों के नामांकन के साथ दाखिल हलफनामे में हुआ। स्मृति के पास 8.75 करोड़ व राजनाथ सिंह के पास 6.46 करोड़ रुपये की प्रॉपर्टी है। राजनाथ सिंह की संपत्ति 8 साल में 40 फीसद बढ़ी है। वर्ष 2019 में उनकी संपत्ति 4.62 करोड़ रुपये की थी। अब यह बढ़कर 6.46 करोड़ रुपये हो गई है। लखनऊ से तीसरी बार चुनावी मैदान में उतरे राजनाथ सिंह ने अपने पास 75 हजार व पत्नी के पास 45 हजार की नकदी की जानकारी दी है। उनके पास 1 रिवॉल्वर और एक 2 नाली बंदूक भी है। साथ ही 4.20 लाख रुपये का सोना और 4 लाख के रत्न हैं। उनकी पत्नी के पास 52.50 लाख का सोना और 9.37 लाख की चांदी है। उनकी पत्नी के पास कुल 90.71 लाख की संपत्ति है। यही नहीं उनके खिलाफ कोई आपराधिक मुकदमा नहीं है। वहीं स्मृति जुबिन ईरानी की संपत्ति 8 करोड़ 75 लाख 24 हजार 296 रुपये है। उनके पति की कुल संपत्ति 8 करोड 81 लाख 77 हजार 790 रुपये है। 5 साल में उनकी संपत्ति 4 करोड़ 4 लाख 22 हजार 348 रुपये बढ़ी है। जबकि उनके पति की संपत्ति में भी 4 करोड़ 14 लाख 19 हजार 976 रुपये का इजाफा हुआ है। गौरतलब है कि स्मृति ईरानी अमेठी सीट से लगातार तीसरी बार चुनाव मैदान में हैं। वह 2014 के चुनाव में हार गईं थीं। इसके बाद 2019 के चुनाव में उन्होंने कांग्रेस के नेता राहुल गांधी को हराया था। 2024 में भाजपा ने फिर उन्हें मैदान में उतारा है। जबकि कांग्रेस ने अभी अपना उम्मीदवार घोषित नहीं किया है।

नाबालिग के माता-पिता का मन बदला, कोर्ट ने वापस लिया गर्भपात कराने का आदेश

नयी दिल्ली। 14 वर्षीय दुष्कर्म पीड़िता के माता-पिता द्वारा अपना मन बदलने के बाद सुप्रीमकोर्ट ने अपना 22 अप्रैल का आदेश वापस ले लिया, जिसमें उसने लड़की को 30 सप्ताह का गर्भ को गिराने की अनुमति दी थी। सुप्रीमकोर्ट ने नाबालिग लड़की का कल्याण ''बेहद महत्वपूर्ण'' बताते हुए संविधान के अनुच्छेद 142 के तहत अपनी शक्तियों का प्रयोग करते हुए नाबालिग को गर्भपात कराने की अनुमति दी थी। अनुच्छेद 142 के तहत कोर्ट को किसी भी मामले में पूर्ण न्याय के लिए आवश्यक आदेश पारित करने का अधिकार है। सुप्रीमकोर्ट के चीफ जस्टिस डी वाई चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला, न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने मामले की सुनवाई की और पीठ की सहायता कर रहीं अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ऐश्वर्या भाटी तथा नाबालिग लड़की के माता-पिता के वकील से बातचीत की। मामले से जुड़े वकीलों ने कहा कि लड़की के माता-पिता ने वीडियो-कॉन्फ्रेंस के जरिए जजों के साथ बातचीत की। लड़की के माता-पिता ने कहा कि उन्होंने गर्भावस्था की पूरी अवधि तक इंतजार करने का फैसला किया है। चीफ जस्टिस की अगुवाई वाली पीठ ने नाबालिग लड़की के माता-पिता की दलीलें स्वीकार कर लीं और 22 अप्रैल का आदेश वापस ले लिया है।

कैडबरी की चॉकलेट में मिली फंगस, ग्राहक ने तस्वीर की शेयर, पहले भी कैडबरी चॉकलेट में कीड़ा मिलने की मिल चुकी है शिकायत

नई दिल्ली। चॉकलेट खाने वालों के लिए एक बुरी खबर है, कैडबरी चॉकलेट में कीड़े के बाद अब फंगस मिलने का दावा किया जा रहा है। हैदराबाद में एक ग्राहक ने दावा किया है कि उसकी कैडबरी चॉकलेट में फंगस निकली है। उसने चॉकलेट की तस्वीरें खींचकर सोशल मीडिया पर शेयर की हैं। इसके बाद कई यूजर्स ने भी इस तरह की शिकायत की हैं। एक बार फिर कंपनी की क्वालिटी पर सवाल उठने लगे हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक यूजर ने चॉकलेट की तस्वीरें शेयर करते हुए लिखा, डेयरी मिल्क चॉकलेट की मैन्यूफैक्चरिंग जनवरी, 2024 है और इसकी एक्सपायरी डेट मैन्यूफैक्चरिंग से 12 महीने तक है। जब मैंने इसे खोला तो यह पाया कि चॉकलेट में फंगस लगी है। साथ ही एक चॉकलेट में पीछे बड़ा छेद था। कई यूजर्स ने इसे शेयर भी किया है और इस पर कमेंट किया है। इस पर कंपनी ने जवाब देते हुए कहा है कि वह हाई क्वालिटी स्टैंडर्ड्स बनाए रखने की कोशिश करती है। इससे पहले भी फरवरी में हैदराबाद के एक व्यक्ति ने कैडबरी चॉकलेट के पैकेट से जिंदा कीड़ा निकलने की शिकायत की थी। सोशल मीडिया पर काफी हंगामा मचा था। 2003 में भी दिवाली से पहले मुंबई में ग्राहक ने कैडबरी के चॉकलेट में कीड़ा मिलने की शिकायत की थी। तब महाराष्ट्र खाद्य एवं औषधि प्रशासन ने कैडबरी के पुणे प्लांट में बने चॉकलेट स्टॉक को जब्त कर लिया था। इस घटना के बाद कैडबरी की बिक्री में गिरावट आ गई थी। कैडबरी चॉकलेट बनाने वाली कंपनी का मालिकाना हक अमेरिका की कंपनी मोंडेलेज इंटरनेशनल के पास है।

सुरक्षा बलों ने 4 नक्सली ढेर किए और कईयों को घेरा, एनकाउंटर जारी

बस्तर। बस्तर के अबूझमाड़ में सुरक्षा बलों और नक्सलियों के बीच एनकाउंटर चल रहा है। इसमें अभी तक 4 नक्सली मारे गए हैं जबकि कईयों को घेरकर रखा है। मंगलवार सुबह से जारी एनकाउंटर खबर लिखे जाने तक जारी था। जानकारी के मुताबिक, बस्तर के नारायणपुर जिले के अबूझमाड़ में जवानों ने नक्सलियों को कई जगहों पर घेरा है। डिस्ट्रिक्ट रिजर्व गार्ड (डीआरजी) और एसटीएफ की टीमें अबूझमाड़ की जंगलों में मौजूद हैं। दोनों तरफ से ताबड़तोड़ फायरिंग की जा रही है। इस एनकाउंटर में अब तक 4 नक्सली ढेर हो चुके हैं। एनकाउंटर में नक्सलियों का कितना नुकसान हुआ है, यह अभी साफ नहीं हो सका है। सूत्रों के मुताबिक, अब तक 4 नक्सली ढेर हो चुके हैं। मुठभेड़ लगातार जारी है। बता दें कि कुछ दिनों पहले जवानों ने कांकेर जिले के छोटे बेठिया में 29 नक्सलियों को मार गिराया था। रिपोर्ट के मुताबिक, छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित दंतेवाड़ा जिले में सोमवार को सात महिला नक्सलियों समेत 23 नक्सलियों ने सुरक्षाबलों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि आत्मसमर्पण करने वाले नक्सली भैरमगढ़ एरिया कमेटी में सक्रिय थे। उन्होंने बताया कि नक्सली पुलिस के पुनर्वास अभियान लोन वर्राटू से प्रभावित हैं तथा माओवादियों की खोखली विचारधारा से निराश हैं। अधिकारियों ने बताया कि इसके साथ ही, जून 2020 में शुरू किए गए पुलिस के लोन वर्राटू (अपने घर/गांव वापस लौटो) अभियान के तहत अब तक 177 इनामी नक्सली सहित कुल 761 नक्सलियों ने सुरक्षाबलों के सामने आत्मसमर्पण किया है। इससे पहले इस महीने की 24 तारीख को जिले में तीन महिला नक्सलियों समेत 18 नक्सलियों ने सुरक्षाबलों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया था। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि माओवादियों के खिलाफ सड़कें खोदने, सड़कों को अवरुद्ध करने के लिए पेड़ काटकर गिराने तथा नक्सलियों द्वारा बुलाए गए बंद के दौरान पोस्टर और बैनर लगाने का आरोप है। उन्होंने बताया कि आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों को राज्य सरकार की आत्मसमर्पण और पुनर्वास नीति के अनुसार सुविधाएं प्रदान की जाएंगी।

नौसेना को शत्रुओं से निपटने के लिए हर समय तैयार रहना होगा: एडमिरल दिनेश त्रिपाठी

लखनऊ (एजेंसी)। नयी दिल्ली। एडमिरल दिनेश कुमार त्रिपाठी ने नौसेना के 26वें प्रमुख के रूप में कार्यभार संभालने के बाद मंगलवार को कहा कि भारतीय नौसेना को समुद्री क्षेत्र में उभरती चुनौतियों के मद्देनजर संभावित शत्रुओं से निपटने के लिए हर समय अभियान की दृष्टि से तैयार रहना होगा। संचार और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध विशेषज्ञ एडमिरल त्रिपाठी ने आर हरि कुमार के सेवानिवृत्त होने के बाद यह जिम्मेदारी संभाली है। एडमिरल हरि कुमार चार दशकों के शानदार कॅरियर के बाद सेवानिवृत्त हुए हैं।

एडमिरल त्रिपाठी ने ऐसे समय में नौसेना प्रमुख की जिम्मेदारी संभाली है जब लाल सागर और अदन की खाड़ी समेत अनेक रणनीतिक जलमार्गों पर सुरक्षा चुनौतियां पैदा हुई हैं जिनमें क्षेत्र में हूती उग्रवादियों द्वारा विभिन्न कारोबारी जहाजों को निशाना बनाया जाना शामिल है। एडमिरल त्रिपाठी ने संवाददाताओं से कहा, ''पिछले कुछ सालों में हमारी नौसेना युद्ध के लिए तैयार, एकजुट, विश्वसनीय और भविष्य के लिहाज से तत्पर बल के रूप में विकसित हुई है।''

उन्होंने कहा, ''समुद्री क्षेत्र में मौजूदा और उभरती चुनौतियों के मद्देनजर भारतीय नौसेना को शांतिकाल में संभावित शत्रुओं से निपटने के लिए हर समय परिचालन की दृष्टि से तैयार रहना होगा और यदि कहा जाए तो समुद्र में तथा समुद्र से युद्ध जीतने के लिए तैयार रहना होगा।'' एडमिरल त्रिपाठी ने कहा, ''मेरा एकमात्र ध्यान और प्रयास इस दिशा में होगा।'' नौसेना प्रमुख ने यह भी कहा कि आत्म-निर्भरता बढ़ाने के लिए नौसेना के जारी प्रयासों को बढ़ाने पर वह प्राथमिकता देंगे।

उन्होंने कहा, ''मैं आत्म-निर्भरता की दिशा में, नई प्रौद्योगिकियों को पेश करने में और 'विकसित भारत' के लिए हमारे सामूहिक प्रयासों की दिशा में राष्ट्रीय विकास कामहत्वपूर्ण स्तंभ बनने में भारतीय नौसेना के चल रहे प्रयासों को भी मजबूत करूंगा।'' एडमिरल त्रिपाठी ने कहा कि वह बल के मानव संसाधन से संबंधित मुद्दों पर भी ध्यान देंगे। उन्होंने कहा, ''मेरी प्राथमिकता हमारे मानव संसाधन का कौशल विकास करने की होगी जो हमारी नौसेना के पुरुष और महिला कर्मी हैं। मेरी प्राथमिकता उन्हें सर्वश्रेष्ठ शस्त्र, प्रशिक्षण, पेशेवर माहौल और प्रशासनिक समर्थन देने की होगी।'' उन्होंने नौसेना प्रमुख के रूप में कार्यभार संभालने से पहले राष्ट्रीय समर स्मारक पर देश के शहीद नायकों को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्हें रायसीना हिल्स के साउथ ब्लॉक के प्रांगण में गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। एडमिरल त्रिपाठी ने नौसेना प्रमुख के रूप में प्रभार संभालने से पहले अपनी मां रजनी त्रिपाठी का आशीर्वाद लिया। रीवा के सैनिक स्कूल के पूर्व छात्र एडमिरल त्रिपाठी इससे पहले नौसेना के उप प्रमुख का पद संभाल रहे थे। एडमिरल त्रिपाठी का जन्म 15 मई 1964 को हुआ था और एक जुलाई 1985 में वह भारतीय नौसेना में शामिल हुए थे। उनका करीब 39 वर्ष का लंबा और उत्कृष्ट कॅरियर रहा है। उन्होंने भारतीय नौसैन्य जहाज 'विनाश', 'किर्च' और 'त्रिशूल' की कमान भी संभाली है। राष्ट्रीय रक्षा अकादमी खडकवासला के पूर्व छात्र एडमिरल त्रिपाठी को अति विशिष्ट सेवा पदक (एवीएसएम) और नौसेना पदक से भी सम्मानित किया जा चुका है।

ब्रिटेन में युवक ने पांच लोगों पर किया हमला, एक की मौत

लंदन। ब्रिटेन के पूर्वी लंदन ट्यूब स्टेशन के पास मंगलवार को एक 36 वर्षीय युवक ने एक वाहन को घर से टकराने के बाद तलवार से पांच लोगों पर हमला किया। इनमें दो पुलिस अधिकारी थे। हमले में घायल एक लड़के की अस्पताल में मौत हो गई। मेट्रोपॉलिटन पुलिस ने बताया कि हमलावर को गिरफ्तार कर लिया गया है। मेट्रोपॉलिटन पुलिस के प्रमुख अधीक्षक स्टुअर्ट बेल ने एक बयान में कहा कि हमले में घायल एक 13 वर्षीय लड़के को अस्पताल में भर्ती कराया गया था लेकिन कुछ देर बाद ही उसकी मौत हो गई। हैनॉल्ट इलाके की इस घटना में घायल हुए लोगों को मौके पर प्राथमिक उपचार के बाद अस्पताल में भर्ती कराया गया है। ब्रिटिश प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने इसे स्तब्ध करने वाली घटना करार दिया। उन्होंने कहा कि देश की सड़कों पर ऐसी हिंसा के लिए कोई जगह नहीं है। सुनक ने कहा कि यह एक स्तब्ध करने वाली घटना है और मेरी संवेदनाएं पीड़ितों और उनके परिजनों के साथ हैं। उन्होंने कहा कि मैं आपातकालीन सेवा विभाग को त्वरित प्रतिक्रिया के लिए धन्यवाद देने के साथ-साथ घटनास्थल पर पुलिस द्वारा दिखाई गई असाधारण वीरता के प्रति भी आभार जताता हूं। पुलिस ने यह भी साफ कर दिया कि यह आतंकवाद से संबंधित घटना नहीं लग रही है। हैनॉल्ट इलाके में घटना स्थल पर पुलिस बल मौजूद है और वहां घेराबंदी वाले स्थान पर क्षतिग्रस्त वाहन भी दिख रहा है। पास के ट्यूब स्टेशन को बंद कर दिया गया है। प्रत्यक्षदर्शियों ने कहा कि उन्होंने हमले से पहले संदिग्ध और पुलिस के बीच गतिरोध देखा, आरोपित एक घर में जबरदस्ती घुसने का प्रयास कर रहा था। इससे पहले, पुलिस और आपातकालीन सेवा विभाग ने कहा था कि उन्हें स्थानीय समयानुसार सुबह सात बजे से ठीक पहले पूर्वी लंदन के थुरलो गार्डन में एक घर में एक वाहन के घुसने की सूचना मिली थी। सोशल मीडिया पर वीडियो फुटेज में दाढ़ी वाले एक संदिग्ध व्यक्ति को वाहन से एक घर को टक्कर मारने के बाद बड़ी तलवार के साथ पास की झाड़ियों में घूमते हुए देखा गया।

सुप्रीम कोर्ट में बोली मुस्लिम युवती- साहब मुझे हिंदुओं जैसा संपत्ति का अधिकार चाहिए

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट के सामने कई बार चौंकाने वाले मामले आते हैं। मुख्य न्यायाधीश जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अगुवाई वाली खंडपीठ के सामने एक ऐसी अर्जी आई, जिसमें एक मुस्लिम युवती ने यह कहते हुए भारतीय उत्तराधिकार कानून के तहत संपत्ति बंटवारे का निर्देश देने की मांग की थी कि वह इस्लाम नहीं मानती है। महिला का तर्क था कि वह भले ही मुस्लिम परिवार में जन्मी है लेकिन उसकी आस्था अब इस्लाम धर्म में नहीं है। इसलिए उसकी पैतृक संपत्ति का बंटवारा शरिया कानून के तहत ना होकर भारतीय उत्तराधिकार कानून के तहत करने का निर्देश दिया जाय।खंडपीठ में जस्टिस चंद्रचूड़ के अलावा जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा भी थे।

महिला के वकील के तर्कों को सुनने के बाद तीनों जजों की बेंच ने उस पर गहन विचार-विमर्श किया और इस नतीजे पर पहुंची कि यह मुद्दा महत्वपूर्ण है। इसके बाद सीजेआई ने अटॉर्नी जनरल को इस मामले में एमिकस क्यूरी बहाल करने का निर्देश दिया, जो अदालत को कानूनी और तकनीकी पहलुओं से परिचित करा सके। इस मामले की अगली सुनवाई अब जुलाई 2024 के दूसरे सप्ताह में निर्धारित है।याचिका पर सुनवाई के दौरान चीफ जस्टिस ने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि भारतीय उत्तराधिकार कानून मुस्लिम धर्म में जन्मे व्यक्तियों को धर्मनिरपेक्ष कानून का लाभ उठाने से रोकता है, भले ही वे शरीयत कानून की धारा 3 के तहत औपचारिक रूप से ये घोषणा करें कि वे अब इस्लामी कानून का पालन नहीं करना चाहते हैं। जस्टिस चंद्रचूड़ ने कहा कि भारतीय उत्तराधिकार कानून की धारा 58 में कहा गया है कि यह मुसलमानों पर लागू नहीं होता है। भले ही आप शरिया अधिनियम के तहत घोषणा न करें, वसीयत आदि पर कोई धर्मनिरपेक्ष अधिनियम नहीं है। इसके साथ ही कोर्ट ने कहा कि जब आप शरियत भी नहीं मानेंगे तो फिर आप पर कौन सा नियम लागू होगा? यह एक अहम विषय है। इसके बाद सीजेआई ने इस पर एक कानूनी अधिकारी के नियुक्ति का आदेश दिया।

यह रिट याचिका केरल की एक महिला सफिया पीएम ने दायर की है। सफिया केरल में पूर्व-मुस्लिमों (जो मुस्लिम परिवार में जन्में लेकिन अब इस्लाम में आस्था नहीं रखते) का प्रतिनिधित्व करने वाले एक संघ की महासचिव हैं। अपनी याचिका में सफिया ने एक डिक्लेरेशन दिया कि जो व्यक्ति मुस्लिम पर्सनल लॉ से बंधे नहीं रहना चाहते हैं, उन्हें देश के धर्मनिरपेक्ष कानूनों, विशेष रूप से 1925 के भारतीय उत्तराधिकार कानून के तहत वसीयत और गैर वसीयत उत्तराधिकार के मामलों में अधिकार मिलना चाहिए। महिला ने तर्क दिया कि संविधान का अनुच्छेद 25 उसे किसी भी धर्म में आस्था रखने या न रखने की आजादी देता है। इसके साथ ही उनसे कहा कि उसके में पिता भी इस्लाम में आस्था नहीं रखते हैं इसलिए वह भी शरिया कानून के मुताबिक वसीयत नहीं लिखना चाहते हैं। इस पर सीजेआई ने कहा कि अगर आप इसकी घोषणा नहीं करते हैं, तो धारा 3 के तहत आप इस कानून के अधीन नहीं आएंगे।

याचिकाकर्ता के वकील ने कहा, मैं महिला हूँ, और मेरे भाई को डाउन सिंड्रोम है, उसे 2/3 संपत्ति दी गई है तो क्या मुझे भी वसीयत नहीं की जा सकती है। मेरी एक बेटी है। इस पर चीफ जस्टिस ने कहा, इसकी हम घोषणा कैसे कर सकते हैं? सीजेआई ने कहा, आपके अधिकार या हक आस्तिक या नास्तिक होने से नहीं मिलते बल्कि ये अधिकार आपको आपके जन्म से मिले हैं। अगर मुसलमान के रूप में पैदा होते हैं,तो आप पर मुस्लिम पर्सनल लॉ लागू होगा। जहां तक आपके पिता का सवाल है तो वह भी धारा-3 से बाध्य हैं। जब तक वह भी घोषणा नहीं करते तब तक वह धारा- 2 से बंधे रहेंगे।

प्रशंसा करते हुए बाबा रामदेव को अगली सुनवाई के लिए पेशी से मिली छूट

-अखबार में छपे माफीनामे को दिखाया, सुप्रीम कोर्ट ने दिखाई नरमी

नई दिल्ली (एजेंसी)। एलोपैथी के खिलाफ पतंजलि के भ्रामक विज्ञापन मामले में सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। बाबा रामदेव और आचार्य बालकृष्ण मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट में पेश हुए। सुनवाई दौरान योगगुरु रामदेव की ओर से पेश हुए वकील ने कोर्ट को बताया कि पतंजलि ने जो माफीनामा पेश किया था, उसे रजिस्ट्री में जमा करा दिया गया है। वकील ने अखबार में छपे माफीनामे को सुप्रीम कोर्ट में दिखाया। कोर्ट ने इस माफीनामे को देखने के बाद बाबा रामदेव के लिए अपना रुख नरम किया।

बाबा रामदेव की ओर से पेश हुए मुकुल रोहतगी ने जब सुप्रीम कोर्ट में अखबार में छपे माफीनामे की जानकारी दी तो सुप्रीम कोर्ट ने पूछा-आपने ओरिजनल रिकॉर्ड क्यों नहीं दिए, आपने ई फाइलिंग क्यों की? यह कन्फ्यूजिंग है और हम हाथ खड़े कर रहे हैं। इस पर बाबा रामदेव के वकील बलबीर सिंह ने कहा कि हो सकता है कि मेरी अज्ञानता की वजह से ऐसा हुआ हो। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि पिछली बार जो माफीनामा छापा था, वो छोटा था और उसमें केवल पतंजलि लिखा था, लेकिन दूसरा बड़ा है। इसके लिए हम प्रशंसा करते हैं कि रामदेव बात समझ में आ गई है। सुनवाई के दौरान ही मुकुल रोहतगी ने इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) के प्रमुख के बयान का जिक्र किया, जिसमें उन्होंने पतंजलि के साथ-साथ सुप्रीम कोर्ट की आलोचना की थी। रोहतगी ने कोर्ट को बताया कि आखिर आईएमए चीफ ने क्या कहा था। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने सख्ती दिखाते हुए कहा कि आईएमए के अध्यक्ष का बयान रिकॉर्ड पर लाया जाए। ये बेहद गंभीर मामला है, इसका परिणाम भुगतने के लिए वे तैयार हो जाएं। इसके बाद रोहतगी ने अगली सुनवाई में रामदेव और बालकृष्ण के पेशी से छूट मांगी तो इस पर कोर्ट ने कहा ठीक है। सुप्रीम कोर्ट ने साफ कर दिया कि केवल अगली सुनवाई के लिए ही पेशी से छूट दी गई है।

बीजेपी सांसद वरुण गांधी ने रायबरेली से चुनाव लड़ने का ऑफर ठुकराया

-बोले-लड़ाई नीतियों के बीच होनी चाहिए, व्यक्तित्व के बीच नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। यूपी के अमेठी और रायबरेली से कांग्रेस राहुल गांधी और प्रियंका गांधी को मैदान में उतारने की तैयारी कर रही है। वहीं बीजेपी इन राहुल और प्रियंका को कैसे मात दिया जाए इसकी योजना बनाने में जुटी गई है। बीजेपी ने अपने पहली ही लिस्ट में अमेठी से स्मृति इरानी को मैदान में उतार दिया है, लेकिन रायबरेली में उसकी तलाश अब भी जारी है। वहीं सूत्रों से पता चला है कि पीलीभीत से सांसद वरुण गांधी को रायबरेली से अपने ही बांधी परिवार के खिलाफ दो-दो हाथ करने का ऑफर मिला लेकिन वरुण ने इसे तुरंत ठुकरा दिया। यह भी कहा जा रहा है कि वरुण गांधी ने रायबरेली लोकसभा सीट से चुनाव लड़ने की अपनी इच्छा जाहिर नहीं की और बीजेपी के आला नेताओं को भी इसकी जानकारी दे दी है। सूत्रों के अनुसार कहा जाता है कि रायबरेली से वरुण गांधी को चुनाव में उतारे जाने को लेकर हुए मंथन के पीछे बीजेपी के आंतरिक सर्वे से निकले संकेतों की अहम भूमिका रही। सर्वे में बीजेपी ने प्रियंका के सामने उत्तरप्रदेश के दोनों उपमुख्यमंत्री से लेकर वरिष्ठ नेता और मध्य प्रदेश की पूर्व सीएम उमा भारती समेत करीब आधे दर्जन से ज्यादा चेहरों को लेकर रायशुमारी की है।

पीएम मोदी के भाषण पर चुनाव आयोग ने दिया नोटिस, भाजपा ने जवाब के लिए मांगा समय

-बांसवाड़ा के भाषण में लगा विवादास्पद बयान का आरोप

नई दिल्ली (एजेंसी)। राजस्थान के बांसवाडा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक चुनावी सभा को संबाधित किया था। इस दौरान उनके भाषण पर चुनाव आयोग ने संज्ञान लिया और नोटिस भेज दिया। नोटिस का जवाब 29 अप्रैल तक देना था। जवाब में हो रहे बिलंब के चलते भाजपा ने चुनाव आयोग समय मांगा है। राजस्थान के बांसवाड़ा में चुनावी भाषण में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर विवादास्पद टिप्पणी करने का आरोप लगा। इसे लेकर पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा को ईसी ने नोटिस भेज दिया। आयोग ने बीते 25 अप्रैल को यह नोटिस जारी किया था और उनसे 29 अप्रैल को सुबह 11 बजे तक जवाब मांगा गया था। रिपोर्ट के मुताबिक, बीजेपी सूत्रों ने बताया कि पार्टी की ओर से जवाब तैयार किया जा रहा है, जिसमें यह बताया जाएगा कि पीएम मोदी ने तथ्यों के आधार पर बात की। ऐसा पहली बार है जब किसी प्रधानमंत्री की ओर से आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन पर जवाब देने के लिए कहा गया।

दूसरी ओर बीजेपी ने कांग्रेस के खिलाफ निर्वाचन आयोग में शिकायत दर्ज कराई। यह आरोप लगाया कि उसने चुनाव प्रक्रिया को पटरी से उतारने के लिए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का फर्जी वीडियो शेयर किया। केंद्र की सत्तारूढ़ पार्टी ने कांग्रेस के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की भी मांग की। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव और पार्टी के राष्ट्रीय मीडिया विभाग के प्रभारी अनिल बलूनी ने टीएमसी के खिलाफ भी शिकायत की। यह आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली पार्टी हिंसा को हथियार के रूप में इस्तेमाल कर रही है। भाजपा ने पश्चिम बंगाल में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराने की मांग भी की। आयोग के अधिकारियों से मुलाकात के बाद वैष्णव ने कहा, 'कांग्रेस फर्जी वीडियो के जरिए पूरी चुनाव प्रक्रिया को पटरी से उतारना चाहती है। हमने आज इसके खिलाफ निर्वाचन आयोग से शिकायत की। कांग्रेस ने अपने आधिकारिक हैंडल से फर्जी वीडियो पोस्ट कर लोगों के बीच भ्रम पैदा करने की कोशिश की है।'

बिहार से लोकतंत्र में महिलाओं की हिस्सेदारी ना के बराबर...भाजपा और कांग्रेस ने किसी महिला प्रत्याशी को नहीं दिया टिकट

-लालू ने 6 महिला शक्ति को मैदान में उतारा

नई दिल्ली (एजेंसी)। महिला सशक्तीकरण की मिसाल से भरी माता जानकी की भूमि मिथिला में महिलाओं को लोकतंत्र में वह हिस्सेदारी नहीं मिल सकी, जो संविधान ने उन्हें दी है। बिहार में अबतक 17 बार लोकसभा चुनाव हुए और महज 34 महिला ही सदन पहुंचने में सफल हुई है।

विधायिका में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने की पुरजोर वकालत करने वाले राजनीतिक दलों ने भी महिलाओं की इस बार कोई सुध नहीं ली और टिकट बंटवारे के समय चुप्पी साध ली। भरपूर सम्मान एवं बराबरी की हिस्सेदारी का दावा करने वाले राजनीतिक दल इस चुनाव में भी आधी आबादी से किए अपने वादे भूल गए। बिहार में अबतक हुए लोकसभा चनाव में सर्वाधिक चार बार जीतने वाली रमा देवी को भाजपा ने इस बार के चुनाव में शिवहर से बेटिकट किया है। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) में सीटों में तालमेल के तहत शिवहर सीट जदयू को मिली है। जदयू ने शिवहर सीट से पूर्व सांसद लवली आनंद को उतारा है।महिला आरक्षण बिल या नारी शक्ति वंदन विधेयक पास कराने वाले एनडीए ने इस बार के लोकसभा चुनाव में महिला शक्ति को नजर अंदाज किया है। भाजपा ने बिहार में एक भी महिला उम्मीदवार को टिकट नहीं दिया है।

राजग के घटक दल जदयू ने दो महिला सीवान से विजया लक्ष्मी देवी और शिवहर से लवली आनंद को टिकट दिया है। वहीं लोजपा-रामविलास ने वैशाली से वीणा देवी और समस्तीपुर से शांभवी चौधरी को उम्मीदवार बनाया है। वहीं हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा (हम) और राष्ट्रीय लोक मोर्चा ने किसी महिला को प्रत्याशी नहीं बनाया है। कुल मिलाकर राजग ने चुनाव में 40 सीट में से चार सीट पर महिलाओं को टिकट दिया है। जबकि इंडिया गठबंधन ने छह महिला शक्ति पर भरोसा जताया है।

राजद ने बिहार में आधी आबादी को टिकट देने के मामले में इस बार सभी दलों से बाजी मार ली है। गैया बकरी चरती जाए, मुनिया बेटी पढ़ती जाए। नारा देने वाले राजद सुप्रीमो लालू ने सर्वाधिक छह महिलाओं को मैदान में उतारा है। इसमें राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव की दो पुत्री मीसा भारती और रोहिनी आचार्य, बीमा भारती, रितु जायसवाल, अनिता देवी और अर्चना रविदास शामिल है। इसमें मीसा भारती को छोड़ अन्य पांच महिला शक्ति पहली बार लोकसभा के रण मे अपनी तकदीर आजमा रही हैं। इंडिया गठबंधन में शामिल कांग्रेस ने किसी महिला शक्ति को मौका नहीं दिया है। इंडिया गठबंधन में शामिल वामदल ने भी किसी महिला को चुनाव में नहीं जगह दी है। वामदल में शामिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा),मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी

(माकपा) और भारत की कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी-लेनिनवादी (भाकपा-माले) से कोई महिला चुनावी मैदान में नही हैं। इंडिया गठबंधन में शामिल विकासशील इंसान पार्टी (वीआईपी) ने भी इस चुनाव में महिला शक्ति की उपेक्षा की और किसी महिला को मौका नहीं दिया। फिलहाल लोकसभा में बिहार की तीन महिला सांसद हैं, जो महज 7.5 फीसद भागीदारी हैं। यदि महिला आरक्षण लागू हुआ तो बिहार से कम से कम 13 महिला लोकसभा पहुंचेंगी।

संक्षिप्त

तीन को चेन्नई की टीम पंहुचेगी धर्मशाला

धर्मशाला। धर्मशाला में पांच मई को खेले जाने वाले पहले आईपीएल मैच के लिए पंजाब किंग्स इलैवन दो मई और चेन्नई सुपर किंग्स की टीम तीन मई को धर्मशाला पहुंच जाएंगी। इसके बाद नौ मई के मैच के लिए रॉयल चैलेंजर बैंगलोर की टीम छह या सात मई को धर्मशाला पंहुचेगी। धर्मशाला में होने वाले मैचों में से पंजाब-चेन्नई पांच मई मैच के लिए टिकटों की ऑनलाइन बिक्री शुरू हो गई है। हालांकि दर्शकों को ऑनलाईन लंबी कतारों में लगने के बावजूद टिकटें नहीं मिल पा रही हैं। वहीं अब कंपनी की ओर से टिकटों के दामों में लगातार बढ़ौतरी की जा रही है। वेस्ट स्टैंड-दो की दो हजार की टिकट अब 3500 रुपए में बेची जा रही है। इसके साथ ही नोर्थ पैवेलियन स्टैंड की तीन 4500 की टिकट पहले 5500 और अब एक दिन बाद ही छह हजार में, वेस्ट स्टैंड-एक व ईस्ट स्टैंड-तीन 7500 से 10 हजार और पैवेलियन टैरेस 12 हजार 500 से अब 15 हजार में बेचा जा रहा है।

वाराणसी के आदर्श ने जीता स्वर्ण

वाराणसी। श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय, राजस्थान में 25 से 28 अप्रैल तक आयोजित ऑल इंडिया यूनिवर्सिटी क्वान कीडो प्रतियोगिता में वाराणसी के आर. बी. मार्शल आर्ट्स अकादमी के आदर्श सोनकर और अदिति सोनकर ने महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ की टीम का प्रतिनिधित्व करते हुए क्रमशः स्वर्ण और रजत पदक जीता। अदिति ने प्रतियोगिता में तीन रजत पदक हासिल किये। दोनों ही खिलाड़ी महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कला संकाय के विद्यार्थी हैं। आदर्श ने पुरुष फाइट वर्ग के -83 किलोग्राम भार-वर्ग में स्वर्ण पदक जीता और अदिति ने तीन अलग- अलग वर्गों (महिलाओं के व्यक्तिगत -59 किलोग्राम भार वर्ग, टीम फाइट वर्ग और टीम क्वान) में रजत पदक जीता।

टी20 विश्व कप के लिए भारतीय टीम घोषित पंत-सैमसन को मौका, केएल राहुल बाहर

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने मंगलवार को आगामी आईसीसी पुरुष टी 20 विश्व कप 2024 के लिए भारत की 15 सदस्यीय टीम की घोषणा कर दी है। विश्व कप का आयोजन 1 जून से वेस्टइंडीज और यूएसए में किया जाएगा।

रोहित शर्मा इस टूनार्मेंट में भारत की कप्तानी करेंगे, जबकि हार्दिक पांड्या उनके डिप्टी होंगे। भारत ने ऋषभ पंत और संजू सैमसन सहित दो विकेटकीपरों को अपनी टीम में शामिल किया है।

स्टार बल्लेबाज विराट कोहली, जो मौजूदा आईपीएल 2024 में रन बना रहे हैं, को भी टीम में शामिल किया गया है। पंत 2022 में उत्तराखंड में दिल्ली-देहरादून राजमार्ग पर कार दुर्घटना के लगभग 16 महीने बाद टीम इंडिया में वापसी करने के लिए तैयार हैं।

भारत ने अपनी टीम में चार स्पिनरों रवींद्र जडेजा, अक्षर पटेल, कुलदीप यादव और युजवेंद्र चहल को चुना है। चहल को पहली बार टी20 विश्व कप के लिए टीम में चुना गया है।

भारत इस टूनार्मेंट में जसप्रीत बुमराह की अगुआई में दमदार तेज गेंदबाजी आक्रमण के साथ उतरेगा, जिसमें अर्शदीप सिंह और मोहम्मद सिराज भी शामिल हैं। सैमसन को 15 सदस्यीय टीम में जगह मिली है, जबकि चयनकताओं ने विकेटकीपर बल्लेबाज केएल राहुल को नजरअंदाज किया है। शुभमन गिल, रिंकू सिंह, खलील अहमद और आवेश खान को रिजर्व खिलाड़ियों में रखा गया है। भारत अपना विश्व कप अभियान 5 जून 2024 को आयरलैंड के खिलाफ नासाउ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम, न्यूयॉर्क में शुरू करेगा, इसके बाद 9 जून 2024 को उसी स्थान पर पाकिस्तान के खिलाफ मैच खेलेगा। इसके बाद भारत 12 और 15 जून को क्रमशः यूएसए और कनाडा से खेलेगा।

भारत को टूनार्मेंट के ग्रुप ए में चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान, आयरलैंड, कनाडा और सह-मेजबान यूएसए के साथ रखा गया है।

आईसीसी टी-20 विश्व कप के लिए भारतीय टीमः रोहित शर्मा (कप्तान), हार्दिक पांड्या (उप कप्तान), यशस्वी जायसवाल, विराट कोहली, सूर्यकुमार यादव, ऋषभ पंत (विकेट कीपर), संजू सैमसन (विकेट कीपर), शिवम दुबे, रवींद्र जडेजा, अक्षर पटेल, कुलदीप यादव, युजवेंद्र चहल, अर्शदीप सिंह, जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद. सिराज।

रिजर्वः शुभमन गिल, रिंकू सिंह, खलील अहमद और आवेश खान।

रांची में राष्ट्रीय महिला हॉकी लीग का आगाज

संवाददाता

रांची। राष्ट्रीय महिला हॉकी लीग 2024-25 प्रतियोगिता रांची के मारंग गोमके जयपाल सिंह एस्ट्रोटर्फ हॉकी स्टेडियम में मंगलवार से शुरू हो गई है। भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) के महानिदेशक संदीप प्रधान ने उद्घाटन समारोह का शुभारंभ किया।

भाग लेनेवाली सभी 8 टीमों के खिलाड़ियों के साथ बातचीत की। ये टीमें हाल ही में संपन्न 14वीं हॉकी इंडिया सीनियर महिला राष्ट्रीय चैम्पियनशिप से क्वालिफाई करनेवाली भारतीय महिला घरेलू हॉकी की सर्वश्रेष्ठ टीमें हैं. इनमें हॉकी हरियाणा, हॉकी महाराष्ट्र, हॉकी झारखंड (मेजबान), हॉकी मध्य प्रदेश, हॉकी बंगाल, हॉकी मिजोरम, मणिपुर हॉकी और हॉकी एसोसिएशन ऑफ ओडिशा शामिल हैं।

हॉकी इंडिया के महासचिव भोलानाथ सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय महिला हॉकी लीग भारतीय महिला

घरेलू हॉकी ढांचे के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है। यह प्रतियोगिता हमारे शीर्ष घरेलू खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने और अपने कौशल को और निखारने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच साबित होगा। हमें विश्वास है कि यह लीग न केवल घरेलू हॉकी के लिए अवसर बढ़ायेगा बल्कि राष्ट्रीय टीम के लिए भविष्य के सितारों की पहचान और पोषण के लिए एक स्प्रिंगबोर्ड के रूप में भी काम करेगा।

उद्घाटन दिवस में हॉकी एसोसिएशन ऑफ ओडिशा ने हॉकी हरियाणा को 4-1 से हराया जबकि हॉकी महाराष्ट्र ने मणिपुर हॉकी को 5-1 से आसानी से हरा दिया। शेष मैचों में हॉकी मध्य प्रदेश का सामना हॉकी बंगाल से होगा और हॉकी झारखंड का सामना हॉकी मिजोरम से होगा।

उद्घाटन समारोह में झारखंड सरकार के अधिकारी मनोज कुमार (सचिव, पर्यटन, कला, संस्कृति, खेल और युवा मामले विभाग, झारखंड सरकार), सुशांत गौरव (निदेशक खेल, खेल और युवा मामले विभाग, झारखंड सरकार) भी उपस्थित थे।

पंजाब पर जीत के इरादे से उतरेगी सीएसके

एजेंसी

चेन्नई। आईपीएल में बुधवार को चेन्नई सुपर किंग्स की टीम अपने घरेलू मैदान पर पंजाब किंग्स के खिलाफ जीत के इरादे से उतरेगी। सीएसके की टीम ने अपने पिछले मुकाबले में यहां लखनऊ सुपरजाइंट्स को हराया था जिससे उसके हौंसले बुलंद हैं। टीम के बल्लेबाज और गेंदबाज लय में हैं जिससे वह अपनी जीत का सिलसिला बनाये रखना चाहेगी। इस मैच में सीएसके की बल्लेबाजी कप्तान रुतुराज गायकवाड़ के अलावा शिवम दुबे, डेरिल मिचेल, रचिन रविंद्र पर रहेगी। रविन्द्र अब तक बड़ी पारी नहीं खेल पाये हैं और उनका लक्ष्य इस मैच में जमकर रन बनाना रहेगा। वहीं गेंदबाजी की कमान मुस्ताफिजुर रहमान, मथीसा पथिराना आदि पर रहेगी। उसे पंजाब के निचले क्रम के बल्लेबाजों आशुतोष शर्मा और

शशांक सिंह पर अंकुश लगाना होगा क्योंकि ये दोनो ही आक्रामक बल्लेबाजी कर टीम को जीत दिला देते हैं। सुपरजाइंट्स के खिलाफ कप्तान रुतुराज गायकवाड़ ने 98 रनों की शानदार पारी खेली थी जबकि गेंदबाजी में तुषार देशपांडे ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए चार विकेट लिए थे। यहां की पिच गेंदबाजों के लिए सहायक रहती है जिसका लाभ भी सीएसके के गेंदबाज उठाना चाहेंगे। यहां ओस नहीं पड़े तो फिर दूसरी पारी में रन बनाना कठिन होता है। ऐसे में टॉस की अहम भूमिका रहेगी और पहले गेंदबाजी करने वाली टीम लाभ में रहेगी हालांकि ओस गिरने पर हालात बदल जाते हैं।

इस मैदान पर सीएसके ने सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ 200 से अधिक रन बनाये थे। इससके बाद उसने अच्छी गेंदबाजी कर सनराइजर्स को हराया था। ऐसे में पंजाब के लिए चेपॉक पर खेलना आसान नहीं रहेगा। पंजाब ने हालांकि इस सत्र में एक बार लक्ष्य का पीछा करते हुए सबसे अधिक रन बनाये हैं जिससे टीम का मनोबल बढ़ा है और वह जीत के लिए पूरी ताकत लगा देगी।

पंजाब की बात करें तो टीम की बल्लेबाजी जॉनी बेयरस्टो, प्रभसिमरन सिंह के अलावा शशांक सिंह और आशुतोष शर्मा पर आधारित रहेगी जबकि गेंदबाजी की कमान सैम कुरेन, कागिसो रबादा जैसे खिलाड़ियों के पास रहेगी।

पीजीडीएवी ए टीम ने सेंट स्टीफंस कॉलेज को दस विकेट से हराया

नई दिल्ली। मेजबान पीजीडीएवी कॉलेज (प्रातः) की ए टीम ने दूसरे स्वामी दयानंद सरस्वती डे-नाइट टी-20 इंटर कॉलेज क्रिकेट टूनार्मेंट में सेंट स्टीफंस कॉलेज को दस विकेट से करारी शिकस्त दी। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए सेंट स्टीफंस कॉलेज ने 20 ओवर में 95 रन का स्कोर बनाया। ध्रुव मल्होत्रा और पार्थ वढेरा ने क्रमशः 11 और 13 रन देकर 3-3 विकेट लिए। पीजीडीएवी (ए) ने बिना कोई विकेट गंवाए लक्ष्य हासिल कर 10 विकेट से मैच जीत लिया। उनकी ओर से अभीक ने सिर्फ 32 गेंदों में 78 रन बनाए। पीजीडीएवी कॉलेज (ए) टीम के अभीक को प्लेयर ऑफ द मैच घोषित किया गया।

उबेर कप बैडमिंटनः भारतीय महिला टीम चीन से हारी

चेंगदू। बीडब्ल्यूएफ उबेर कप 2024 में अपना क्वार्टरफाइनल स्थान पहले ही सुनिश्चित कर चुकी युवा भारतीय महिला टीम ने ग्रुप ए के अपने अंतिम मुकाबले में मजबूत और मेजबान चीन के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा। हालांकि भारतीय टीम ने अच्छा प्रदर्शन किया और नॉकआउट चरण के लिए तैयारी कर ली। 25 वर्ष से कम की औसत आयु वाली भारतीय टीम ने दुनिया के सभी शीर्ष-10 रैंक वाले खिलाड़ियों से सजी चीनी टीम को अच्छी टक्कर दी, हालांकि टीम 0-5 से हार गई और ग्रुप में दूसरे स्थान पर रही, लेकिन क्वार्टर फाइनल से पहले इस मैच से युवा भारतीय टीम को बहुत सी सकारात्मक बातें सिखने को मिलीं। शुरूआती एकल मुकाबले में, इशारानी बरुआ ने ओलंपिक चैंपियन चेन युफेई का सामना किया और पहले

गेम में 6-4 की बढ़त भी बनाई, लेकिन फिर चीनी खिलाड़ी ने मैच पर कब्जा कर लिया और अंत में मैच 21-12, 21-10 से जीत लिया मैच के बाद इशारानी ने कहा, ₹यह पहली बार था जब मैं इतने बेहतरीन खिलाड़ी के साथ खेल रही थी। मैच की गति काफी तेज थी, लेकिन मैंने जितनी गलतियाँ कीं, उससे मैं खुश नहीं हूँ। जब भी मैं लंबी रैलियाँ खेल पाती, तो मेरे पास अंक जीतने का मौका होता। राष्ट्रीय चैंपियन प्रिया कोनजेंगबाम और श्रुति मिश्रा को चेन किंग चेन और जिया यी फैन की दुनिया की नंबर 1 जोड़ी के खिलाफ 21-13, 21-12 से हार का सामना करना पड़ा, इससे पहले अनमोल खरब को दूसरे एकल में हान यू के खिलाफ दूसरे गेम में चोटिल होकर रिटायर होना पड़ा।सिमरन सिंघी और रितिका ठाकर की युगल जोड़ी ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया, लेकिन जीत हासिल नहीं कर सकी। भारतीय जोड़ी को लियू शेंग शू और तांग निंग से 9-21, 10-21 से हार का सामना करना पड़ा। प्रतियोगिता में भारतीय टीम के लिए पदार्पण कर रही पंद्रह वर्षीय तन्वी शर्मा ने दूसरे गेम में एशियाई चैंपियन वांग झी यी से मुकाबला किया और वे 21-7, 21-16 से हार गईं।

स्पेशल ओलंपिक भारत के कार्यकारी निदेशक नियुक्त हुए वी.के. महेंद्रू

एजेंसी

नई दिल्ली। स्पेशल ओलंपिक भारत ने मंगलवार को वी.के. महेंद्रू को संगठन का नया कार्यकारी निदेशक नियुक्त किया है।

अपनी नई भूमिका में, महेंद्रू संगठन और प्रबंधन के सभी पहलुओं की देखरेख करेंगे। साथ ही वह एक संरक्षक के रूप में भी काम करेंगे। पीईसी चंडीगढ़ से सिविल इंजीनियरिंग में बी.टेक और बाद में प्रबंधन में डिप्लोमा प्राप्त करने के साथ, महेंद्रू ने ओएनजीसी में एक सिविल इंजीनियर के रूप में अपना करियर शुरू किया और कॉर्पोरेट खेल प्रमुख, सतर्कता विभाग के प्रमुख, कॉर्पोरेट और संसदीय मामलों के प्रमुख और अंत में कार्यकारी निदेशक के रूप में प्रमुख पदों पर रहे। इस दौरान महेंद्रू ने मुंबई के क्षेत्रीय कार्यालय का नेतृत्व किया जो ओएनजीसी का सबसे प्रमुख और लाभदायक कार्य केंद्र है।

उनकी मजबूत प्रशासनिक क्षमताएं, संचार कौशल, टीम निर्माण और नैतिकता और ईमानदारी का सख्त पालन उन्हें स्पेशल ओलंपिक भारत को निरंतर गुणवत्तापूर्ण विकास के मार्ग पर ले जाने में काफी हद तक सक्षम बनाता है।

अपनी हालिया नियुक्ति पर महेंद्रू ने अपना उत्साह व्यक्त करते हुए कहा, "मुझे स्पेशल ओलंपिक भारत के कार्यकारी निदेशक के रूप में नियुक्त किए जाने पर खुशी है। यह एक ऐसा संगठन है जो मेरे दिल के बेहद करीब है। मैं खेलों और हमारे स्पेशल ओलंपिक एथलीटों से बहुत करीब से जुड़ा हुआ हूं। मैं अपने प्रयासों, काम और दक्षता को आगे बढ़ाने के लिए तत्पर हूं जो हमारे संगठन और हमारे कीमती एथलीटों की बेहतरी और विकास की ओर ले जाएगा।"

महेंद्रू कॉलेज शिक्षा के दौरान टेबल टेनिस और बैडमिंटन में काफी कौशल की पृष्ठभूमि से आते हैं, और खेलों के विकास के लिए उनमें गहरा जुनून है। 2009 से 2014 के बीच ओएनजीसी में कॉर्पोरेट स्पोर्ट्स डिवीजन के प्रमुख के रूप में उन्होंने 22 खेलों का प्रबंधन किया, खिलाड़ियों की भर्ती की और उन्हें विश्व स्तर पर प्रशंसा हासिल करने के लिए तैयार किया। इस दौरान उन्होंने 400 राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों का प्रबंधन किया है, जिनमें वीरेंद्र सहवाग, विराट कोहली, ईशांत शर्मा, गौतम गंभीर, पंकज आडवाणी (बिलियर्ड्स और स्नूकर) और अश्विनी पोनप्पा (बैडमिंटन) जैसे कुछ प्रमुख नाम शामिल हैं। इनमें से 30 खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय पुरस्कार जीते हैं।

इस नियुक्ति पर स्पेशल ओलंपिक भारत की अध्यक्ष डॉ. मल्लिका नड्डा ने कहा, "वी.के. महेंद्रू हमारी टीम में बहुत अधिक अनुभव और ज्ञान लेकर आए हैं। हमारे संगठन और हमारे एथलीटों की भलाई के लिए वह योग्य वयक्तित्व हैं। हम उनका हार्दिक स्वागत करते हैं और स्पेशल ओलंपिक भारत में उनके आगामी योगदान की प्रतीक्षा कर-रहे हैं।"

भारतीय क्रिकेट जगत ने रोहित शर्मा को उनके 37वें जन्मदिन की दी बधाई

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट जगत ने कप्तान रोहित शर्मा को मंगलवार को उनके 37वें जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने 'हिटमैन' को अपनी शुभकामनाएं देते हुए एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर लिखा, ₹472 अंतरराष्ट्रीय मैच, 18,820 अंतरराष्ट्रीय रन, 48 अंतरराष्ट्रीय शतक, तीन वनडे दोहरे शतक बनाने वाले एकमात्र क्रिकेटर टीम इंडिया के कप्तान रोहित शर्मा को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं!₹

बीसीसीआई सचिव जय शाह ने ट्वीट किया, ₹भारतीय क्रिकेट की अजेय शक्ति, हमारे कप्तान, रोहित शर्मा को जन्मदिन की शुभकामनाएं! आपका नेतृत्व, कौशल और अडिग भावना हमारी टीम की धड़कन है। सीमाओं को तोड़ने और इतिहास रचने के एक और साल के लिए शुभकामनाएं! चमकते रहो, हिटमैन!,₹

रोहित की कप्तानी में पांच इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) खिताब जीतने वाली फ्रेंचाइजी मुंबई इंडियंस (एमआई) ने भी रोहित और उनके सभी प्रशंसकों को ₹हिटमैन डे₹ की शुभकामनाएं दीं।

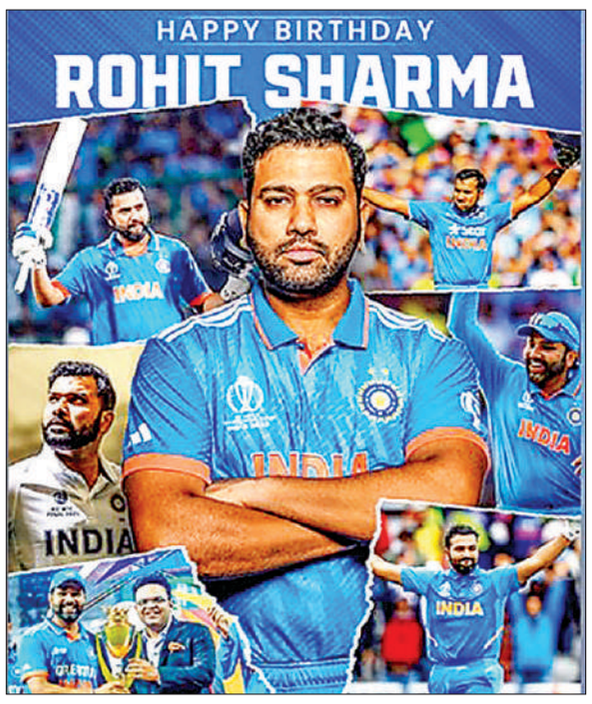

एमआई ने ट्वीट किया, ₹आज हिटमैन डे है, 45 वर्षीय रोहित शर्मा को जन्मदिन की शुभकामनाएं।₹

पूर्व भारतीय सलामी बल्लेबाज गौतम गंभीर, जो रोहित के साथ 2007 टी20 विश्व कप विजेता टीम और 2011 क्रिकेट विश्व कप जीतने वाली टीमों का हिस्सा थे, ने लिखा, ₹जन्मदिन की बहुत-बहुत शुभकामनाएं रोहित। आपके स्वास्थ्य और खुशी की कामना करता हूं! धन्य रहें!₹

भारत के विश्व कप विजेता ऑलराउंडर युवराज सिंह ने भी रोहित को जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं।

युवराज ने ट्वीट किया, ₹जन्मदिन मुबारक भाई! आपकी बल्ले से निकलने वाली बड़ी हिट की तरह खुशी और सफलता भी सहजता से बहे! ढेर सारा प्यार।₹

2007 में, रोहित ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण किया। उस वर्ष उन्होंने टी-20 विश्व कप 2007 में बेहतरीन प्रदर्शन किया था। रोहित ने अपने तीन मैचों में, 88 रन बनाए और नाबाद रहे। उन्होंने आयरलैंड के खिलाफ अर्धशतक बनाने के बाद चैंपियनशिप मैच में कट्टर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान के खिलाफ 16 गेंदों में 30* रन बनाकर अपनी टीम की जीत में मजबूत योगदान दिया।

रोहित अपने करियर के पहले छह वर्षों तक, मध्य क्रम में बल्लेबाजी करते थे। हालांकि, 2013 आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी, जहां उन्हें शिखर धवन के साथ ओपनिंग करने का अवसर मिला, ने उनके करियर ग्राफ को तेजी से ऊपर की ओर भेज दिया।

पारी की शुरूआत करने का मौका सफल रहा और इसने रोहित को आधुनिक युग के सबसे विध्वंसक बल्लेबाजों में से एक बना दिया। 262 वनडे मैचों में उन्होंने 49.12 की औसत से 10709 रन बनाए हैं। इस प्रारूप में उनके नाम 31 शतक और 55 अर्द्धशतक हैं, जिसमें 264 उनका सर्वश्रेष्ठ व्यक्तिगत स्कोर है, जो वनडे क्रिकेट इतिहास का सर्वश्रेष्ठ स्कोर भी है।

वह वनडे क्रिकेट में 15वें सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं और एमएस धोनी (10599), राहुल द्रविड़ (10,768), सौरव गांगुली (11,221), विराट कोहली (13848) और सचिन तेंदुलकर (18426 रन) के बाद भारतीयों में छठे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं। विराट (50) और सचिन (49) के बाद उनके नाम किसी भी खिलाड़ी द्वारा तीसरा सबसे ज्यादा वनडे शतक है। वह तीन वनडे दोहरे शतक लगाने वाले एकमात्र खिलाड़ी हैं।

पिछले कुछ वर्षों में, उन्होंने खुद को एक विश्वसनीय टेस्ट ओपनर के रूप में भी स्थापित किया है। 59 मैचों और 101 पारियों में, उन्होंने 45.46 की औसत और 57.05 से अधिक की स्ट्राइक रेट से 4137 रन बनाए हैं।

रोहित ने अपनी कप्तानी कौशल से टी20 क्रिकेट में भी प्रभाव डाला है। उन्होंने छह आईपीएल ट्रॉफी जीती हैं, जिससे वे अब तक के सबसे सफल आईपीएल खिलाड़ी बन गए हैं। उन्होंने कप्तान के रूप में मुंबई इंडियंस को पांच आईपीएल खिताब (2013, 2015, 2017, 2019 और 2020) दिलाए हैं और एक खिलाड़ी के रूप में 2009 में डेक्कन चार्जर्स के साथ एक खिताब जीता है।

इसके अलावा, वह लीग के इतिहास में चौथे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं, जिन्होंने 252 मैचों, 247 पारियों में 29.92 की औसत से कुल 6522 रन बनाए हैं, जिसमें दो शतक और 42 अर्धशतक और 109* का सर्वश्रेष्ठ स्कोर है।

टी20 में भी उनका प्रदर्शन शानदार रहा है, उन्होंने 151 मैचों में 31 से अधिक की औसत से 3,974 रन बनाए हैं, जिसमें पांच शतक और 29 अर्द्धशतक शामिल हैं। टी20 क्रिकेट में उनके नाम सबसे अधिक शतक हैं।

2023 के वनडे विश्व कप में रोहित ने शानदार प्रदर्शन किया और 597 रन बनाकर दूसरे स्थान पर रहे। 'हिटमैन' फिलहाल इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2024 में मुंबई इंडियंस (एमआई) का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

संक्षिप्त

बुनियादी उद्योगों की वृद्धि मार्च में 5.2 फीसदी रही

नई दिल्ली। देश के आठ प्रमुख बुनियादी उद्योगों की वृद्धि की रफ्तार मार्च में सालाना आधार पर 5.2 फीसदी रही है। हालांकि, यह वृद्धि इससे पिछले महीने के मुकाबले कम है। इस साल फरवरी में इसकी वृद्धि दर 7.1 फीसदी रही थी।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने मंगलवार को जारी एक बयान में बताया कि आठ प्रमुख बुनियादी उद्योगों की वृद्धि दर मार्च में सालाना आधार पर बढ़कर 5.2 फीसदी (अंतिम) हो गई। इससे पिछले महीने फरवरी में यह दर 7.1 फीसदी रही थी। जनवरी 2024 में यह 4.1 फीसदी बढ़ा था, जबकि मार्च 2023 में इसकी वृद्धि की रफ्तार 4.2 फीसदी रही थी।

मंत्रालय के मुताबिक मार्च में सीमेंट, कोयला, बिजली, प्राकृतिक गैस, इस्पात और कच्चे तेल के उत्पादन में सकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई है। हालांकि, संचयी रूप से वित्त वर्ष 2023-24 में अप्रैल-मार्च के दौरान इन क्षेत्रों के उत्पादन में वृद्धि दर धीमी होकर 7.5 फीसदी रही है, जो इससे पिछले वित्त वर्ष के 7.8 फीसदी के मुकाबले कम है।

आखिरी घंटे में हुई बिकवाली से टूटा शेयर बाजार

लाल निशान में बंद हुए सेंसेक्स और निफ्टी , बेंचमार्क इंडेक्स में गिरावट के बावजूद निवेशकों को 6 हजार करोड़ का मुनाफा

एजेंसी

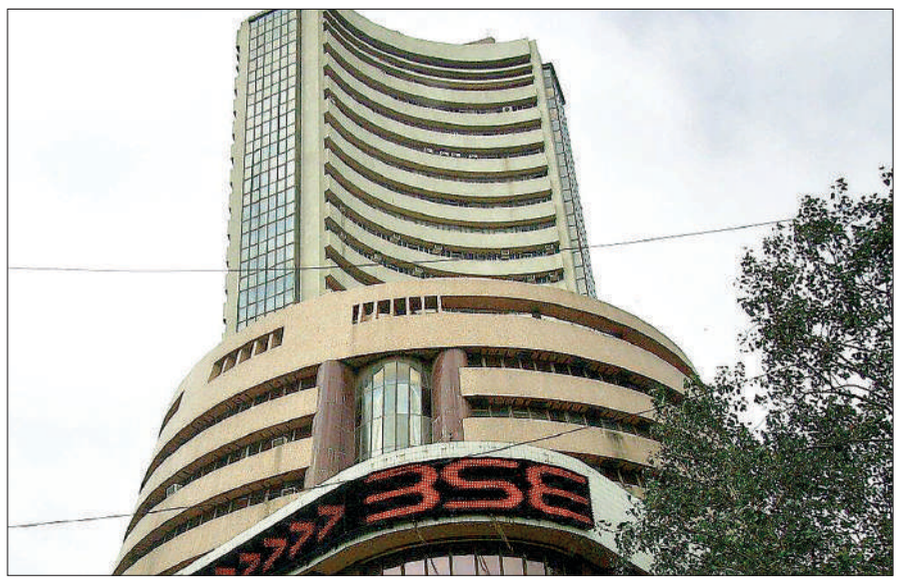

नई दिल्ली। दिन भर मजबूती के साथ कारोबार के करने के बाद आखिरी घंटे में हुई जबरदस्त बिकवाली के कारण घरेलू शेयर बाजार मंगलवार को गिरावट के साथ बंद हुआ। आज के कारोबार की शुरूआत मामूली बढ़त के साथ हुई थी। दिन के कारोबार में शेयर बाजार ने खरीदारी के सपोर्ट से मजबूत बढ़त बना ली। हालांकि कारोबार के अंत में मुनाफावसूली का दबाव बढ़ जाने के कारण सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांकों ने लाल निशान में गोता लगा दिया। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.25 प्रतिशत और निफ्टी 0.17 प्रतिशत की गिरावट के साथ बंद हुए।

आज दिन भर के कारोबार के दौरान रियल्टी, ऑटोमोबाइल, पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइज और पावर सेक्टर के शेयरों में खरीदारी होती रही। दूसरी ओर मेटल, आईटी, ऑयल एंड गैस, इंफ्रास्ट्रक्चर, फार्मास्यूटिकल और एफएमसीजी सेक्टर के शेयरों में बिकवाली का दबाव बना रहा। ब्रॉडर मार्केट में आज मिला-जुला कारोबार होता रहा। पूरे दिन के कारोबार के बाद बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.49 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुआ। इसी तरह स्मॉलकैप इंडेक्स ने 0.10 प्रतिशत की तेजी के साथ आज के कारोबार का अंत किया।

आज सेंसेक्स और निफ्टी में गिरावट आने के बावजूद मिडकैप शेयरों में हुई खरीदारी के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों को नुकसान होने की जगह उनकी संपत्ति में मामूली इजाफा हो गया। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन आज के कारोबार के बाद बढ़ कर 406.58 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया। पिछले कारोबारी दिन यानी सोमवार को इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 406.52 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह निवेशकों को आज के कारोबार से करीब 6 हजार करोड़ रुपये का फायदा हो गया।

आज दिन भर के कारोबार में बीएसई में 3,950 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें 1,827 शेयर बढ़त के साथ बंद हुए, जबकि 1,993 शेयरों में गिरावट का रुख रहा, वहीं 130 शेयर बिना किसी उतार चढ़ाव के बंद हुए। एनएसई में आज 2,230 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें से 1,013 शेयर मुनाफा कमा कर हरे निशान में और 1,217 शेयर नुकसान उठा कर लाल निशान में बंद हुए। इसी तरह सेंसेक्स में शामिल 30 शेयरों में से 18 शेयर बढ़त के साथ और 12 शेयर गिरावट के साथ बंद हुए। निफ्टी में शामिल शेयरों में से 24 शेयर हरे निशान में और 26 शेयर लाल निशान में बंद हुए।

बीएसई का सेंसेक्स आज 129.61 अंक की तेजी के साथ 74,800.89 अंक के स्तर पर खुला। शुरूआती कारोबार में मामूली उतार-चढ़ाव का सामना करने के बाद खरीदारों ने बाजार में लिवाली का जोर बना दिया, जिसके कारण ये सूचकांक 440.11 अंक उछल कर 75,111.39 अंक तक पहुंच गया। कारोबार के आखिरी घंटे में बाजार में मुनाफावसूली शुरू हो गई। लगातार हो रही बिकवाली के कारण ये सूचकांक दिन के ऊपरी स्तर से 750 अंक से भी अधिक लुढ़क कर 324.88 अंक की कमजोरी के साथ 74,346.40 अंक तक पहुंच गया। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 188.50 अंक की गिरावट के साथ 74,482.78 अंक के स्तर पर बंद हुआ।

सेंसेक्स की तरह ही एनएसई के निफ्टी ने आज 36.25 अंक की बढ़त के साथ 22,679.65 अंक के स्तर से कारोबार की शुरूआत की। आज के कारोबार के दौरान ज्यादातर समय खरीदारों का जोर बना रहा, जिसके कारण ये सूचकांक 139.95 अंक की मजबूती के साथ 22,783.35 अंक तक पहुंच गया। दोपहर 2:30 बजे के बाद बाजार में बिकवाली का दबाव बन जाने की वजह से ये सूचकांक ऊपरी स्तर से 200 अंक से अधिक टूट कर 70 अंक की कमजोरी के साथ 22,568.40 अंक तक गिर गया। दिन भर हुई खरीद बिक्री के बाद निफ्टी ने 38.55 अंक की गिरावट के साथ 22,604.85 अंक के स्तर पर आज के कारोबार का अंत किया।

पूरे दिन के कारोबार के बाद स्टॉक मार्केट के दिग्गज शेयरों में से महिंद्रा एंड महिंद्रा 4.57 प्रतिशत, पावर ग्रिड कॉरपोरेशन 2.77 प्रतिशत, श्रीराम फाइनेंस 2.39 प्रतिशत, हीरो मोटोकॉर्प 1.91 प्रतिशत और इंडसइंड बैंक 1.91 प्रतिशत की मजबूती के साथ आज के टॉप 5 गेनर्स की सूची में शामिल हुए। दूसरी ओर, टेक महिंद्रा 1.93 प्रतिशत, बीपीसीएल 1.85 प्रतिशत, जेएसडब्ल्यू स्टील 1.51 प्रतिशत, एचसीएल टेक्नोलॉजी 1.50 प्रतिशत और डॉ रेड्डीज लेबोरेट्रीज 1.47 प्रतिशत की गिरावट के साथ आज के टॉप 5 लूजर्स की सूची में शामिल हुए।

इंडियन ऑयल का मुनाफा चौथी तिमाही में 52 फीसदी घटा

नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की तेल एवं गैस विपणन कंपनी इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड (आईओसी) ने वित्त वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही (जनवरी-मार्च) के नतीजे का ऐलान कर दिया है। 31 मार्च, 2024 को समाप्त चौथी तिमाही में आईओसी का मुनाफा 52 फीसदी घटकर 4,837.69 करोड़ रुपये रहा है। कंपनी के बोर्ड ने 7 रुपये प्रति शेयर अंतिम लाभांश देने की सिफारिश की है। आईओसी ने मंगलवार को शेयर बाजार को दी सूचना में बताया कि 31 मार्च, 2024 को समाप्त चौथी तिमाही में कंपनी का मुनाफा आधे से भी कम होकर (52 फीसदी) घटकर 4,837.69 करोड़ रुपये रह गया है। इससे पिछले वित्त वर्ष 2022-23 की समान तिमाही में आईओसी को 10,059 करोड़ रुपये का शुद्ध मुनाफा हुआ था। कंपनी के मुताबिक वित्त वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही में उसका राजस्व घटकर 2.21 लाख करोड़ रुपये रह गया है जबकि इससे पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में उसने 2.28 लाख करोड़ रुपये का राजस्व अर्जित किया था। इसी तरह कंपनी की परिचालन आय 3 फीसदी घटकर 2.19 लाख करोड़ रुपये रह गई, जो इससे पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में 2.26 लाख करोड़ रुपये थी।आईओसी ने बताया कि जनवरी-मार्च तिमाही में तेल कीमतों में कटौती और पेट्रोकेमिकल खंड में घाटा होने से उसके लाभ में कमी आई है। चौथी तिमाही के नतीजों के बाद बोर्ड ने 7 रुपये प्रति शेयर के अंतिम लाभांश की सिफारिश की है, जो 10 रुपये के अंकित मूल्य वाले इक्विटी शेयरों का 70 फीसदी है। कंपनी इसका 30 दिनों के अंदर भुगतान करेगी।

सोने की कीमत में गिरावट जारी, चांदी में कोई बदलाव नहीं

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू सराफा बाजार में आज लगातार दूसरे दिन गिरावट का रुख नजर आ रहा है। आज सोने की कीमत में 220 से 300 रुपये प्रति 10 ग्राम तक की कमजोरी दर्ज की गई है। इस गिरावट के कारण ज्यादातर सराफा बाजारों में 24 कैरेट सोना 72,590 रुपये से लेकर 72,740 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर के बीच कारोबार कर रहा है। सोने में गिरावट आने के बावजूद चांदी के भाव में आज कोई बदलाव नहीं हुआ है। इस वजह से आज दिल्ली सराफा बाजार में चांदी 83,900 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर ही कारोबार कर रहा है।

देश की राजधानी दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 72,740 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 66,690 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई। इसी तरह मुंबई में 24 कैरेट सोना 72,590 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 66,540 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। जबकि चेन्नई में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 73,520 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 67,390 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा अहमदाबाद में 24 कैरेट सोना आज 72,640 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 66,590 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। इसी तरह कोलकाता में 24 कैरेट सोना 72,590 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 66,540 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर पहुंचा हुआ है। लखनऊ के सराफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 72,740 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 66,690 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। वहीं इन तीनों राज्यों की राजधानियों बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर में 24 कैरेट सोना आज 72,590 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। वहीं इन तीनों शहरों के सराफा बाजारों में 22 कैरेट सोना 66,540 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

पेट्रोल-डीजल की कीमत स्थिर

एजेंसी

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत में गिरावट जारी है। ब्रेंट क्रूड का मूल्य 89 डॉलर और डब्ल्यूटीआई क्रूड 83 डॉलर प्रति बैरल के करीब है। सार्वजनिक क्षेत्र की तेल एवं गैस विपणन कंपनियों ने मंगलवार को पेट्रोल-डीजल के मूल्य में कोई बदलाव नहीं किया है। इंडियन ऑयल की वेबसाइट के मुताबिक, दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपये, डीजल 87.62 रुपये, मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपये, डीजल 92.15 रुपये, कोलकाता में पेट्रोल 103.94 रुपये, डीजल 90.76 रुपये, चेन्नई में पेट्रोल 100.75 रुपये और डीजल 92.34 रुपये प्रति लीटर की दर पर उपलब्ध है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में इस सप्ताह के दूसरे दिन शुरूआती कारोबार में ब्रेंड क्रूड 0.02 डॉलर यानी 0.02 फीसदी की गिरावट के साथ 88.38 डॉलर प्रति बैरल पर ट्रेंड कर रहा है। वहीं, वेस्ट टेक्सस इंटरमीडिएट (डब्ल्यूटीआई) क्रूड 0.07 डॉलर यानी 0.08 फीसदी लुढ़ककर 82.56 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा है।

अब ऑस्ट्रेलिया भी एमडीएच और एवरेस्ट मसालों की करेगा जांच

एजेंसी

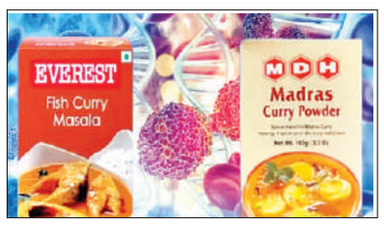

नई दिल्ली। दुनिया में स्वाद एवं सुगंध के लिए मशहूर भारतीय मसाले हानिकारक कीटनाशक पाए जाने के बाद विवादों में हैं। सिंगापुर और हांगकांग के बाद अब एमडीएच और एवरेस्ट मसालों की जांच की आंच अब ऑस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड तक पहुंच चुकी है। हालांकि, एमडीएच ने पिछले हफ्ते जारी स्पष्टीकरण में अपने उत्पादों में किसी हानिकारक कीटनाशक पाए जाने के आरोपों को नकारते हुए कहा कि इस तरह के आरोप लगाने का कोई ठोस आधार नहीं है। खाद्य मानक ऑस्ट्रेलिया न्यूजीलैंड (एफएसएएनजेड) ने मंगलवार को घोषणा की है कि वह भारतीय कंपनियों एमडीएच और एवरेस्ट की ओर से उत्पादित मसालों में गड़बड़ी के आरोपों की जांच कर रहा है। एक रिपोर्ट्स के अनुसार हांगकांग और सिंगापुर की तरह ही कार्रवाई के बाद ऑस्ट्रेलिया में इन उत्पादों को बाजार से वापस मंगाया जा सकता है। आस्ट्रेलिया में ग्राहकों को सलाह दी गई है कि वो जांच के बाद होने वाले संभावित रिकॉल के बारे में सचेत रहें और खरीदारी के दौरान खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करें।उधर, एमडीएच और एवरेस्ट के मसालों में टायफॉइड वाला बैक्टीरिया मिलने पर अमेरिका ने इनकी एंट्री पर रोक लगा दी है, जबकि एक तिहाई शिपमेंट खारिज कर दिए हैं। पड़ोसी देश मालदीव ने भी एमडीएच और एवरेस्ट के उत्पादों पर रोक लगा दी है। दरअसल, हांगकांग ने हाल ही में तीन एमडीएच मसालों और एवरेस्ट के फिश करी मसालों की बिक्री पर रोक लगा दी थी जबकि सिंगापुर ने एथिलीन ऑक्साइड के अत्यधिक स्तर का हवाला देते हुए बाजार से एवरेस्ट मसाले को मंगा लिया था।

ग्लोबल मार्केट से मजबूती के संकेत एशियाई बाजारों में भी तेजी का रुख

एजेंसी

नई दिल्ली । ग्लोबल मार्केट से आज मजबूती के संकेत मिल रहे हैं। अमेरिकी फेडरल रिजर्व की आज होने वाली बैठक के पहले अमेरिकी बाजार में जोश का माहौल बना रहा, जिसकी वजह से पिछले सत्र के दौरान वॉल स्ट्रीट के सूचकांक मजबूती के साथ बंद होने में सफल हुए। हालांकि डाउ जॉन्स फ्यूचर्स आज मामूली गिरावट के साथ कारोबार करता नजर आ रहा है। अमेरिकी बाजार के विपरीत यूरोपीय बाजार में पिछले सत्र के दौरान लगातार दबाव बना रहा। वहीं एशियाई बाजारों में आज बढ़त नजर आ रही है।

अमेरिकी फेडरल रिजर्व की आज बैठक होने वाली है। बाजार को उम्मीद है कि इस बैठक में ब्याज दरों में कटौती के मुद्दे पर अहम फैसला लिया जा सकता है। इसी उम्मीद की वजह से पिछले सत्र के दौरान वॉल स्ट्रीट के सूचकांकों में तेजी का माहौल बना रहा। डाउ जॉन्स 147.40 अंक यानी 0.39 प्रतिशत की मजबूती के साथ 38,387.06 अंक के स्तर पर बंद हुआ। इसी तरह एसएंडपी 500 इंडेक्स ने 0.32 प्रतिशत की तेजी के साथ 5,116.17 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया। इसके अलावा नैस्डेक 0.35 प्रतिशत उछल कर 15,983.08 अंक के स्तर पर बंद हुआ। हालांकि डाउ जॉन्स फ्यूचर्स फिलहाल 0.06 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 38,363.04 अंक के स्तर पर कारोबार करता नजर आ रहा है। अमेरिकी बाजार के विपरीत यूरोपीय बाजार पिछले सत्र में दबाव में कारोबार करने के बाद मिले-जुले परिणाम के साथ बंद हुए। एफटीएसई इंडेक्स 0.09 प्रतिशत की मजबूती के साथ 8,147.03 अंक के स्तर पर बंद हुआ। दूसरी ओर, सीएसी इंडेक्स ने 0.29 प्रतिशत टूट कर 8,065.15 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया। इसके अलावा डीएएक्स इंडेक्स 0.24 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 18,118.32 अंक के स्तर पर बंद हुआ। एशियाई बाजारों में आज मजबूती का माहौल बना हुआ नजर आ रहा है। एशिया के 9 बाजारों में से 8 के सूचकांक बढ़त के साथ हरे निशान में कारोबार कर रहे हैं, जबकि एक सूचकांक गिरावट के साथ लाल निशान में बना हुआ है। अभी तक के कारोबार के दौरान शंघाई कंपोजिट इंडेक्स 0.12 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 3,109.26 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है। दूसरी ओर, गिफ्ट निफ्टी 0.23 प्रतिशत की मजबूती के साथ 22,816.50 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह स्ट्रेट्स टाइम्स इंडेक्स 0.36 प्रतिशत की तेजी के साथ 3,293.81 अंक के स्तर पर पहुंचा हुआ है। निक्केई इंडेक्स ने आज बड़ी छलांग लगाई है। फिलहाल ये सूचकांक 469.08 अंक यानी 1.24 प्रतिशत उछल कर 38,403.84 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह जकार्ता कंपोजिट इंडेक्स 1.28 प्रतिशत की तेजी के साथ 7,247.10 अंक के स्तर पर पहुंचा हुआ है। इसके अलावा सेट कंपोजिट इंडेक्स 0.64 प्रतिशत मजबूत होकर 1,370.64 अंक के स्तर पर, कोस्पी इंडेक्स 0.73 प्रतिशत की बढ़त के साथ 2,707.18 अंक के स्तर पर, ताइवान वेटेड इंडेक्स 0.21 प्रतिशत की तेजी के साथ 20,538.41 अंक के स्तर पर और हैंग सेंग इंडेक्स 0.17 प्रतिशत की मजबूती के साथ 17,777.58 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहे हैं।

आरईसी का मुनाफा मार्च तिमाही में 33 फीसदी बढ़कर 4,079 करोड़ रुपये

- आरईसी लिमिटेड ने अब तक का सर्वाधिक वार्षिक शुद्ध लाभ दर्ज किया

नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी आरईसी लिमिटेड ने वित्त वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही (जनवरी-मार्च) के नतीजे का ऐलान कर दिया है। 31 मार्च, 2024 को समाप्त चौथी तिमाही में आरईसी का मुनाफा 33 फीसदी बढ़कर 4,079.09 करोड़ रुपये पर पहुंच गया।

विद्युत मंत्रालय के तहत आने वाली आरईसी ने मंगलवार को शेयर बाजार को दी सूचना में बताया कि 31 मार्च, 2024 को समाप्त जनवरी-मार्च तिमाही में आरईसी का एकीकृत शुद्ध लाभ 33 फीसदी बढ़कर 4,079.09 करोड़ रुपये रहा है।

इससे पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में कंपनी को 3,065.37 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हुआ था। मंत्रालय ने कहा कि मुख्य रूप से आय बढ़ने से कंपनी का लाभ बढ़ा है। मंत्रालय ने बताया कि वित्त वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही में कंपनी की कुल इनकम 12,706.66 करोड़ रुपये रही, जो इससे पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में 10,254.63 करोड़ रुपये रही थी। पूरे वित्त वर्ष 2023-24 में कंपनी का शुद्ध लाभ 14,145.46 करोड़ रुपये रहा, जो इससे पिछले वित्त वर्ष की चौथी तिमाही में 11,166.98 करोड़ रुपये था। इस दौरान कंपनी की आय बढ़कर 47,571.23 करोड़ रुपये हो गई, जो इससे पिछले वित्त वर्ष 2022-23 में 39,520.16 करोड़ रुपये रही थी।

आइसक्रीम की डिलीवरी नहीं देने पर स्विगी को लगा 5000 रुपये का जुर्माना

बेंगलुरू। फूड डिलीवरी करने वाली कंपनी स्विगी को तगड़ा झटका लगा है। कोर्ट ने एक ग्राहक को ऑर्डर उपलब्ध नहीं कराने के एक मामले में स्विगी को पांच हजार रुपये ग्राहक को जुर्माना देने का आदेश दिया है। पांच हजार में से तीन हजार रुपये जुर्माना और दो हजार रुपये कोर्ट केस की लागत के रूप में दिया गया है। जिस ग्राहक को जुर्माना दिया गया, उसने एप के माध्यम से एक आइसक्रीम की बुकिंग की थी, आइसक्रीम की डिलीवरी नहीं करने पर कंपनी के खिलाफ ग्राहक ने मुकदमा दायर किया था। बेंगलुरू के एक कंज्यूमर कोर्ट ने मामले की सुनवाई करते हुए स्विगी को आइसक्रीम की राशि, जो 187 रुपये थी, उसे भी उसे वापस करने का निर्देश दिया। ग्राहक की शिकायत के अनुसार डिलीवरी एजेंट ने आइसक्रीम की दुकान से ऑर्डर तो उठाया, लेकिन उसने उसकी डिलीवरी नहीं दी, जबकि एप पर आइसक्रीम की डिलीवरी कंफर्म दिखाई गई। जब ग्राहक ने इस संबंध में स्विगी से शिकायत की, तो उसने ना तो ऑर्डर का रिफंड दिया और ना ही ऑर्डर रिप्लेस किया। इसके बाद ग्राहक ने कंपनी के खिलाफ कोर्ट में शिकायत दर्ज की।

राष्ट्रीय सेवा योजना सुरू करलक सघन मतदाता जागरुकता अभियान

मतदान प्रतिसत बढ़ाएक सउब कर नैतिक जिम्मेदारी : डॉ बिनोद नारायण

सोनू सपवार, रांची

रांची विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई कर तत्वावधान में सघन मतदाता जागरुकता अभियान (फेज 2.0) कर सुभारंभ 30 अप्रैल, 2024 के मतदाता जागरुकता सपथ आउर एवं हस्ताछर अभियान से करल गेलक। इकर अध्यछता आरयू कर बिज्ञान संकाय कर डीन डॉ अरुण कुमार करलयं। ई अवसर में आरयू कर कुलसचिव डॉ बिनोद नारायण कहलयं कि देस में मतदान प्रतिसत बढ़ाएक सउबकर नैतिक जिम्मेदारी हेके। ऊ कहलयं कि गोटे देस में सउब संस्थामन मतदाता जागरुकता अभियान चलाए के सउब के मतदान ले प्रेरित करत हयं। एनएसएस कर स्वयंसेवकमन से अपील आहे कि ऊमन ई अभियान के आपन बहुमूल्य जोगदान देइ के बेसी से बेसी युवामन के मतदान ले जागरूक करेयं।

ई अवसर में आरयू कर पूर्व कुलसचिव डॉ अमर कुमार चौधरी कहलयं कि लोकतंत्र कर मजबूती ले मतदान प्रतिसत बढ़ाएक एकदम

लोकतंत्र कर मजबूती ले मतदान प्रतिसत बढ़ाएक जरूरी : डॉ अमर कुमार चौधरी

हेके। भारतीय संविधान में बरनित अधिकारमन कर प्रति जागरूक होए के हमिन के जरूर मतदान करेक चाही।आरयू कर कुलानुसासक डॉ मुकुंद चंद्र मेहता कहलयं कि युवा मतदान करेक ले आगे आऊ। लोकतांत्रिक बेवस्था कर मजबूती में आपन जोगदान देऊ।

ई अवसर में पीजी भौतिकी कर अध्यछ डॉ सुनील कुमार सिंह, एनएसएस कर कार्जक्रम समन्वयक डॉ ब्रजेश कुमार भी संबोधित करलयं। कार्जक्रम कर संचालन एनएसएस कर टीम लीडर रवि कुमार वर्मा आउर धन्यवाद दिवाकर आनंद करलयं।आइज कर मतदाता हस्ताछर अभियान कर सुभारंभ आरयू कर कुलसचिव डॉ बिनोद नारायण, पूर्व कुलसचिव डॉ अमर कुमार चौधरी, कुलानुशासक डॉ मुकुंद चंद्र मेहता, साइंस डीन डॉ अरुण कुमार, एचओडी डॉ सुनील कुमार सिंह एवं एनएसएस कर कार्जक्रम समन्वयक डॉ ब्रजेश कुमार संयुक्त रूप से हस्ताछर कइर के करलयं।

हस्ताछर अभियान सउब बिश्वबिद्यालय बिभागमन कर छात्र छात्रामन कर बीच आयोजित करल गेलक। ई अभियान में लगभग 1250 से बेसी युवामन हस्ताछर करलयं। कार्जक्रम के सफल बनाएक में एनएसएस कर टीम लीडर्स अंकित, रिकेश, ऋषि, कनिष्क, सुरभि, निवेदिता, पीयूष, रोहित, संकल्प, आकांक्षा आदि कर जोगदान रहे।

एसबीयू आउर विजियू में एमओयू, होवी सैछनिक आदान प्रदान आउर सोध परामर्स

रांची। सरला बिरला विश्वविद्यालय (रांची) आउर विवेकानंद ग्लोबल यूनिवर्सिटी (जयपुर) कर बीच जयपुर में एक गो समझौता गेयापन (एमओयू) होलक। इकर में एसबीयू कर कुलपति प्रो. गोपाल पाठक आउर विजियू कर कुलसचिव डॉ. प्रवीण चौधरी हस्ताछर करलयं। एमओयू में दुईयों बिश्वबिद्यालय कर बीच सोध, परामर्स आउर सैछनिक आदान-प्रदान कर बिंदु सम्मिलित हेके।

ईअवसर में विजियू में एक गो कार्जक्रम कर आयोजन करल गेलक। इकर में विजियू कर दन से संस्था कर डीन आउर बिभिन्न बिभागाध्यछ सामिल होलयं। एसबीयू कर दन से डीन डॉ नीलिमा पाठक ई अवसर में सम्मिलित होलयं।

ई एमओयू से दुईयों विवि कर छात्रमन के बृहत् सैछनिक परिवेस में पढ़ेक कर अवसर मिले पारी। संगे, दुईयों विवि कर बिभिन्न बिसेग्यमन के सान्निध्य में छात्रमन के नवीनतम आउर सोधपरक जानकारी भी उपलब्ध होवे पारी।

विवि कर प्रतिकुलाधिपति बिजय कुमार दलान आउर डॉ. प्रदीप वर्मा दुईयों विवि कर बीच होवल ई एमओयू ले आपन सुभकामना प्रेसित करलयं।

अदमीमन के साइबर अपराध से बचेक कर पुलिस देलएं टिप्स

बोकारो। तकनीक कर बिकास कर संगे साइबर अपराध कर घटना बढ़ते जात हे। साइबर ठग हर दिन नवा-नवा आइडिया कर संगे बाजार में आवत हय। उनकर झांसा में फंसेक से आपने कर जिनगी भईर कर कमाई लुटाय सकेला। इके लेई के पुलिस साइबर अपराध से अदमीमन के बचेक कर कई टिप्स देलयं। इकर पालन करेक से आपनेमन लुटेक से बईच सकीला।

पुलिस कहलयं कि केउ अज्ञात मोबाइल नंबर से कॉल आवेक से आपन कोनों निजी जानकारी साझा नी करब। इंटरनेट सर्च इंजन गूगल एवं अन्य सोसल मीडिया प्लेटफार्म में देवल गेल कस्टमर केयर ईया हेल्प लाइन नंबर में भरोसा नी करू। कस्टमर केयर नंबर ले हमेसा ऑफिसियल वेबसाइट में हे संपर्क करू। केउ भी अज्ञात बेक्ति द्वारा भेजल गेल लिंक इया यूआरएल में क्लिक नी करू। अइसन लिंक इया यूआरएल के केउ आउर केउ अन्य नंबर में फॉरवर्ड नी करब। ई याइद राखू कि बैंक कर यूपीआई एप्लीकेसन से संबंधित रजिस्ट्रेसन ले बैंक कर ऑफिसियल नंबर से हे मेसेज भेजल जायेला। अनजान नंबर से लिंक आवेक से ना ही क्लिक करब आउर ना अनजान एप डाउनलोड करब। साइबर अपराध का शिकार होवेक से हेल्प लाइन नंबर 1930 ईया www.cybercrime.gov.in में रिपोर्ट करू।

सेल सुरछा संगठन सुरछा आउर स्वास्थ्य ले बिश्व इस्पात दिवस मनालक

रांची। सेल सुरछा संगठन (एसएसओ, रांची) 29 अप्रैल, 2024 के 'सुरछा आउर स्वास्थ्य ले बिश्व इस्पात दिवस' मनाल गेलक। वर्ल्ड स्टील एसोसिएसन कर तत्वावधान में हर बछर 28 अप्रैल के बिश्व अस्तर में ई दिवस मनाल जायेला।

ई अवसर में सेल कर संयंत्र आउर इकाइमन कर कर्मचारीमन ले एक गो खतरा बिसलेसन प्रतिजोगिता कर आयोजन करल गेलक। इकर में कर्मचारीमन यों कार्जस्थल में खतरामन के कम करेक उपरे ने केस अध्ययन आमंत्रित करल जाए रहे। दुई श्रेनी में प्राप्त 60 गो प्रविष्टि में से कर्मचारीमन कर टीम से 27 गो प्रविष्टि के शॉर्टलिस्ट करल गेलक। ऊ एमटीआई, रांची, सेल में निर्नायक मंडल कर एक गो पैनल कर समछ बिस्तृत प्रस्तुति देलयं।

सार्टलिस्ट कर गेल टीम में से इस्को स्टील प्लांट से शैलेश कुमार आउर मनीष कुमार कर टीम श्रेणी-1 (अधिकारी) में समग्र बिजेता के रूप में उभरलयं। दीपक कुमार मोहंती, प्रसांत कुमार नाइक एवं अमूल्य कुमार बिसोई श्रेणी-2 (कामगार) में बिजेता रहयं।

पुरस्कार समारोह में आशीष चक्रबर्ती, ईडी (एसएसओ), शशि वशिष्ठ, सीजीएम (सुरक्षा), एसएसओ, तथागत घोष, सीजीएम (सीईटी), पार्थ बैनर्जी, सीजीएम (आरडीसीआईएस) उपस्थित रहयं। ई कार्जक्रम कर निर्नायक इंद्रनील बनर्जी, महाप्रबंधक (डिजिटलीकरण), एसडीटीडी; टीएन पांडे, महाप्रबंधक (आरडीसीआई एस), संजय अग्रवाल, महाप्रबंधक (सुरक्षा), एसएसओ आउर राजीव वर्मा, महाप्रबंधक (सुरक्षा), एसएसओ रहयं। कार्जक्रम कर समन्वय अभिषेक कुमार, एजीएम (सुरछा), एसएसओ आउर सोनल सिन्हा, प्रबंधक (सुरक्षा), एसएसओ द्वारा करल गेलक।

नागपुरी - लघु लेख

मछरी झोर

रामदेव बड़ाईक

काकी.. ए काकी.., कहां हुने जात्हा पानी आय - आयके गोटा अंगना जुन कादो होई जा हे आउर पीछर हों होई गेलक हे, बुढ़ी अदमी गिर - गुराय जाबा ! के रे.. के हेका.. का कहाला नी सुनोना बाबू... आउर नी देखोंना रे.. काकी कहलंय..!!

मोय काकी के गोड़ छूई के परनाम करलों.., काकी 'जय' रह बेटा कइह के आसीरबाद देलंय ।

काकी कहथंय - के रे फलना.. ? तले मोर से पुछथंय -

बाबू कर मांय /आयो (संझली) घरे हंय की निहीं रे.. ?

ऊ तो काकी बेसे चिन्हला नी देखोंना आउर नी सुनोना जे कहाला !

मोय काकी के कहलों आउर बइसेक ले उनके मचिया देलों.. ।

बइसा काकी.. बाबू कर मांय हर आवत्हे ओ देखा मछरी बेचवा आहे.., सेकर ज ऊ मछरी किने जा हे..,

बइसा काकी.. बइसा संझली तुरते आवी..

काकी ओहारी तरे कर पिंड़ा में बइसलंय। कटिक पाछे बाबू कर मांय हर आलक तले मोके कहत हे देऊ, देऊ तो पइसा..

मोय कहलों का पइसा.. का पइसा.. ?

मछरी - खखरा खायेक सवक के तोंय रहेक दे तो.. मोर ज नखे..पइसा.. !

ओह ! रे.. , से बुझाएल मछरी मोय एकलाय खायेक ले किन हों आउर एकले खामूं होइ ?

राउरे हें कहू तो..

तले संझली मोके कहत हे...

कने भूंजाइ कने नईं तले कहबंय मोर ले दू-चाइर गो भूंजले के निकसाय देबे..!

मोय सच कहोंना मोर ले आखरी में 'मछरी झोर' भइर बांची ..!!

मुदा ई मछरी ले दू गो बात एखन मोहें सुनत हों.. !!

तोर ज ताकइत आहे तो तोंय "गरू किन आउर नी तो किन छगरी" मोय मना नी करथों.. बुझले नी.. ,

मोय बाबू कर मांय हर के कहलों ..

तो बाबू कर मांय हर काकी दने नजइर कइर के कहथे...

सवक ले बड़का ई दुनियां में आउर का चीज हय..

रउरे कहू तो मांय.. ?

तले मोके कहथे... आपने हों कहू तो भला !

कहाउत में हों जुन कहल गेलक हय..

"रीन तो रीन मछरी किन" बुझली नी... !!

बस एतने कन बात लेइके तो घर में "महाभारत"!

बुढ़िया काकी हामरे दुइयो झन कर झागरा के ओनाय के हन सुनलंय - सुनलंय...

तले बाबू कर मांय हर के कहथंय ...

ए 'गो' (पुतउ) संझली चुपे - मटे रहा नी..गो.. बात करले (कहलेहें) बात बढ़ेला सेके नी जानाला का..?

तले काकी मोकहों कहथंय - ए बेटा, तोहों चुपे-मटे रह बाबू.. तोहों कम नख्हीस रे.. ,

तोके पइसा नी मांगबंय तो आउर के- के मांगबंय होइ, तोहों अइत जे बोलिसल.. :!!

ए काकी.. तोहें बेस कहत्हा मुदा सउब दिन आउर सउब पहर अदमी कर हाथ में पइसा - कौड़ी नी जुन रहेला सेके तो संझली बुझबे नी करेला..!

मोय तो ऊधरा - पंइचा कइर के हों ईकर 'सवक' के पुरावंना जुन!!

आइज मोय, मोर ज कचिया नखे कइह देलों तो संझली के हों तो बुझेक चाही.. !

दगे तो काकी आब तोहें कहा..

भला! संझली जे एकबारगी छउवा जइसन जिध करेला..

तोहें समझौता करा काकी... मोय आब चुप रहथों...

काकी कहथंय - हं बेटा.., तोहें चुप रह रे..

"चुपे रहंयना से सुखे रहंयना " ।

मोय कहलों... हं काकी.. तोहें सुपट कहला..।

हं बेटा.. , रह मोय संझली के समझात्हों.., तले काकी संझली के समुझाइक लागलंय -

कहथंय - ए गो संझली, सुनत हा..

कहंयना सेके सुइन हा कि नी सुइन हा.. ?

"हांसल मुंहीं धराय जाएंन, धुंधर मुंहीं सरबस खाएंन" !

"लाजे बोहरिया बोलंय नईं, भंइसुर डहर छोड़ंय नईं" !!

मुद्रक व प्रकाशक **नीलम सिंह** द्वारा झारखंड वनिता उद्योग एसएचजी के लिए श्याम नगर, गांधी नगर सीसीएल कॉलोनी डीएवी गांधी नगर स्कूल के पीछे, थाना-गोंदा, जिला-रांची, राज्य झारखंड-834008 से प्रकाशित एवं शिवा साईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड रातू, काठीटांड़ टेंडर बगीचा के नजदीक, एचपी पेट्रोल पंप, पोस्ट व थाना रातू, रांची, झारखंड-835222 में स्थित प्रिंटिंग प्रेस में मुद्रित। आरएनआई पंजीयन संख्या. **JHABIL/2023/86791**, **संपादक** : नीलम सिंह, **प्रबंध संपादक :** कृशन गोपालका, **सलाहकार संपादक :** रतन लाल अग्रवाल। फोन नंबरः 8210640230, 9934166306, **ईमेल आइडी**ः jharkhandwanitaudyog@gmail.com